महाशिव रात्रि विशेषांक
फरवरी ९५
मूल्य-१८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
क्या मध्यावधि चुनाव निकट में है?

तांत्रोक्त

काशी विश्वनाथ प्रत्यक्ष साधना शिविर

(पाशुपतास्त्रेय प्रयोग युक्त)

3-4-5-6 फरवरी 1995

पूज्यपाद गुरुदेव **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली** के आशीर्वाद तले
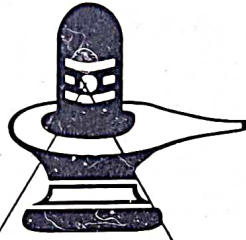
शिविर शुल्क : 660/-

साधनाएं

जो अपेक्षित हैं

शिव साधना

उर्वशी साधना

सरस्वती साधना

कोई एक महाविद्या साधना

सर्व मानव लोकहितार्थ साधना

बटुक भैरव, काल भैरव साधना

बहुत कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है. . . चाहे वह बुद्धत्व हो, चाहे शिवत्व हो. . .और तुम मेरे शिष्य हो, मैं तुम्हें आवाज दूं तो तुम्हें आना ही होगा, चाहे वह रामेश्वरम् हो, चाहे काशी . . . तुम्हें हर दृष्टि कोण से पूर्ण करना मेरा धर्म है, और उसे मैं पूरा करने के लिए तुम्हें फिर आवाज दे रहा हूं . . . और तुम्हें आना ही है. . .

– तुम्हारा गुरुदेव

– शिविर स्थल –

पण्डित कमलाकर चौबे, आदर्श सेवा इन्टर विद्यालय, ईश्वर गंगी, वाराणसी, उ. प्र.

: सम्पर्क :

१. श्री राजेन्द्र गोयनका, अध्यक्ष, काशी व्यापार मण्डल, वारणसी, फोन : ५२७०२, ३६१८२३
२. श्री उमाशंकर अग्रवाल, रविन्द्र पुरी, वाराणसी
३. श्री दीपक कंपोज, वाराणसी, फोन : ३५४७१०, ३५३२८६
४. श्री संजय जायसवाल, होटल करुणा, वाराणसी
५. डॉ० आनन्द मूर्ति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
६. श्री सुशील चन्द्र श्रीवास्तव, टैगोर टाउन, वाराणसी, फोन : ४३१७२
७. श्री वेद प्रकाश, सब्जी मण्डी, पहड़िया, वाराणसी, फोन: ३८५७५६
८. श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, खजुरी, वाराणसी, फोन : ४३१३१
९. दीनानाथ यादव, दानियालपुर, अशोक नगर, वाराणसी, फोन : ३८६०४४
१०. श्री रमाकान्त जैसवाल, प्रधान, काशी खाद्य व्यापार मण्डल, वाराणसी, फोन : ३३५४४५
११. श्यामराज रामनारायण यादव, औसन गंज, वाराणसी

अजयकुमार उत्तम 'निखिल'

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

जनवरी 95 के अन्तिम कवर पृष्ठ पर प्रकाशित दीक्षायें 4-8 फरवरी 95 को ही होंगी जो कि इस बार अत्यधिक विशेष रूप से सम्पन्न कराने की व्यवस्था हो रही है।

कुछ विशेष कारणों से बनारस में 3-4-5-6 फरवरी 95 को होने वाला शिविर स्थगित किया जा रहा है।

प्रार्थना

देवो गुणत्रयातीतश्चतुर्व्यूहो महेश्वरः,
सकलः सकलाधारशक्तेरुत्पत्तिकारणम् ।
सोऽयमात्मा त्रयस्यास्य प्रकृतेः पुरुषस्य च,
लीलाकृतजगत्सृष्टिरीश्वरत्वे व्यवस्थितः ।।

चतुर्व्यूह के रूप में प्रकट देवाधिदेव महेश्वर तीनों गुणों से अतीत हैं, वे सब की आधार रूपा शक्ति की भी उत्पत्ति के कारण हैं। वे ही प्रकृति और पुरुष दोनों की आत्मा हैं। लीला से खेल ही खेल में वे अनन्त ब्रह्माण्डों की रचना कर देते हैं, जगन्नियन्ता ईश्वर रूप में वे ही स्थित हैं।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम, या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु- संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विवेचनात्मक

सद्गुरुदेव

ज्योतिष

शिव पर्व

विशेष
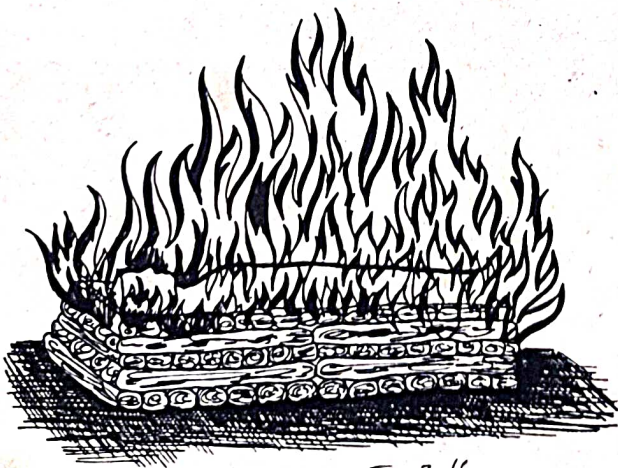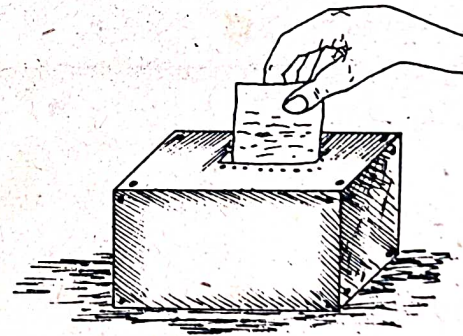
कथ्य
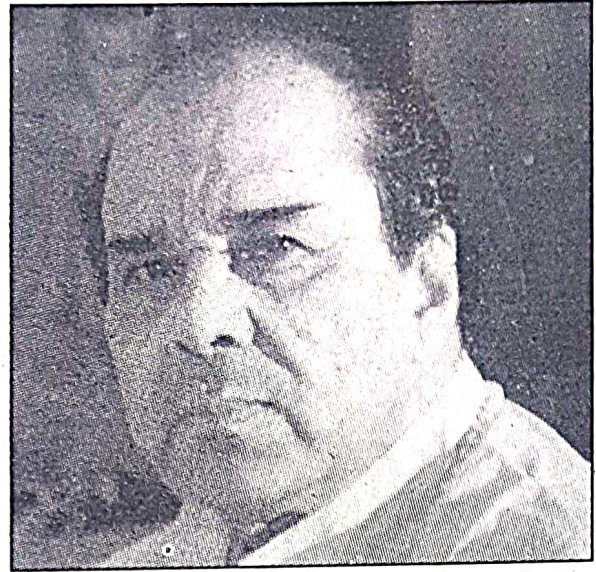
सूचना : फरवरी माह में ४ से ८ तारीख के बीच होने वाली दीक्षाएं अब ८ से ११ फरवरी को सम्पन्न होगी।

पाठकों के पत्र

● पूज्य गुरु जी, वह कौन सी दीक्षा है, जो हर साधना से पहले प्राप्त करना आवश्यक है, उसका नाम बतायें? क्या वह गुप्त रहस्य फोटो के माध्यम से भी प्राप्त हो सकता है?

लक्ष्मण प्रसाद शर्मा,
मिन्हाज नगर, पटना

— आप जो साधना करना चाहते हैं उसी साधना से सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त कर साधना सम्पन्न करें, शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। यह दीक्षा आप फोटो द्वारा भी प्राप्त कर सकते है।

- उपसम्पादक

● परमपूज्य गुरुदेव जी,

चरणस्पर्श,

मैं आपके द्वारा रचित पुस्तक १९८४ से पढ़ रहा हूं, आपकी दया से १९९४ फरवरी से पत्रिका की सदस्यता भी ग्रहण की है। यहां बिहार खास कर गिरिडीह में धर्म का इस तरह पतन हुआ और पाखंड फैला, कि लोग साधना पूजा तथा मां के पुजारियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन आपके ज्ञान रूपी प्रकाश में पुनः प्रकाशवान होने की ओर अग्रसर हैं, जैसा कि पत्रिका में बताते रहते हैं। अगर मैं आपके कुछ काम आ सकूं, तो अपने-आप को धन्य समझूंगा।

शिवशंकर कुमार,
बिहार

— आप अपने क्षेत्र में पत्रिका के प्रसार हेतु दीवारों पर विज्ञापन लिखाएं तथा अपने स्वजनों को बुलाकर प्रत्येक माह में किसी एक गुरुवार को सामूहिक गुरु पूजन का कार्यक्रम रखें। आप की इच्छा पूर्ण होगी।

— उपसम्पादक

● बहुत ही सुन्दर ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक, हिन्दी शैली की अनुपम भेंट है— **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** मासिक पत्रिका, मैं सदैव इसका ऋणी हूं। नव० ९४ के अंक में पृष्ठ ६१ पर **''उर्वशी दीक्षा''** पढ़कर प्रसन्नता हुई, किन्तु **''अप्सरा मंत्र''** न पाकर दुःख हुआ। कृपया मंत्र अवश्य दिया करें।

पं० अर्जुनदत्त शर्मा,
उ० प्र०

— प्रत्येक साधना का मंत्र उसके साथ अवश्य प्रकाशित होता है किन्तु इस लेख के अन्तर्गत मंत्र प्रकाशित न होने का कारण है कि यह मंत्र अत्यधिक गोपनीय है और गुरु मुख से ही प्राप्त होता है।

— उपसम्पादक

● मैंने आपकी पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** के बारे में जाना। जीवन में आगे बढ़ने के लिए अंधेरे में प्रकाश की आवश्यकता होती है, इसलिए मैं आपका सहयोग चाहता हूं।

संजू कुमार,
मुंगेर

● आपकी पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** के जनवरी ९५ के अंक में सभी लेख मैंने बार - बार पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। इस अंक के लिए आपका धन्यवाद।

धर्मेन्द्र, पटेल नगर,
हिसार

● ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' का सन् १९९४ के सभी अंक आकर्षक मुख पृष्ठ के साथ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह काफी सुन्दर एवं उपयोगी पत्रिका है। मंत्र, तंत्र के बारे में उलटी- सीधी जानकारी अन्य पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलती है, लेकिन सही जानकारी कहीं नहीं होती। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका निकाल कर, और सही जानकारी देकर आप पाठकों पर जो उपकार कर रहे हैं, उसके लिए आप सब प्रशंसा के पात्र हैं।

दिनेश चन्द्र प्रसाद,
अलीपुर, कलकत्ता

● महोदय, आपका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका पढ़ा, इसका प्रत्येक अंक दुर्लभ है— जो कि सदियों तक हमारी धरोहर बना रहेगा। एक माह ज्योतिष पर भी पत्रिका अवश्य प्रकाशित करें।

नवीन जैन,
बिनोली

मूल्य वृद्धि

इस माह से पत्रिका के मूल्य में वृद्धि की जा रही है, क्योंकि कागज मुद्रण तथा अन्य पत्रिका से सम्बन्धित वस्तुओं के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण ही हमें यह कदम उठाना पड़ा। मूल्य वृद्धि को देखकर हमारे सामने दो ही विकल्प थे, या तो पत्रिका के पृष्ठों की संख्या कम कर दी जाए या फिर पत्रिका के मूल्य में वृद्धि कर दी जाए। इस सम्बन्ध में हमारे विज्ञ पाठकों ने यह सुझाव दिया कि पत्रिका के पृष्ठों की संख्या कम करने के स्थान पर इसके मूल्य में वृद्धि कर दी जाए। उनकी इस बात को ध्यान में रखकर ही हमने पत्रिका के पृष्ठों को कम नहीं किया।

वर्ष १५ अंक २ फरवरी ९५

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९, फेक्स : ०२९१ - ३२०१०

सम्पादकीय
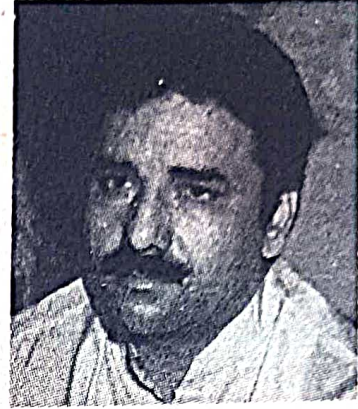
असित हिमवतान्पूर्ण देवं महेशं,
पूर्ण सायुज्य गौर्यानाणपति ध्येय दिव्यं।

भगवान शिव आदि गुरु महेश्वर, जगत के उत्पत्ति कर्त्ता, जगत के पालन कर्त्ता तथा जगत के संहार कर्त्ता भगवान शंकर के चरणारविन्दों में महाशिवरात्रि के इस पुनीत पर्व पर आइये हम सभी मिल कर इस **''महा शिवरात्रि विशेषांक''** को अर्पित करते हैं।

. . . और शिव-शक्ति सायुज्य से यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे मन के, तन के, हृदय के, पूर्व जन्मकृत, इह जन्मकृत समस्त विकारों का संहार कर समस्त साधनाओं में सफलता प्रदान करें, जिससे आप इस सम्पूर्ण विश्व को सद्मार्ग पर गतिशील करने के लिए दृढ़ चित्त बन सकें।

आप के इस संकल्प की पूर्ति के लिए ही इस विशेषांक में निहित है— **''शिवरात्रि''**, **''नवरात्रि''** और सभी शिष्यों का अतिपावन पर्व **''गुरु जन्मोत्सव २१ अप्रैल''** पर की जाने वाली साधनाओं की पूर्ण प्रामाणिक व स्पष्ट क्रिया पद्धति। इसके साथ ही **'लक्ष्मी साधना'** व **'चन्द्र ग्रहंण'** के अवसर पर तुरन्त सफलतादायक कई लघु साधनाएं।

आप-अपने जीवन के समस्त भौतिक व आध्यात्मिक, सम्पन्नता व श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकें। इसी आशीर्वाद के साथ —

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

सहज मिले अविनाशी
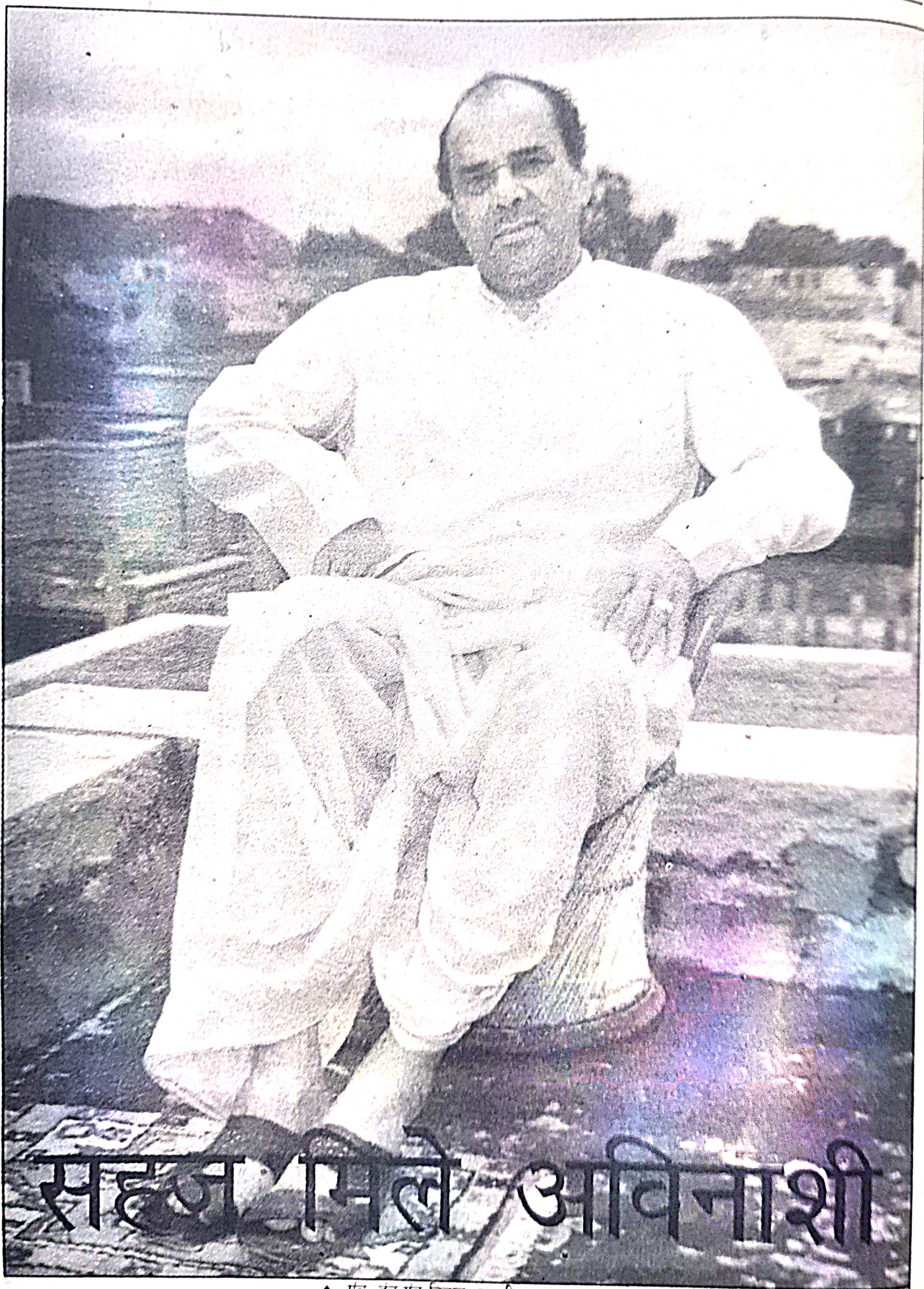
आज मनुष्य एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धा में इस कदर अन्धाधुन्ध भाग रहा है, कि उसको यह भी पता नहीं, कि उसकी मंजिल किस ओर है। वह भाग-दौड़ में थोड़ा बहुत धन एकत्र कर, भौतिकता का आनन्द प्राप्त कर सकता है, जिह्वा का स्वाद प्राप्त कर सकता है, मगर यह उसका जीवन नहीं, वास्तविकता से काफी दूर, जो उसे चाहिए वह है, मगर मनुष्य का उस तरफ ध्यान जाता ही नहीं या यों कहें, कि वह उस परम सत्य का ध्यान करने की फुरसत ही नहीं पाता।

हम सभी मानते हैं और विश्वास भी करते हैं, कि कहीं न कहीं ऐसी शक्ति है, जो इस संसार का संचालन करती है। हम यह मान कर चलते हैं, कि भगवान है, और जब पाप बढ़ जाता है या जब इस धरती पर कोई विपदा आती है, तो स्वयं भगवान ही किसी न किसी रूप में अवतरित होते हैं, और पुनः धर्म की स्थापना कर इस मृत्यु लोक से चले जाते हैं।

जब तक वह दिव्य शक्ति साधारण मानवों के बीच विद्यमान रहती है, उसकी पहिचान कर पाना अत्यन्त कठिन होता है। उसे पहिचानने की क्षमता सामान्य मनुष्य की आंखों में नहीं होती, यदि कोई उसे देखना चाहे, पहिचानना चाहे तो उसे सर्वप्रथम अपनी आंखों से भौतिकता का, स्वार्थ का पर्दा हटाना होगा, और यह पर्दा इतनी आसानी से हटने वाला भी नहीं है, यह तो कई-कई जन्मों से पड़ा हुआ है।

हमारे समाज में यदि बोलबाला है, तो केवल झूठ का, छल का, पाखण्ड और धोखे का, और यह जाल इतना फैल गया है, कि अगर हम इसमें से निकलना भी चाहें, तो निकल नहीं पाते, क्योंकि मानव अकेला तो कुछ कर ही नहीं सकता, उसको इस जाल में ही छटपटा कर दम तोड़ना है, और अपने इस जीवन का अन्त कर देना है, जो कि बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है।

मानव जीवन को तो देवता भी पाने के लिए लालायित रहते हैं, और प्रकृति की रचना का आनन्द भोगना चाहते हैं, फिर मनुष्य ही इस जीवन को बरबाद क्यों करता है? यह मात्र उसका ही दोष नहीं है, क्योंकि जब एक आत्मा इस पृथ्वी पर जन्म लेती है, तब वह एक कोरे कागज की तरह होती है, अगर इसके पीछे कुछ होता है, तो उसके द्वारा किए गए पूर्वजन्म के कर्म, पाप-पुण्य होते हैं, जो कि उसे इसी जन्म में चुकाने होते हैं।

इस दुर्लभ देह को पाकर मानव इस संसार में, लोभ-लालच में उलझकर अपना सारा जीवन व्यतीत कर देता है। कभी सोचा नहीं, कि इस दुर्लभ जीवन को यों ही गंवाने से फायदा क्या है? हम धरती पर व्यर्थ ही नहीं आए हैं। हमें अपने सोये हुए व्यक्तित्व को जगाना है, और उस अन्धकार को दूर भगाना है, जो हमारे चारों तरफ फैला हुआ है, उन पाप-दोषों से मुक्ति लेनी है, जो हमारा कई जन्मों से पीछा नहीं छोड़ रहा है।

आखिर कैसे पीछा छुड़ा सकते हैं इस अंधकार से? कैसे पीछा छुड़ा सकते हैं इस मायावी जाल से? कैसे मुक्ति पा सकते हैं इन पाप-दोषों से? आखिर कोई तो ऐसा होगा जो हमें इन सबसे मुक्ति दिला सके? आखिर कोई तो हमें इन अंधेरों से उजाले की ओर ले जा सके?

वह कौन है, जिसमें इतनी प्रबल शक्ति है, जो हमें इन पाशों से मुक्त कर इस जीवन को सद्गति प्रदान करेगा? हमारी आंखें, जो भौतिकता की चकाचौंध में उलझ कर रह गई हैं, उसे नहीं देख पातीं। मिला नहीं पातीं, उस महान संचालक से, जो पूरे ब्रह्माण्ड का संचालन करता है, आखिर वह है कौन. . .?

इसका जवाब एक ही है, हमें उस शक्ति की शरण में जाना होगा, जो हमारी इन समस्याओं का समाधान कर सके, और वह शक्ति इस संसार में केवल गुरु ही है।

जो ''गुरु'' शब्द का गूढ़ार्थ समझते हैं, उनके शरीर में गुरु शब्द को सुनते ही एक बिजली की सी लहर दौड़ने लग जाती है, अजीब तरह की शक्ति का संचार मन में होने लगता है। गुरु ही हमें इस अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जा सकता है, अपने ज्ञान से, अपने तप से, अपनी परा-शक्ति के बल से, यही गुरु की परिभाषा है।

गुरु के बिना इस देह की, इस जीवन की मुक्ति सम्भव ही नहीं है। यह देह, जो सांसारिकता में लिप्त है, गुरु ही इसे सत्यता का बोध करा सकता है। जब शिष्य अपने-आप में 'गुरु तत्व' को समाहित कर लेता है, तब गुरु रूपी नाव ही उसे इस संसार रूपी भव से पार करती है। गुरु में

❀

समस्त सिद्धियों का आगार और समस्त दिव्य शक्तियों का तेजस्वी पुञ्ज हमारे मध्य एक साधारण मानव की तरह ही मानव स्वरूप धारण कर रहते हैं। उन्हें पहिचानने की क्षमता चर्मचक्षुओं में नहीं होती, यदि उन्हें देखने, पहिचानने की लालसा है तो अपनी आंख पर से स्वार्थ का, लाभ का पर्दा हटाना पड़ेगा . . .

❀

डॉ० राजेन्द्र सिंह ढल,

ही वह प्रबल शक्ति है, जो दर्शन करा सकती है उस महान संचालक के, जो पूरे ब्रह्माण्ड का संचालन करता है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि इस गुरु तत्व की पहिचान कैसे हो? क्या इसे प्रत्येक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है? "गुरु" शब्द का आज समाज में बहुत दुरुपयोग हो रहा है, गुरु नाम का चोला पहिन कर इसकी छवि को ही धूमिल कर दिया गया है।

बुद्ध, ईसा, कृष्ण, राम को तो मैंने देखा नहीं है, मगर जो भी दिव्य शक्ति इस संसार में आई, वह अपना कार्य कर चली गई, उनको हम या हमारे पूर्वज पहिचान ही नहीं पाए। कृष्ण कभी युद्ध में, तो कभी प्रेम के क्षेत्र में, तो कभी शिष्य के रूप में, तो कभी जगद्गुरु के रूप में नए-नए आयाम स्थापित करते रहे, और एक नवीन चेतना प्रदान की। उसी प्रकार ईसा मसीह ने इस संसार के दुःखों और तनावों को कम करने के प्रयास में अपना जीवन बलिदान कर दिया, मगर इन शक्तियों ने अपना भेद नहीं खोला।

उनकी अपनी कोई मर्यादा अथवा कारण हो सकता है, लेकिन मानव की कोई मर्यादा अथवा कारण नहीं होता, वह तो मात्र स्वार्थ वश ही उस दिव्यता को समझने का प्रयास नहीं करता।

आज भी एक ऐसा ही विराट व्यक्तित्व इस युग में, वर्तमान पीढ़ी के मध्य है, लेकिन हम उन्हें एक सामान्य मानव समझ कर ही उनसे अपेक्षा कर रहे हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं ही अपने-आप को धोती और कुर्ते से ढंक लिया है, सादगी ही जिनका जीवन है, हर ऐश-ओ-आराम से दूर, जिनकी देवता भी वन्दना करते नहीं थकते, ऋषि-मुनि उनको पाने के लिए सारा जीवन जंगलों, गुफाओं में व्यतीत कर देते हैं, उस शक्ति का मात्र दर्शन पाने के लिए।

हमें उस विराट शक्ति के दर्शन बिना जंगलों में गए, बिना शरीर को तपाये सहज में ही उपलब्ध हैं, **इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि, जो हमें सहज में प्राप्त होता है, प्रायः उसकी कीमत नहीं आंकी जाती।** जो विराट व्यक्तित्व हमें सद्गुरु के रूप में सहज ही प्राप्त हो गया है, वह **"श्री नारायण"** देवताओं को भी जल्दी से नहीं मिलते, वे ही "श्री नारायण" अपने-आप को माया के आवरण में लपेट कर "लीला विहारिणी मां प्रकृति" के साथ आनन्दमग्न हो रहे हैं।

जो स्वयं ही ऋद्धि-सिद्धि के मालिक हैं, प्रत्येक जीव जिनसे उत्पन्न होता है और जिनमें विलीन भी होता है, वे ही श्री नारायण कभी साधना में रहते हैं, तो कभी शिष्यों के बीच अपनी लीला का आनन्द लेते हैं। भक्तों की विह्वल पुकार पर श्री नारायण स्वयं ही इस भूलोक पर "सद्गुरु" रूप धारण कर अवतरित हुए हैं, और ऐसा हर एक कल्प के बाद होता है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं।

गीता में स्पष्ट कहा है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

अर्थात् जब-जब धर्म की हानि होती है, पृथ्वी पर पाप, अत्याचार बढ़ते हैं, तब-तब धर्म की स्थापना करने के लिए उस **"परम सत्ता"** को पृथ्वी पर

साधना में सिद्धि प्राप्त करना कोई दुष्कर कार्य नहीं है, यदि आप को गुरु कृपा प्राप्त हो।
गुरु तो इस पृथ्वी पर प्रत्यक्ष देव हैं, उनकी कृपा दृष्टि प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार के साधना या जप-तप की आवश्यकता नहीं है . . . आवश्यकता है तो मात्र सेवाभाव, समर्पण और विश्वास की।

आना ही पड़ता है. . . और वर्तमान में पुनः उसी क्षण की पुनरावृत्ति हुई है। आज पुनः सोलह कलाओं से युक्त **"श्री सद्गुरु परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी"** इस युग के समक्ष **"युग-द्रष्टा"** बनकर खड़े हैं, जो कि साक्षात् शिव स्वरूप हैं, जो कि साक्षात कृष्णमय हैं, जो कि वास्तव में सद्गुरु हैं, जिनके अंग-अंग से पद्मगंध निस्सृत होती है।

सम्भव है, मेरे इन तथ्यों पर कोई विश्वास करे या न करे, क्योंकि माया, जो स्वयं "श्री नारायण" का वाम अंग है, उससे कोई नहीं बचता। यदि कोई इस मायाजाल को तोड़ सकता है, तो वह उस परब्रह्म के दर्शन सहज ही प्राप्त कर सकता है, क्योंकि नारायण तो स्वयं सहजता का प्रतीक हैं, और सहज रूप में भक्तों के कल्याण के लिए इस भूलोक पर अवतरित हुए हैं।

अकिञ्चन सन् प्रभवः स सम्पदां
त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः।
स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते
न सन्ति याथार्थ्य विदः पिनाकिनः।।

कालीदास के शब्दों में शिव परम दरिद्री होकर भी समस्त सम्पत्तियों के उद्‌गमकर्त्ता हैं, सब सम्पत्तियां वहीं से प्रकट होती हैं, वे श्मशानवासी होकर भी तीनों लोकों के नाथ हैं, भयानक रूप में रहने पर भी उनका नाम **"शिव"** है, और सच तो यह है कि वे क्या हैं, यह तत्व कोई नहीं जानता, इसको जान लेना शिव कृपा पर ही अवलम्बित है।

शिव जगन्नियन्ता जगदीशवर हैं, एक प्रसंग में पार्वती जी कहती हैं, कि "भगवान शंकर जगद्‌गुरु हैं और मंगलशिरोमणी हैं"। उनके दिव्य चरणों का ब्रह्मा जी, भृगु, नारदादि महर्षिगण भी ध्यान करते हैं, वस्तुतः यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए, तो समस्त प्राणियों के अन्तःकरण में "शिव तत्व" ही व्याप्त है।

भगवान शिव एक हैं, पर अनेक रूप भी उन्हीं के हैं— कभी "आशुतोष", तो कभी "महादेव" या कभी "रुद्र", तो कभी "महामृत्युञ्जय" अपने अलग-अलग नामों से वे इस संसार में विराजमान हैं, और उनका एक भी नाम निरर्थक नहीं है, प्रत्येक नाम के अलग-अलग गुण और प्रयोजन हैं, जिनके प्रचलित होने का यदि मूल देखा जाए, तो अधिकांश नामों से भ्रम-निवृत्ति, मोह-नाश और सौभाग्य लाभादि हो सकते हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. **शिव**— जो भक्तों के समस्त पाप और त्रिताप को नाश करने में सदैव समर्थ हैं।
२. **पशुपति**— शिव सबको ज्ञान देने वाले हैं और अज्ञान से बचाने वाले हैं, तथा पशुवत जीवन से मुक्ति दिलाने के कारण ही वे "पशुपति" कहलाते हैं।
३. **मृत्युञ्जय**— यह सुप्रसिद्ध बात है कि मृत्यु को कोई जीत नहीं सकता, किन्तु जिन्होंने मृत्यु पर भी जय

प्राप्त की है, और जिनके आगे हर बार मृत्यु की ही पराजय होती है, वे "मृत्युञ्जय" कहलाते हैं।

४. **महेश्वर**— जो वेदों के आदि में ओऽम्कार रूप में माने गए हैं, और वेदान्त में निर्गुण रूप से स्थित रहते हैं, और जो सम्पूर्ण देवताओं में प्रधान होने से भी "महेश्वर" नाम से विख्यात हैं।

५. **रुद्र**— दुःख और उनके समस्त कारणों के नाश करने से तथा संहारादि में क्रूर रूप धारण करने से शिव को "रुद्र" कहा जाता है।

६. **आशुतोष**— अपने आनन्दित और उल्लसित स्वरूप के कारण ही वे "आशुतोष" कहलाते हैं।

जिस समय वे जैसा स्वांग भरते हैं, उस समय उनका वैसा ही नाम पड़ जाता है। संसार का सृजन करने पर वे "ब्रह्मा" कहलाते हैं, पालन करने पर "विष्णु", तो संहार करने पर वे "शिव" कहलाते हैं।

तारक देव महेश हैं, सबका तारनहार।
तम, सत, रज के रूप में, व्यापित है संसार।।

शिव की ऐसी ही विराट महिमा है। इस व्यापक जगत में जो लोग नाना दुःखों से पूर्ण संसार रूपी समुद्र के प्रवाह में पतित होकर पुनः उससे निकलना चाहते हैं, उन्हें शिव की ही आराधना करनी चाहिए।

इसीलिए वर्ष में एक दिन शिव-आराधना, पूजन-अर्चन आदि के लिए विशेष रूप से निर्धारित है, जिसे **"महाशिवरात्रि"** के नाम से जाना जाता है, जो आदि देव भगवान शिव के ही उल्लास का पर्व है।

यह पर्व पूरे भारतवर्ष में बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है, क्योंकि इस दिन भगवान शिव का पार्वती जी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था, अर्थात् इस दिन शिव की उपासना-साधना करने से भक्त को या साधक को एक विशेष प्रकार की ऊर्जा प्राप्त होती

है, क्योंकि उसे शिवरात्रि के दिन "शिवलिंग" का विधिवत् पूजन करने से शिव और शक्ति दोनों का ही सायुज्य प्राप्त होता है, और अपने इस शिव-शक्ति स्वरूप के कारण ही वे **"अर्द्धनारीश्वर"** भी कहे जाते हैं।

शिव के समान अन्य कोई देवत्व नहीं है, क्योंकि योग और भोग को एक साथ धारण करने की सामर्थ्य किसी भी अन्य देवता में नहीं है।

यों तो किसी भी सोमवार के दिन इस पूजन को सम्पन्न किया जा सकता है, किन्तु समय की अपनी एक विशेषता होती है, जिस प्रकार काल के सिर पर आगे बाल होते हैं, और पीछे से वह गंजा होता है, यदि मनुष्य उसे आगे से पकड़ लेता है, तो उसके बाल उसके हाथ में आ जाते हैं, और वह काल पर विजय पा लेता है, किन्तु जो मनुष्य उसे पीछे से पकड़ने की कोशिश करता है, उसके हाथ में कुछ नहीं आता, और उसके पास पछताने के अलावा कुछ शेष नहीं रह जाता।

इसी प्रकार समझदार व्यक्ति यदि उन विशेष क्षणों को शीघ्रता से पकड़ लेता है, तो वह जीवन में कभी पराजित नहीं होता, और यदि वह उस महत्वपूर्ण क्षण को गंवा बैठता है, तो उसके पास पछताने के अलावा और कुछ नहीं रहता, फिर उससे बड़ा दुर्भाग्यशाली कोई नहीं होता, इसीलिए समय का अपना विशेष महत्व होता है, और उसका प्रत्येक व्यक्ति को लाभ उठाना ही चाहिए।

"शिवरात्रि" अर्थात् शिव की रात्रि, जो जगत-गुरु हैं, जो समस्त कष्टों को दूर करने वाले हैं, जिनके चिन्तन मात्र से ही समस्त सुखों की प्राप्ति हो जाती है, और जो मनुष्य के समस्त पापों को दूर कर उसे मोक्ष प्रदान करने वाले हैं, उनकी उपासना व आराधना प्रत्येक व्यक्ति या साधक को इस शिवरात्रि के दिन अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

"शिवरात्रि" जो आनन्द की रात्रि है, जो मनुष्य के अन्धकारमय व घोर कालिमा युक्त जीवन को प्रकाशवान कर देने की रात्रि है, जो आत्मा को परमात्मा में लीन कर देने की रात्रि है, जो पूर्णता की रात्रि है, जो श्रेष्ठता की रात्रि है, जो शिव-शक्ति के सामञ्जस्य की रात्रि है, जो शिवत्व को प्राप्त कर लेने की रात्रि है. . . और ऐसे शिवत्व को प्राप्त कर लेना ही तो जीवन का परम सौभाग्य है, परम आनन्द है, जीवन की सर्वोच्चता है।

और यह सर्वोच्चता, यह आनन्द, यह सौभाग्य प्राप्त हो सकता है उस दिन शिव के विधिवत पूजन द्वारा, क्योंकि शिव समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में सक्षम हैं।

शिव पूजन में ध्यान देने योग्य बातें–

सिद्ध महात्माओं, प्रकाण्ड विद्वानों एवं शास्त्र ग्रन्थों के आधार पर शिव पूजन में ध्यान देने व सावधानी रखने योग्य बातें स्पष्ट की जा रही हैं, जिससे कि साधकों को शीघ्र ही फल प्राप्ति हो –

१. शंकर की पूजा स्नान करके ही करनी चाहिए और नीचे धोती पहिनना आवश्यक है, धोती लांगदार पहिने, तहमत की तरह धोती लपेटकर पूजा करना ठीक नहीं माना गया है।
२. भगवान शिव की पूजा के साथ ही साथ मां पार्वती की पूजा भी आवश्यक मानी गयी है, इससे पूर्व गणपति पूजन भी आवश्यक है।
३. शिव पूजन उत्तर की तरफ मुंह करके करना चाहिए।
४. जो साधक शिव की पूजा करे उसे त्रिपुण्ड अवश्य लगाना चाहिए, और यदि रुद्राक्ष की माला पहिन कर पूजा करे तो ज्यांदा उचित माना गया है।
५. बिल्व - पत्र शुद्ध ताजे हों, वे टूटे-फूटे न हों।
६. साधक को अपने महीने की कमाई में एक दिन की कमाई अवश्य ही पूजा या साधना में व्यय करनी चाहिए।
७. जहां तक हो सके स्वयं ही शंकर की पूजा करनी चाहिए, किसी ब्राह्मण आदि का उपयोग इस कार्य के लिए कम से कम करें।
८. गणेश जी को तुलसीदल तथा मां पार्वती को दूर्वा नहीं चढ़ानी चाहिए।
९. पत्र, पुष्प, फल ये सभी मुख नीचे करके नहीं चढ़ाने चाहिए। बिल्व - पत्र डंठल तोड़कर उल्टे करके चढ़ाने चाहिए।
१०. भगवान शंकर कमल, गुलाब, कनेर, सफेद आक या मदार पुष्प से ज्यादा प्रसन्न होते हैं, धतूरा उन्हें सबसे अधिक प्रिय है।
११. बिल्व - पत्र, खेजड़ी, आँवला, तमाल पत्र, और तुलसी-इनके पत्ते टूटे-फूटे होने पर भी पूजा में ग्रहण करने योग्य माने गये हैं। बिल्व पत्र, कुंद, तमाल, आमला, तुलसी, कमल के पुष्प आदि एक दिन पहले लाकर भी पूजा में प्रयोग किये जा सकते हैं क्योंकि इनको बासी होने का दोष नहीं लगता।
१२. भगवान शिव की पूजा में संस्कृत पढ़ना आवश्यक नहीं है, अपितु अपनी मन की भावनाओं से भी उनकी पूजा की जा सकती है।
१३. जो स्त्रियां शिव पूजन करती हों, यदि उनके बालक का जन्म हो तो उनको दस दिन तक सूतिकागृह में ही भगवान शिव की मात्र मानसिक पूजा करनी चाहिए।
१४. कुमारी कन्याएं सुन्दर वर प्राप्ति हेतु बाल्य काल से ही शिव पूजा कर सकती हैं।
१५. शिव की आधी परिक्रमा ही की जाती है, भूल करके भी शिव मन्दिर में शिव की पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए।
१६. शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, पर शिव के सामने जो फल या प्रसाद रक्खा हो उसे ग्रहण

रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रो ब्रह्मा उमा वाणी तस्मै तस्यै नमो नमः।।
रुद्रो विष्णुरुमा लक्ष्मीस्तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै नमो नमः।।
रुद्रो दिवा उमा रात्रिस्तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रौ यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्यै नमो नमः।।
रुद्रोऽर्थ अक्षरा सोमा तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रो लिंगमुमा पीठं तस्मै तस्यै नमो नमः।।

किया जा सकता है।

१७. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए भगवान शंकर की कमल या विल्व-पत्र से पूजा की जानी चाहिए। एक लाख विल्व-पत्र चढ़ाने पर साधक को कुबेर के समान सम्पत्ति प्राप्त होती ही है।

१८. मोक्ष की इच्छा रखने वाले को एक लाख दर्भ के द्वारा शिव पूजा करनी चाहिए।

१९. सन्तान की इच्छा रखने वाले को भगवान शंकर पर एक लाख धतूरे के पुष्प चढ़ाने का विधान शास्त्रों में बताया गया है।

२०. भोग व मोक्ष दोनों प्राप्त करने वाले को आक के एक लाख पत्ते भगवान शंकर को चढ़ाने चाहिए।

२१. जो व्यक्ति एक हजार कनेर के पुष्प भगवान शंकर पर चढ़ाता है, वह अवश्य ही रोग मुक्त होता है।

२२. जो व्यक्ति एक हजार विल्व-पत्र शिव को चढ़ाता है उसके जीवन की प्रत्येक इच्छा पूरी होती है और उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

२३. जो व्यक्ति एक लाख चावल चढ़ाता है उसे लक्ष्मी प्राप्त होती है, पर इसमें एक भी चावल खण्डित नहीं होना चाहिए।

२४. शरीर पुष्टि हेतु एक लाख उड़द के दानों से भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए।

२५. यदि साधक गंगाजल से भगवान शंकर का अभिषेक करता है, तो उसे निश्चय ही पुत्र सुख प्राप्त होता है।

२६. प्रदक्षिणा शंकर के दाहिनी तरफ से प्रारम्भ की जानी चाहिए।

इस प्रकार साधक को यथा सम्भव शिव पूजा में सावधानी बरतनी चाहिए और उपरोक्त नियमों का पालन करना चाहिए।

शिव जी की आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी- सहितं नमामि
जय शिव ॐकारा, स्वामी भज शिव ॐकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ।।१।। ॐ हर हर . . .
एकानन चतुरानन पंचानन राजै। हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ।।२।। ॐ हर हर . . .
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै। तीनो रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ।।३।। ॐ हर हर . . .
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ।।४।। ॐ हर हर . . .
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे ।।५।। ॐ हर हर . . .
कर मध्ये इक मण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता। सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ।।६।। ॐ हर हर . . .
काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी। नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ।।७।। ॐ हर हर . . .
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ।।८।। ॐ हर हर . . .
त्रिगुणा स्वामी की आरति जो कोई नर गावे, ज्योरां मन शुद्ध होय जावे, ज्योरां पाप परा जावे
ज्योरे सुख संपति आवे, ज्योरां दुःख दारिद्र जावे, ज्योरां घर लक्ष्मी आवे,
भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ।।९।। ॐ हर हर . . .

सम्पूर्ण भोग व ऐश्वर्य प्रदायक

व्याघ्र चर्म-शिरो-बुद्धां, जगत् त्रय विभाविनीम् ।
साधकानां सुखं कर्त्री सर्व लोक भयंकरीम् ।
एवम्भूतां महादेवीं तारिणीं प्रणमाम्यहम् ।

देवी का शिरोदेश व्याघ्र-चर्म से आवृत्त है। ये तीनों लोकों का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली है, साधकों को सुख देने वाली और सर्व लोक भयंकरी है। मैं श्रद्धापूर्वक महादेवी को प्रणाम करता हूं।

जीवन में सभी कुछ होना जरूरी है, क्योंकि धन, वैभव, सुख-सम्पन्नता, ऐश्वर्य, यश, सम्मान जब तक जीवन में न हो, तब तक मनुष्य पूर्ण नहीं कहलाता, और इसके लिए वह हर क्षण प्रयासरत भी रहता है, किन्तु आधे से अधिक जीवन बीत जाने के बाद भी वह सब कुछ प्राप्त कर लेने में असमर्थ ही रहता है, इसी कारणवश उसका जीवन अपूर्ण ही कहलाता है, परन्तु इसे पूर्णता भी दी जा सकती है, यदि वह अपना कुछ समय निकाल कर इस साधना को सम्पन्न कर ले तो।

वैसे तो हर साधना अपने-आप में विशिष्ट होती है, किन्तु हर साधना का अपना-अपना अलग ही महत्व होता है, तारा साधना व्यक्ति को सम्पूर्ण भोग व ऐश्वर्य प्रदान करती है, इसे सम्पन्न कर साधक थोड़े समय में ही वह सब

कुछ प्राप्त कर सकता है, जो उसके भौतिक जीवन की आवश्यकता होती है।

''तारा'' दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या है, और अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ भी। **किसी भी साधक को तारा साधना सिद्ध कर ही लेनी चाहिए, क्योंकि सिद्ध हो जाने पर यह उस साधक को धन का अतुलनीय भण्डार प्रदान करती है, तेजस्विता प्रदान करती है, यश प्रदान करती है, वाक्शक्ति प्रदान करती है, और ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करती है, जिससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता,** इसीलिए हमारे पूर्वजों, ऋषियों, मुनियों आदि ने भी इस साधना को सम्पन्न किया, जिनमें वशिष्ठ, विश्वामित्र, रावण, गुरु गोरखनाथ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, उन्होंने अपने-अपने तरीकों से इस महाविद्या को सिद्ध कर अपने जीवन को पूर्णता प्रदान की।

''तारा साधना'' भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को पूर्णता देने वाली सर्वश्रेष्ठ साधना है, वैसे तो

इस विद्या की सिद्धि से कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता। धन-सम्पदा के साथ ही वाणी में ओज और प्रभाव व्याप्त हो जाता है; और व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है।

तारा साधना के बारे में पहले भी बहुत कुछ कहा जा चुका है, जिसका लाभ साधकों को मिला भी है। "तारा साधना" दस महाविद्याओं में प्रमुख होने के कारण सिद्ध हो जाने पर शीघ्र फल प्रदान करती है, और इसे सिद्ध करने की नवीन पद्धतियां साधकों को ज्ञात हो सकें, इसीलिए इस साधना को एक बार फिर नए ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह साधना उन साधकों के लिए श्रेयस्कर है, जो अत्यन्त दरिद्री हों, क्योंकि तारा धन प्रदायक देवी है, जो अपने साधक को स्वर्ण प्रदान करके उसके जीवन में धन के अभाव को हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर देती है। कुबेर ने भी इस साधना को सम्पन्न किया है, जिससे वह अतुलनीय धन-भण्डार प्राप्त कर सके। शंकराचार्य ने भी इस साधना को जीवन का प्रमुख आधार बताया है। **"संकेत चन्द्रोदय"** में लिखा है कि यह हल्लेखा, भुवनेश्वरी, भुवना देवी, ईश्वरी, ह्रीं, महामाया, जीवन मध्यमा, जगत्-त्रय-धारण-कर्त्री और परापरेशी है। **"एक वीरा कल्प"** में लिखा है कि यह विद्या पंचभूत प्रकाशिनी है—

जहां यह साधना साधक को सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सौभाग्य प्रदान करने में सहायक है, वहीं ज्ञान, वाणी एवं वाक् सिद्धि में भी यह साधक को पूर्ण सफलता प्रदान करती है।

तारा साधना अत्यंत ही प्राचीन विद्या है, जिसे हमारे पूर्वजों ने तो सिद्ध किया ही है, परन्तु आज भी हजारों साधकों ने इस साधना को सिद्ध कर यह प्रमाणित कर दिया है, कि तारा महाविद्या दस महाविद्याओं में से सर्वश्रेष्ठ एवं शीघ्र फल प्रदान करने वाली देवी है, जिसे सिद्ध कर साधकों को विशेष लाभ प्राप्त हुए हैं, क्योंकि तारा साधक को भोग और मोक्ष दोनों ही प्रदान करने में सहायक है, इसलिए प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस साधना को गुरु गृह या अपने घर में ही बैठकर अवश्य सम्पन्न करे, क्योंकि यह साधक के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण साधना है।

साधना समय

२१ अप्रैल ६५ को तारा साधना सम्पन्न करने का विशेष दिवस है, यदि साधक किसी कारणवश इस दिन इस साधना को सम्पन्न नहीं कर पाता, तो यह किसी भी रविवार को अमृत काल में सम्पन्न की जा सकती है। साधक दिन या रात्रि में जब भी सम्भव हो सके, इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह एक दिवसीय साधना है।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह स्नान आदि से निवृत्त होकर उत्तर की ओर मुंह करके शुद्ध आसन पर बैठ जाए। साधक साधना काल में, इस साधना में पीले या गुलाबी किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण कर सकता है, तथा उसी रंग का वस्त्र लेकर वह बाजोट पर बिछा दे, और उस पर **गुरु चित्र** या **गुरु यंत्र** के साथ **"भगवती तारा यंत्र"** को भी स्थापित कर दे, इसके पश्चात् चावलों की ढेरी पर एक घी या तेल का दीपक प्रज्वलित कर दे, और साथ ही **"महाशंख"** भी रख दे।

फिर इन वस्तुओं का कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करे, और गुरुदेव से मन ही मन यह प्रार्थना करे, कि मुझे इस साधना में सफलता प्राप्त हो, ऐसा ही आप मुझे आशीर्वाद प्रदान करें, इसके पश्चात् तारा देवी का श्रद्धापूर्वक ध्यान करे, और तीन बार **"ॐ तारायै नमः"** मंत्र बोलकर आचमन लेते हुए जल को ग्रहण करें, फिर हाथ धो ले, इसके पश्चात् निम्न मंत्रों से निर्दिष्ट स्थानों को स्पर्श करे— **ॐ वैरोचनाय नमः– वदने। ॐ शंखाय नमः– दक्ष-नासायां। ॐ पाण्डवाय नमः– वाम-नासायां। ॐ पद्म नाभाय नमः– दक्ष नेत्रे। ॐ अमिताभाय नमः– वाम नेत्रे। ॐ नामकाय नमः– दक्ष कर्णे। ॐ मामकाय नमः– वाम कर्णे। ॐ तावकाय नमः– नाभौ। ॐ पद्मान्तकाय नमः– वक्षे। ॐ यमान्तकाय नमः– शिरसि। ॐ विघ्नान्तकाय नमः– दक्ष स्कन्धे। ॐ नरान्तकाय नमः– वाम स्कन्धे।**

इस प्रकार आचमन करने से साधक के समस्त पापों का नाश हो जाता है। इसके पश्चात् साधक **"कमलगट्टे की माला"** से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र-जप सम्पन्न करे —

मंत्र

ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्

साधना काल में दीपक जलते रहना चाहिए। मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती कर भोग वितरित करें, तथा तारा यंत्र, माला और शंख को किसी कुंए, नदी या तालाब में विसर्जित कर दें, ये यंत्र, माला और शंख, मंत्र-सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित होने चाहिए।

इस साधना को सिद्ध करने के पश्चात् भगवती तारा अपने भक्त को तारुण्य स्वरूप में दर्शन देती हैं, और जिस इच्छा हेतु वह इस साधना को सम्पन्न करता है, उसमें पूर्णता प्रदान करती हैं।

यश-प्रतिष्ठा, पुत्र प्राप्ति के लिए

श्री कृष्ण ने शिव साधना सम्पन्न की

"कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं" जो कृष्ण सभी वैभव, सुख व सम्पदा प्रदान करने में पूर्ण सक्षम हैं, जिन्हें पूरे विश्व का गुरु कहा गया है, उन्होंने स्वयं अपने जीवन में उन्नति के लिए, पुत्र की प्राप्ति के लिए तथा जब भी उनके सामने कोई विकट समस्या आई, तो उसका भी निराकरण करने के लिए वे भगवान शिव की ही आराधना-उपासना करते थे।

सम्भव है यह बात श्रीकृष्ण भक्तों को अत्यधिक आश्चर्यचकित कर दे, किन्तु उपरोक्त बात अक्षरशः सत्य है, इसकी पुष्टता **"लिंग पुराण"** में वर्णित निम्न श्लोक से होती है–

पुत्रार्थं भगवास्तत्र तपसप्तुं परं जयाम।
आश्रम-चोवमन्योर्वै दृष्टवांस्तत्र तं मुनिमू।।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण पुत्र-प्राप्ति के लिए तपस्या करने वन में उपमन्यु के आश्रम में जाते हैं।

तदाप्रभृति तं कृष्णं मुनयः शंसितव्रताः ।
दिव्याः पाशुपताः सर्वे तस्तुः संपृत्य सर्वतः ।।

उपमन्यु मुनि से श्री कृष्ण शिवमंत्रोपदेश प्राप्त कर शिवारधना सम्पन्न करते हैं, जिससे भगवान शिव प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण को वर प्रदान करते हैं।

इसी कथन की पुष्टि श्री महाभारत के अनुशासनिक पर्व द्वारा भी होती है —

द्रक्ष्यसे पुण्डरीकाक्ष महादेवं न संशयः।
अचिरेणैव कालेन यथा दृष्टो मया नहा।।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि एक दिन मेरी पत्नी जाम्बवती मेरे पास अत्यन्त व्यथित हृदय से आयी, और प्रार्थना कर कहने लगी कि आपने जिस प्रकार भगवान पशुपति की आराधना करके देवी रुक्मिणी को पुत्रवती बनने का सौभाग्य प्रदान किया, उसी प्रकार मुझे भी पुत्रवती बनने का सौभाग्य प्रदान करिए।

मैंने अपने पुत्र साम्ब को पाने के लिए भगवान शिव की आराधना की थी, और देवी जाम्बवती की प्रार्थना पर मैं पुनः व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु के दिव्य आश्रम में गया और उनकी अभ्यर्थना की, तब उपमन्यु मुनि ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया, कि मुझे अपने ही समान पुत्र की प्राप्ति होगी। मुनि उपमन्यु के द्वारा शिव महिमा वर्णन सुनते हुए क्षण निमेष की भांति आठ दिन व्यतीत हो गये, फिर उन्होंने मुझे **''पाशुपत-दीक्षा''** प्रदान कर **''शिव साधना''** सम्पन्न करने की विधि समझायी।

इतना ही नहीं भगवान कृष्ण अपने सर्वप्रिय भक्त अर्जुन को भी समय-समय पर शिव के विभिन्न रूपों की साधना सम्पन्न करवाते रहते थे। श्रीमद्भगवत गीता में अर्जुन को परमहित का उपदेश देते हुए **श्रीकृष्ण कहते हैं– ''भगवान शिव की साधना, जो कि स्वयं मेरा अनुभूत किया हुआ उपाय है, इसे सम्पन्न करना ही सभी बाधाओं पर विजय प्राप्ति का श्रेयस्कर उपाय है''।** अर्जुन को प्रत्येक विपत्ति से मुक्त कराने के लिए श्रीकृष्ण ने शिव साधना का उपदेश दिया।

कथा प्रसिद्ध है कि जब जयद्रथ ने अर्जुन पुत्र अभिमन्यु का वध कर दिया था, तब अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी, कि यदि सूर्यास्त के पहले जयद्रथ का मैंने वध नहीं कर दिया, तो मैं स्वयं चिता में प्रवेश कर जाऊंगा। उस समय भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पूर्ण रात्रि भगवान शिव की **''पाशुपतास्त्रेय साधना''** सम्पन्न करायी थी, और उस साधना के द्वारा अर्जुन को पुनः पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था।

महाभारत युद्ध काल में रणक्षेत्र में जब भगवान कृष्ण से अर्जुन ने पूछा — ''मेरे रथ के आगे-आगे शत्रुओं का संहार करता हुआ यह त्रिशूलधारी कौन है? तब अर्जुन की जिज्ञासा को शांत करने के लिए श्रीकृष्ण ने बताया, कि ये भगवान शिव हैं, जिनकी आराधना तुमने की है, इन्हीं के अनुग्रह से ही तुम्हारी सर्वत्र जय होती है, क्योंकि ये सदैव तुम्हारे साथ-साथ रहते हैं।

महाभारत के ही द्रोण पर्व में वर्णन मिलता है, कि द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अश्वत्थामा ने अत्यन्त क्रोधित होकर ''नारायणास्त्र'' का प्रयोग कर दिया, जिसके कारण पाण्डव सेना जलने लगी, चारों तरफ से अग्नि की विकराल ज्वालाएं पाण्डव सेना को अपने में विलीन करने के लिए लपकने लगीं, तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन, युधिष्ठर,भीम, नकुल और सहदेव सहित सभी इष्टजनों को रथ से उतर कर, अपने-अपने शस्त्र फेंक कर जमीन पर नम्र भाव से खड़े हो जाने की आज्ञा दी। इस

प्रकार नारायणास्त्र के कोप से भगवान कृष्ण ने उन सभी को बचा लिया।

जब नारायणास्त्र पाण्डव सेना को जला कर लोप हो गया, तब अश्वत्थामा श्रीकृष्ण व पाण्डव को सुरक्षित देख अत्यन्त आश्चर्यचकित रह गया, उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। इसका कारण जानने के लिए वह भगवान वेदव्यास के पास गया और उन्हें प्रणाम कर निवेदन किया— हे महामुनि! कृपया आप मेरी शंका का निवारण करें। क्या मेरे पिता श्री द्रोण ने मुझे अस्त्र-शस्त्र विद्या सिखाने में न्यूनता रखी थी या कलिकाल का प्रभाव प्रारम्भ हो गया है, जिससे मंत्रों के सामर्थ्य में कमी आ गई है। आप कृपा कर स्पष्ट करें, कि नारायणास्त्र का प्रयोग होने पर भी कृष्ण व पाण्डव कैसे बच गए?

यह सुनकर भगवान व्यास ने अश्वत्थामा को समझाया— तुम्हारे पिता श्री द्रोण ने तुम्हें पूर्णता के साथ अस्त्र-शस्त्र विद्या का ज्ञान दिया है, उनकी शिक्षा में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है, और न ही कलिकाल के कारण मंत्रों में सामर्थ्यता कम हो गई है, यदि ऐसा ही होता, तो सभी को बच जाना चाहिए, सिर्फ पाण्डव व कृष्ण ही क्यों बचे? यह प्रश्न तुमने इसलिए पूछा क्योंकि तुम्हें कृष्ण के मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

आगे पुनः व्यास भगवान श्रीकृष्ण का परिचय देते हुए कहते हैं कि —

योऽसौ नाम पूर्णो सार्माप पूर्वजः।
अजायत च कर्यार्थ पुत्रो धर्मस्य विश्वकृतः।।
तस्मै वरानचिन्त्यात्मा नीलकण्ठः पिनाकधृक।
अर्हते देवमुख्याय प्रायच्छदृषिसंस्तुतः ।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण के रूप में पूर्वज़ों के पूर्वज पद्मनयन भगवान विष्णु ही पृथ्वी पर धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुए हैं। इन्होंने हिमालय में निराजल, निराहार रह कर जगत्पति भगवान के विभिन्न स्वरूपों यथा — रुद्र, ऋषभ, जटाधर, विरूपाक्ष, ईशान आदि की अत्यन्त समर्पित भाव से अति कठोर साधना सम्पन्न की है। श्रीकृष्ण की तपस्या से प्रसन्न होकर पिनाक धारी नीलकंठ भगवान शिव ने उन्हें वर व आशीर्वाद प्रदान किया— हे नारायण! तुम प्रत्येक युग में देवताओं, गन्धर्वों व मनुष्यों आदि में सर्वश्रेष्ठ तथा अप्रमेय बलवान होंगे, वही भगवान नारायण जो अपनी माया के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अपने वशवर्ती बना कर रखे हैं, भगवान कृष्ण हैं।

इस कथन द्वारा स्पष्ट होता है कि व्यास भगवान ने श्रीकृष्ण को परम शिव भक्त के रूप में प्रतिपादित किया है।

महाशिव पुराण की ''ज्ञान संहिता'' में भी इस बात का प्रमाण मिलता है, कि भगवान श्रीकृष्ण ने अत्यन्त भक्ति-भाव से शिवाराधना की थी और पूरे साधना काल में भगवान शिव के ज्योतिर्मय शिवलिंग पर नित्य १०८ बिल्व-पत्र निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करते थे —

मंत्र

ॐ शाम्ब शिवाय पुत्र प्रदाय शं नमः

उनकी इस प्रकार की भक्ति देखकर अचिन्त्य स्वरूप भगवान शम्भू ने कई वर प्रदान किए। भगवान कृष्ण के द्वारा बिल्व-पत्रों से पूजित होने के कारण उस शिवलिंग का नाम **''बिल्वेश्वर शिवलिंग''** हुआ।

स्वयं श्रीकृष्ण महाभारत के अनुशासनिक पर्व में कहते हैं —

जब मैंने ज्योतिर्मय भगवान शिवलिंग का अर्चन किया, उस समय उन्होंने प्रसन्न होकर मुझे निम्न वरदान प्रदान किए — धर्म में दृढ़ता बनी रहे, विश्व में मान, पद, प्रतिष्ठा, सुयश व कीर्ति प्राप्त हो, मेरा(शिव का) सान्निध्य प्रति क्षण प्राप्त हो, उत्कृष्ट वैभव, सम्पन्नता, भोग व ऐश्वर्य प्राप्त हो, श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति हो, युद्ध में विजय, प्रत्येक कार्य में क्षमता प्राप्त हो, उनके द्वारा प्रदत्त वरदान से मैं जगत में सुयश प्राप्त कर सका।

स्कन्द पुराण में श्रीकृष्ण ने कहा है— जो व्यक्ति भगवान शिव को छोड़ कर एकमात्र मेरा ही भजन श्रद्धा से करता है, उसे श्रेष्ठ भक्ति तो प्राप्त होगी ही, किन्तु मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकेगी, क्योंकि कैवल्य मुक्ति देने वाले एकमात्र भगवान शिव ही हैं।

इस प्रकार इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीकृष्ण परम शिवभक्त थे, यदि थोड़ा और सूक्ष्मता से विवेचन किया जाए, तो स्पष्ट होता है —

''यो यद्भक्तः स एव सः''

अर्थात् स्वयं भगवान शिव, श्री कृष्ण हैं, और स्वयं श्रीकृष्ण, भगवान शिव हैं। श्रीमद्भागवद के अनुसार—

अहं ब्रह्मा च सर्वश्च जगतः कारणं मरहम्
आत्मेश्वर उपद्रष्टाम स्वयं दृगविशेषणः।।

मैं ही नारायण, ब्रह्मा व शिव हूं। मैं ही इन तीनों रूपों में जगत का कारण हूं, सभी में, सभी रूपों में आवेष्टित होते हुए मैं ही आत्मा, उपद्रष्टा व ईश्वर हूं।

शक्ति पर्व चैत्र नवरात्रि

शक्ति के बिना कोई सिद्धि नहीं है, और शक्ति तत्व जाग्रत हो सकता है साधना द्वारा, इस शक्ति और सिद्धि द्वारा भाग्य-तत्व प्रबल होता है, कर्म-तत्व पूर्ण फल देता है, क्योंकि शक्ति और सिद्धि एक महान प्रक्रिया है आत्म-साक्षात्कार की, अपने बल, अपनी बुद्धि को पहिचान कर जीवन-दिशा को निर्धारित करने की।

नवरात्रि के इस पावन पर्व पर, जबकि सम्पूर्ण वायुमण्डल आपूरित होगा मां दुर्गा की शक्ति से, ऐसे अवसर पर यदि मां दुर्गा की आराधना व साधना की जाए, तो हम अपने इस जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

भारतवर्ष में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां नवरात्रि के पर्व पर मां दुर्गा का आह्वान न किया जाता हो, और **हर बार की तरह इस वार भी आपके सामने चैत्र नवरात्रि पूर्ण शक्ति युक्त होकर के उपस्थित हो रही है, जब मां दुर्गा अपने पूर्ण वात्सल्य स्वरूप धारण कर जगत में विद्यमान होती हैं, और प्रदान करती हैं, अपने पुत्रों को वह सब कुछ, जो उनकी इच्छा होती है, जो उनकी मनोकामना होती है, क्योंकि 'मां' शब्द ही ऐसा है, जो अपने सुपुत्र या कुपुत्र दोनों पर ही समान रूप से प्रेम व आशीर्वाद की नौ दिनों तक निरन्तर वर्षा करती है।**

यह चैत्र नवरात्रि पर्व तो शक्ति, साधना, सौभाग्य का पर्व है, जव साधक पूर्ण तन्मयता से लीन हो मां दुर्गा की पूजा-अर्चना व साधना कर उसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकता है, क्योंकि शरीर और मन दोनों प्रकार के कष्टों का निवारण मां दुर्गा के चरणों में ही निहित है।

मां दुर्गा तो आद्यशक्ति हैं, और विश्व की प्रत्येक शक्ति इसी महान शक्ति से उत्पन्न होती है, ये परम विद्या तथा वेदों की आधार हैं, इसीलिए नवरात्रि पर्व को **'शक्ति पर्व'** के रूप में सम्वोधित किया जाता है।

जगत्जननी आद्यशक्ति जिनके विभिन्न स्वरूप हैं, जो अपने विभिन्न स्वरूपों में भक्तों का कल्याण करते हुए चराचर जगत में विचरण करती हैं, जो मनुष्य तो क्या शिव के लिए भी शक्ति हैं, जिसके बिना ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अपूर्ण हैं, उस आदिशक्ति का ध्यान न करने वाले, साधना न करने वाले दुर्भाग्यशाली ही कहे जायेंगे, जिसके एक-एक स्वरूप की माया निराली है, जो शीघ्र प्रसन्न होने वाली हैं, और अपने भक्तों को अभय प्रदान करती हैं।

वर्ष में चैत्र नवरात्रि को सर्वाधिक विशेष महत्व दिया जाता है, इसके कई कारण हैं—

१. इस दिन से नया वर्ष आरम्भ होता है।
२. संवत्सर का प्रारम्भ भी इसी तिथि से होता है।
३. यह नवरात्रि **"सकाम्य नवरात्रि"** कहलाती है।

जिस व्यक्ति को भी यदि किसी प्रकार की कामना होती है, चाहे वह अर्थ-प्राप्ति, रोग मुक्ति, कर्ज उतारना, शीघ्र विवाह, व्यापार-वृद्धि या अन्य किसी भी प्रकार की कामना हो, तो इस नवरात्रि में देवी साधना करने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

नवरात्रि पूजन के कई उपाय हैं, कई प्रयोग हैं और कई तरीके हैं, परन्तु जो साधक किसी कारणवश गुरु के समीप न पहुंच सके, उनके सान्निध्य में बैठकर साधना सम्पन्न न कर सके, उसे घर पर बैठकर ही इस नवरात्रि पूजा-विधान को विधिवत् ढंग से सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि नवरात्रि का तो प्रत्येक दिन शुभ एवं विशेष मुहूर्त सिद्ध होता है, अतः किसी भी कार्य हेतु इन नौ दिनों में मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती।

आदिशक्ति के मुख्यतः तीन स्वरूप साधकों की श्रद्धा, भावना के केन्द्र बिन्दु हैं, इन्हीं के भेद-प्रभेद को लेकर सैकड़ों चरित्रों और नाम रूपों का साहित्य रचा गया है, इसके तीन प्रमुख रूप हैं— (१) सरस्वती (२) लक्ष्मी (३) काली।

काली का एक रूप दुर्गा है, वस्तुतः काली का मूल रूप

यही है, क्योंकि मां दुर्गा अपने तीव्र और शांत दोनों ही स्वरूपों में विद्यमान होती हैं, जहां वे मनुष्य की तामसिक वृत्तियों का नाश करती हैं, वहीं वे विभिन्न प्रकार के कार्यों, जैसे– आर्थिक उन्नति, मानसिक शांति, पारिवारिक उन्नति, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु भी हर क्षण साधक के साथ शक्ति रूप में विद्यमान रहती हैं।

दुर्गा के नौ अवतार विशेष रूप से पूजित होते हैं, और नवरात्रि काल में प्रतिदिन उनके अलग-अलग रूप की उपासना क्रमिक रूप से किया जाने का विधान है, क्योंकि इसके किसी भी रूप का, किसी भी नाम का स्मरण किया जाए, उस भक्त व साधक को मां दुर्गा की कृपा प्राप्त होती ही है।

दुर्गा के नौ अवतार इस प्रकार हैं–

१. शैलपुत्री, २. स्कन्द माता, ३. ब्रह्मचारिणी, ४. चन्द्रघण्टा, ५. कूष्माण्डा, ६. कात्यायनी, ७. कालरात्रि, ८. महागौरी और ९. सिद्धिदात्री।

साधना विधान

सामग्री – **''सर्वसिद्धि प्रदाता पैकेट''** इसके अन्तर्गत निम्न प्राण-प्रतिष्ठित एवं विशिष्ट मुहूर्त में सिद्ध की गई सामग्रियां हैं– **नवदुर्गा यंत्र, शंख निधि, ब्राह्मी, पद्म निधि, भूपुर, सारंग माला।**

दिवस – १ अप्रैल ९५ से ८ अप्रैल ९५

समय – रात्रि ८.३० से १०.३० तक।

विधि–

पूजा-स्थान को स्वच्छ करें और स्वयं पीले वस्त्र धारण कर, आसन पर सुखासन या पद्मासन में बैठ जाएं, **दैनिक साधना** विधि के अनुसार पवित्रिकरण आदि क्रियाएं सम्पन्न कर, गुरु-पूजन करें तथा १ माला गुरु मंत्र का जप करें। अपने सामने स्थापित दुर्गा चित्र के बाएं पार्श्व में कलश तथा दक्षिण पार्श्व में दीपक स्थापित करें, तत्पश्चात् चित्र के सामने किसी बड़ी ताम्र प्लेट में निम्न यंत्र कुंकुम से अंकित करें–
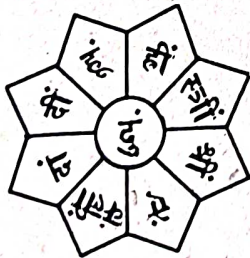
इस यंत्र के चारों दिशाओं में चावल की एक-एक ढेरी बनाएं, कुंकुम से अंकित यंत्र के ऊपर ''नवदुर्गा यंत्र'' स्थापित कर दें तथा चारों दिशाओं में जो चार ढेरियां बनी हैं, उनके ऊपर पूर्व दिशा में ''शंख निधि'' पश्चिम में ''ब्राह्मी'', दक्षिण में ''पद्म निधि'' और उत्तर में भूपुर स्थापित करें, फिर मां दुर्गे का ध्यान निम्न प्रकार से करें–

ध्यान–

सिंह-स्कन्धाधिरूढ़ां तु, नानालंकार-भूषिताम्।
चतुर्भुजां महा-देवीं, नाग-यज्ञोपवीतिनीम्।।
शंख-शार्ङ्ग-समायुक्त-वाम-पाणि-द्वयान्विताम्।
चक्रं च पंच-बाणांश्च, धारयन्तीं च दक्षिणे।।
रक्त-वस्त्र-परीधानां, बालार्क-सदृशी-तनुम्।
नारदाद्यैर्मुनि-गणैः, सेवितां भव-सुन्दरीम्।।
त्रिवली-वलयोपेत-नाभि-नाल-मृणालिनीम्।
रत्न-द्वीपे महा-द्वीपे, सिंहासन-समन्विते।।
प्रफुल्ल कमलारूढ़ां, ध्यायेत् तां भव-गेहिनीम्।।

अर्थात् मां दुर्गा सिंह पर विराज रही हैं और विविध आभूषणों से सुशोभित हैं, जिनके बाएं दोनों हाथों में शंख और सारंग है तथा दाएं दोनों हाथों में चक्र और पंचबाण शोभित है, उन्होंने नाग से बना यज्ञोपवित धारण किया है तथा रक्तिम वस्त्र पहिनने से उनकी दिव्य देह तरुण सूर्य मण्डलवत् भासित हो रही है, ऐसी त्रिभुवन मोहिनी की सेवा में नारद तथा समस्त मुनिवर सदैव उपस्थित रहते हैं, विविध प्रकारों से शोभायमान देवी को मैं नमन कर रहा हूं, आप समस्त शत्रुओं का नाश कर, मुझे अभीष्ट वर, सौभाग्य एवं समस्त वैभव प्रदान करें।

तत्पश्चात् आचमनी में जल तथा रक्त चन्दन लेकर नवदुर्गा को अर्घ्य प्रदान करें, पुनः लाल रंग के फूलों से क्रमानुसार निम्न मंत्र बोलते हुए एक-एक पुष्प यंत्र पर अर्पित करें–

''ॐ ह्रीं शैलपुत्र्यै नमः, ॐ स्त्रीं स्कन्धायै नमः, ॐ श्रीं ब्रह्मचारिण्यै नमः, ॐ ऐं चन्द्रघण्टायै नमः, ॐ क्लीं कूष्माण्डायै नमः, ॐ दां कात्यायन्यै नमः, ॐ दीं कालरात्र्यै नमः, ॐ हूं महागौर्यै नमः, ॐ दुं सिद्धिदात्र्यै नमः।''

फिर चारों दिशाओं में स्थापित शंख निधि, पद्म निधि, ब्राह्मी, भूपुर का धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प से पूजन करें, इसके पश्चात् निम्न मंत्र का ''सारंग माला'' से नित्य तीन माला जप करें–

मंत्र

ॐ दुं दुर्गायै नमः

९ अप्रैल ९५ तद्नुसार **चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी** के दिन, मंत्र-जप सामप्ति के बाद अग्नि प्रज्वलित कर, उपरोक्त मंत्र की १०८ बार घी से आहुति दें, फिर ''गुरु आरती'' तथा ''दुर्गा आरती'' सम्पन्न करें, चढ़ाये गए प्रसाद को पूरे परिवार में वितरित कर दें, अपनी सामर्थ्य के अनुसार १, ३, ५ या ९ कन्याओं को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा प्रदान करें। सर्वसिद्धि प्रदाता पैकेट की समस्त सामग्रियों को किसी पीले वस्त्र में लपेट कर मौली से बांध दें तथा कुंकुम से सात बिन्दियां उस पर लगाकर नदी में उसे विसर्जित कर दें।

ब्रह्माण्ड में शिव-तत्व का रहस्य
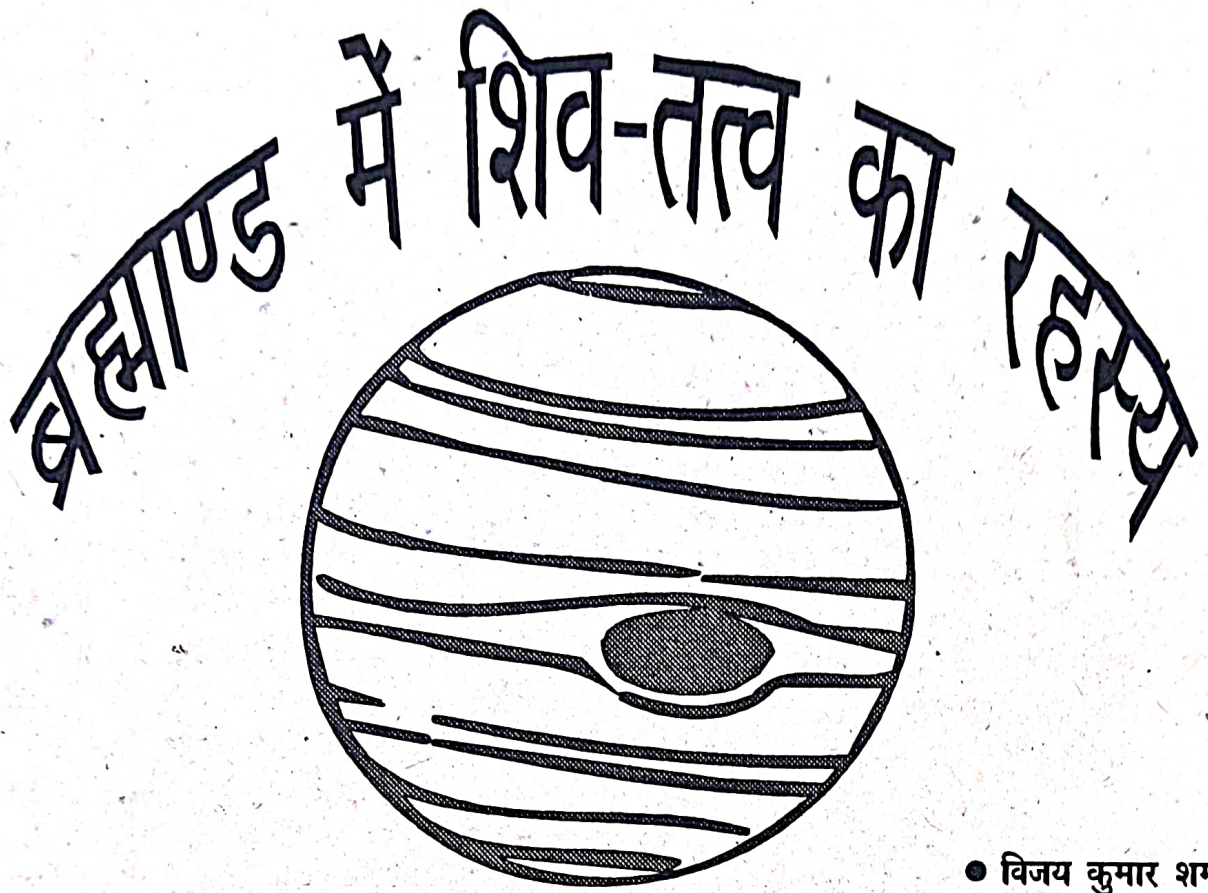
● विजय कुमार शर्मा

"सम्पूर्ण भारतीय वांगमय" में भगवान शिव के जितने रहस्यमय रूप लक्षित होते हैं, उतने किसी अन्य देवता के लक्षित नहीं होते। शिव का रहस्य हजारों साल पहले भी था — जब आर्यों ने "**ऋत**" का सिद्धान्त प्रतिपादित कियां और एक ऐसे सर्वव्यापक ईश्वर की कल्पना की, जो सम्पूर्ण सृष्टि का नियामक है।

"**शिव कवच**" के ऋषि ने शिव को "**सर्वमंत्रस्वरूपाय, सर्वयंत्राधिष्ठाय, सर्वतंत्र स्वरूपाय**" कह कर उनकी स्तुति की है। वेदों, पुराणों तथा अन्यान्य साहित्यिक ग्रंथों में रुद्र के जिन रूपों का परिदर्शन होता है, वे मानव-जाति के इतिहास में श्रद्धा के विकास के क्रमिक सोपान हैं। "**पुरुष सूक्त**" में "**सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपातुः**" के रूप में शिव के जिस विराट रूप की कल्पना की गई है, उससे यह सिद्ध होता है, कि वे ब्रह्माण्डव्याप्त देवता हैं, हजारों सिरों और हजारों पैरों से वे ब्रह्माण्ड में फैले हैं, और हजारों आंखों से सब कुछ देख रहे हैं।

वेदों में शिव का रूप 'विज्ञानमय' है, पुराणों में 'उपासना'

एक एव तदा रुद्रो, न द्वितीयोऽस्ति कश्चन।
संसृज्य विश्वभुवनं, गोप्तान्ते संचुकोच यः।।

"सृष्टि के आरम्भ से केवल मात्र एक ही रुद्र देव विद्यमान हैं, दूसरा कोई नहीं। वे ही इस जगत की सृष्टि करके इसकी रक्षा करते हैं और अन्त में स्वयं सबका संहार कर देते हैं।"

का रूप और साहित्यिक ग्रंथों में उन्हें 'ज्ञान के पर्याय' के रूप में स्थापित किया जाता है। वेदों में वर्णित निराकार, निर्विकार, चिन्मयं स्वरूप, शिव पुराणों में साकार उपासना का प्रतिमान हैं। संस्कृत में शिव, शंभु, ईश, पशुपति, रुद्र, शूली, महेश्वर, ईश्वर, शर्व, ईशान, शंकर, चन्द्रशेखर, महादेव, भूतेश, पिनाकी, खंड परशु, गिरीश, मृडः, मृत्युञ्जय, कृतिवास, प्रमथाधिप, धूर्जटि, कपर्दी आदि अनेक पर्यायवाची नाम हैं।

इन समस्त नामों के पीछे शिव का जो स्वरूप उभर कर लोक प्रचलित रूप में सामने आता है, वह इस प्रकार है— **"उनके सिर में जटाओं के जूट हैं, वे जटा- जूट में गंगा और माथे पर चन्द्रमा धारण किये हैं, गले में, भुजाओं में भुजंग लपेटे हैं, शरीर में सर्वांग चिता की भस्म लगाये हैं, हाथ में पिनाक, त्रिशूल और डमरू धारण किए हैं, नन्दी बैल उनकी सवारी है और महाशक्ति पार्वती जी उनकी अर्धांगिनी हैं।"**

ऋग्वेद के सूक्तों में शिव को अग्नि और वायु के समान देवता माना गया है। यजुर्वेद और अथर्ववेद तक आते-आते आर्य-मेधा ने इस देवता को ब्रह्माण्ड-नायक के रूप में स्थापित कर दिया। **ऋग्वैदिक सूक्तों** में एक स्थान पर शिव का वर्णन करते हुए कहा गया है— "वे अत्यंत शक्तिशाली हैं। स्वर्ग लोक के रक्तवर्णी वराह हैं, सर्वश्रेष्ठ वृषभ हैं, वे सदा यौवन-पूर्ण रहते हैं, वे शूरवीरों के अधिपति हैं, पर्वतों में स्थिर नदियों में जल-प्रवाह उत्पन्न करते हैं। जो उनके प्रति आस्था नहीं रखते, उनके सिर वे छिन्न-भिन्न कर देते हैं, किन्तु जो उनके उपासक हैं, उनके लिए वे उपकारी होते हैं, इसीलिए उन्हें "शिव" कहा जाता है।"

प्राकृतिक शक्तियों के प्रति ही तत्कालीन मानव की ज्ञान-वृष्टि केन्द्रित होने के कारण इस तरह की स्तुतियां वैदिक ऋचाओं में की जाती थीं। शिव को मरुतों का पिता भी निर्दिष्ट किया गया है। शिव की पत्नी पार्वती को **उपनिषदों** में "उमा हेमवती" भी सम्बोधित किया गया है, ये ज्ञान की देवी हैं, वह देवी, जो अपने साधक को "हिरण्यगर्भ" का ज्ञान प्रदान करती हैं।

यजुर्वेद की ऋचाओं में शिव को चराचर का ईश्वर, पालक, पोषक, संहारक, उत्पादक आदि निरूपित किया गया है तथा भव, शर्व, पशुपति, भूतपति आदि रूपों में उनकी उपासना की जाती थी। **अथर्ववेद** में पशुपति का तो त्रिधा अर्थ स्पष्ट किया गया है, वहां मनुष्यों को भी पशु की ही संज्ञा दी गई है— रुद्र देवता पशुपति इसी अर्थ में हैं। अथर्ववेद में शिव की स्तुति करते हुए ऋषि कहते हैं— "जिसमें समस्त भुवन निवास करते हैं, जो नाना वसुओं को धारण करते हैं, वह शिव ब्रह्माण्डव्यापी हैं, अग्नि में, जल में, औषधियों में, लताओं में उसकी संरचना कर वे निवास करते हैं।

सृष्टि, सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम में ही शिव का महत्व स्थापित हुआ है। उपनिषदों के चिन्तन में **"एकोरुद्रः न द्वितीयायतस्थुः"** कह कर ब्रह्म जैसी अद्वैत सत्ता के रूप में ऋषियों ने उन्हें मान्यता दी है। **हमारे पुराण साहित्य में शिव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक रोचक और जीवंत कथाएं हैं। इन कथाओं में इतना गहन रहस्य और तंत्र-शक्ति है, कि सामान्य बुद्धि उसे ग्रहण ही नहीं कर सकती।**

"शतपथ ब्राह्मण" में रुद्रोत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा गया है — जब प्रजापति ने सृष्टि का निर्माण प्रारम्भ किया, तो एक कुमार का जन्म हुआ, जन्म लेते ही वह अपने नामकरण के लिए रुदन करने लगा, इसलिए उसका नाम 'रुद्र' पड़ा, यह कथा स्पष्टतः अवतारवाद की ओर संकेत करती है।

हमारे पुराण-साहित्य का कोई अवलोकन करे, तो यह स्पष्ट होगा, कि शिव ही ऐसे देवता हैं, जिनके अवतार भी स्वयंभू हैं अर्थात् वे अयौनज हैं। भगवान के और सभी अवतारों में सशरीर माताओं की आवश्यकता पड़ी है। **"श्वेताश्वतरोपनिषद्"** में "महेश्वर" शब्द से जो वर्णन किया गया है, वह परब्रह्म सत्ता का पर्याय है, वह अव्यक्त रूप में निर्गुण, निराकार और अविकृत है, किन्तु सम्पूर्ण संसार उसकी विभूति भी है, इसी विभूति के साथ वह परम शिव अर्थात् महेश्वर अपनी लीला करते हैं।

उपनिषदों में वर्णित शिव या रुद्र देवता की कथा पुराणों में आकर अनेक रहस्यों का पर्याय हो गई है। **"भागवत महापुराण"** और **"विष्णु पुराण"** में वर्णित कथाओं का विश्लेषण करने पर, जो महारहस्य प्रकट होता है, वह अत्यंत चौकाने वाला है। **"निघंटु"** में शिव के जितने भी पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं, वे सभी "अग्नि" के अर्थ सूचक हैं, जैसे-— रुद्र, विद्युत, नेमि, पवि, अर्क, कुलिश आदि।

"शतपथ ब्राह्मण, भागवत और विष्णु पुराण" में रुद्र देवता की उत्पत्ति और नामकरण के बाद उन्हें प्रजापति ब्रह्मा जी ने जो अन्य नाम प्रदान किये, वे सभी किसी न किसी रूप में अग्नि के अर्थ को ही ध्वनित करते हैं। प्रजापति ब्रह्मा ने "रुद्र" को पशुपति, उग्र, अशनि, भव, महादेव, और ईशान नाम दिये, ये सभी शब्द अग्निवाची हैं, इनके पीछे रुद्र देव "कुमार" रूप में सदैव प्रच्छन्न रहते हैं। इसका गूढ़ार्थ यही है, कि इस ब्रह्माण्ड में जहां कहीं भी अग्नि का अस्तित्व है, रुद्र देव कुमार वहां उपस्थित हैं।

आज विज्ञान यह स्वीकार करता है, कि **अग्नि-तत्व का अस्तित्व इस पृथ्वी से सूर्य लोक तक है। अग्नि-तत्व का अस्तित्व एक स्थायी शक्ति की ऊर्जा का पर्याय है।** सम्पूर्ण शून्य में यह अग्नि-तत्व किस तरह विधमान है, इसका उदाहरण हम अपने दैनिक जीवन के सामान्य से उदाहरण से सिद्ध कर सकते हैं। दो पाषाण खण्डों के सामान्य घर्षण से ही इस अग्नि-तत्व की चमक साफ दिखलाई देती है। सघन जंगलों में वृक्षों के संघर्षण से ही

स्वतः आग लग जाती है, जिसे 'दावाग्नि' के रूप में सभी वैज्ञानिक जानते हैं। **ऋग्वेद** का ऋषि कहता है— "हे अग्ने! तू सूर्य से, मेघ से, प्रस्तर से, वन से और औषधियों से उत्पन्न होती है।"

शिव-तत्व या रुद्र देव के रूप में यह अग्नि विद्या हमारे आर्य ऋषियों की बुद्धि का चमत्कार ही कहा जा सकता है। हमारे देश में "शिवलिंग" की ज़ो कल्पना की गई है, वह भी उठती हुई लपट की तरह ही की गई है, यह एक प्रतिकोपासना है, इसका प्राचीनतम ज्ञान आर्यों और द्रविड़ों को था। **ईरान और फ्रांस में भी अग्नि-पूजा के अस्तित्व प्रमाणित होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है, कि प्राचीन काल में उन देशों के निवासी भी आर्यों की तरह बुद्धिमान ही नहीं थे, रहस्य विद्याओं के ज्ञाता भी थे।**

शिव के जिन नामों की चर्चा की गई है, भौतिक अर्थ में उनके प्रतीक इस प्रकार हैं: —

१.	रुद्र	—	अग्नि
२.	शर्व	—	जल
३.	पशुपति	—	औषधि
४.	उग्र	—	वायु
५.	अशनि	—	विद्युत
६.	भव	—	पर्जन्य
७.	महादेव	—	चन्द्रमा
८.	ईशान	—	आदित्य

इस धरती पर रुद्र के एकादश पार्थिव रूपों की पूजा की जाती है। उपनिषदों के ऋषियों ने एकादश रुद्र पूजा का जो रहस्य व्यक्त किया है, वह प्राणी-जगत में व्याप्त आत्मा या जीव के रहस्य से सम्बन्धित है। १० इंद्रियों और एकादश मन को स्थापित कर उपनिषदिक ऋषियों ने एकादश रुद्र का जो रूपक स्थापित किया है, वह बड़ा ही मनोहारी है। एकादश रुद्र देव जब शरीर को छोड़कर निकलते हैं, तो परिवार वाले रुदन करते हैं। एकादश रुद्र का यह जीवनगत रहस्य है।

शिव के संहारक और उत्पादक रूपों के रहस्य को भी हमारे वैदिक ऋषियों ने सुंदर रूपकों में स्पष्ट किया है। अग्नि इस संसार में सब-कुछ जला कर राख कर देती है, यह तो प्रत्यक्ष दिखलाई देता है। इस सत्य को जब हम स्वीकार कर लेते हैं, तो यह भी स्वीकार करना पड़ता है, कि मेघों में जो बिजली होती है, वही वर्षा कराती है, और इससे ही जीवन के अंकुर फूटते हैं। अग्नि के ये दोनों ही रूप शाश्वत हैं, वह संहारक भी है रुद्र के रूप में, और उत्पादक भी है शिव के रूप में।

शिव-रहस्य की व्यांख्या करने के लिए हमें अपने पुराणों का ही आश्रय ग्रहण करना पड़ता है। पुराणों में शिव देवता के जिन रूपों का वर्णन प्राप्त होता है, वे अत्यन्त रहस्यमय हैं— आध्यात्मिक दृष्टि से भी और वैज्ञानिक दृष्टि से भी, उन्हें **"कैलाशवासी"** कहा जाता है। मेघ पर्वतों में निवास करते हैं, कैलाशवासी होने का यही भौतिक अर्थ है। पुराणों में रुद्र का वाहन **"वृषभ"** को निरूपित किया जाता है। वृषभ जल-वृष्टि करने वालों को कहते हैं। रुद्र देव ऐसे वृषभ की सवारी करते हैं।

जब कोई देवता चलते हैं, तो उनके साथ उनकी **"ध्वजा"** भी चलती है, आजकल मठों में इसे "निशान" कहते हैं। रुद्र देव का **"वृषभ ध्वज"** है, जो बिजली का भौमिक अर्थ ध्वनित करता है। पुराणों में शिव को **"गंगाधर"** कहा गया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा सगर के साठ हजार पुत्र कपिल ऋषि के श्राप से भस्म हो गए थे, उनके मोक्ष के लिए उन्हीं के वंश में उत्पन्न राजा भगीरथ ने तपस्या कर गंगा को इस धरती पर अवतरित किया, जिसे शिवशंकर ने अपनी जटाओं में धारण किया। **"गंगाधर"** का वैदिक अर्थ 'अंतरिक्ष' है, जहां मेघ, विद्युत आदि का निवास होता है, तथा इस सम्पूर्ण अंतरिक्ष में अग्नि की व्याप्ति होती है।

पौराणिक कथाओं में देवताओं के रूपों के रहस्य इतने गंभीर हैं, कि सत्य का अन्वेषण करने पर, वे आज के विज्ञान के लिए चुनौती बन जाते हैं। जिन कपिल ऋषि के कोप से राजा सगर के साठ हजार पुत्र जलकर भस्म हुए थे, उसका अर्थ भी वास्तव में 'अग्नि' ही होता है।

शिव को **"भुजंगभूषण"** कहा जाता है। भुजंग का अर्थ, मेघ या अहि ग्रहण कर जब हम कल्पना करते हैं, तो बड़ा ही सुंदर चित्र प्रस्तुत होता है। सम्पूर्ण अंतरिक्ष की जहां तक परिव्याप्ति है, उसका श्रृंगार भुजंग है, यही मेघ हैं, ज़ो नवल सृजन भी करते हैं। रुद्र के **"पिनाकी"** होने का भी रहस्यमय वैज्ञानिक अर्थ है। रुद्र देव का अस्त्र "पिनाक" अग्नि का सूक्ष्म शक्ति रूप होता है। वेदों के अनुसार उनके त्रिनेत्र, पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक के पर्याय हैं, ये अग्नि की सर्वव्यापकता का प्रतीक हैं।

शिव के **पंचमुख** का रहस्यार्थ सृष्टि से सम्बन्धित है। द्युलोक, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और स्त्री इन पांचों में जो विशेष अग्नि होती है, वह प्रजा-सृष्टि करती है।

वेदों में रुद्र देव के **"चन्द्रशेखर"** होने का भी बड़ा रहस्य है। वेदों में स्तुति करते हुए कहा गया है, कि रुद्र देव **"पर्जन्य"** देव हैं, जो जल-वृष्टि कर पशुओं के लिए वनस्पति पैदा करते हैं। इस महान यश कार्य के लिए वे चन्द्रशेखर कहे जाते हैं, वे चन्द्रमा को धारण करते हैं। चन्द्रमा, जो कोमलता का पर्याय है, जिसे समस्त औषधियों में श्रेष्ठ कहा जाता है। शिव के जिन पांच मुखों की कल्पना की गई है, वे पंचब्रह्म के भी पर्याय हैं। अग्नि, वायु और आदित्य, जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी कहा गया है, पंचब्रह्म के त्रिदेव स्वरूप हैं, जो अपनी उपासना से सब कुछ सिद्ध करा देने में समर्थ होते हैं।

योगिनी
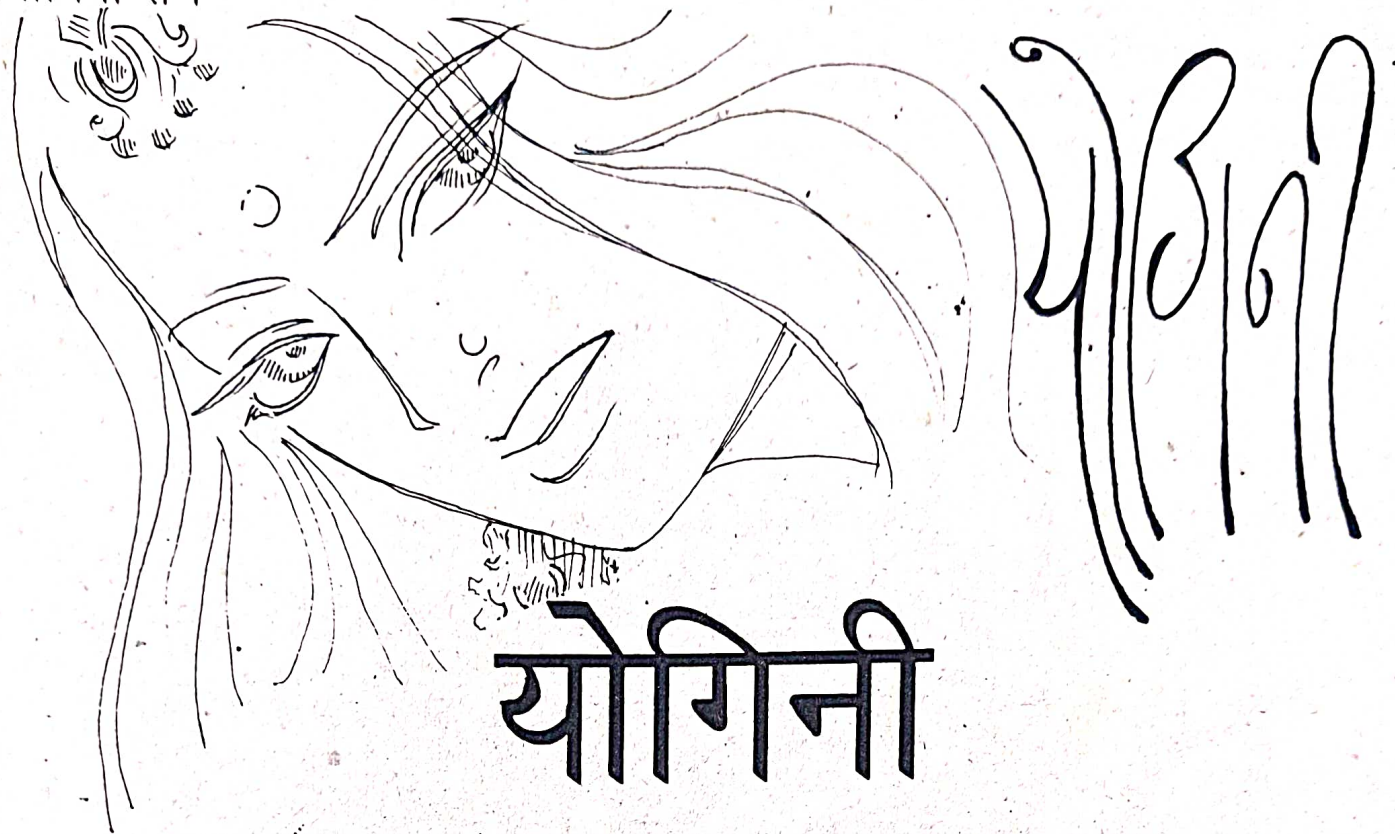
प्रेमिका रूप में ही सिद्ध होती है।

भारतीय साधनात्मक साहित्य का एक विशद खंड केवल योगिनी साधना के प्रति ही समर्पित है।

. . . योगिनी के अद्भुत तेज को साधक के जीवन में उतारने हेतु।

अनेक कठिन और जटिल पद्धतियों के स्थान पर प्रस्तुत है एक नवीन चिन्तन, प्रामाणिकता एवं सम्पूर्णता के साथ. . .

जीवन में किसी विशिष्टता की कामना हो और योगिनी साधना का बल न लिया जाए, इससे बड़ा विरोधाभास हो ही नहीं सकता, क्योंकि योगिनी का तात्पर्य ही होता है, ऐसी विशिष्टता, जो न केवल साधना के क्षेत्र में वरन् साधक के सम्पूर्ण जीवन में गति पैदा कर दे। जीवन में कोई भी साधना की जाए उसका चतुर्दिक प्रभाव होता ही है।

कोई भी साधना एकांगी होती ही नहीं, यह हो सकता है, कि साधक किसी एक बिन्दु विशेष पर ध्यान केन्द्रित रखकर साधना सम्पन्न करने के कारण केवल उतने ही अर्थों में सीमित मान लें, किन्तु जागरूक होकर देखने पर प्रत्येक साधना के विविध पक्ष समझ में आते ही हैं, उदाहरण के लिए 'अप्सरा साधना' को लिया जा सकता है, जिसमें प्रायः साधक की दृष्टि में सफलता केवल एक ही बिन्दु पर टिकी होती है, और वह यह, कि

क्या अप्सरा प्रत्यक्ष हुई अथवा नहीं, फिर इसी मापदंड पर निर्धारित कर लिया जाता है, कि साधना प्रामाणिक है अथवा नहीं? जबकि अप्सरा साधना के तो विविध पक्ष हैं।

जब एक साधक अप्सरा साधना सम्पन्न करता है, तो उसे यौवन, दैहिक सौन्दर्य, पौरुष, सौन्दर्य-बोध, जैसे अनेक गुण स्वतः प्राप्त होते ही जाते हैं, और कालांतर में साधना की विशिष्ट दशा आ जाने पर साधक को अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण भी सम्भव होता ही है।

इसी प्रकार **"योगिनी साधना"** भी जीवन की एक ऐसी साधना है, जिसमें साधक को विविध लाभ प्राप्त होते हैं, जिस प्रकार से अप्सरा, यक्षिणी, वश्यंकरी इत्यादि वर्ग होते हैं, उसी प्रकार योगिनी भी ऐसी ही एक वर्ग की विशिष्ट सौन्दर्यमयी स्त्री ही है, जिसका सौन्दर्य सर्वथा भिन्न होने के साथ ही साथ साधना की प्रखरता से भी भरा होता हैं, और जहां अप्सरा साधनाएं करने से व्यक्ति को "खेचरी शाक्ति" आदि प्राप्त होती हैं, वहीं योगिनी को प्रेमिका के रूप में सिद्ध करने से उसे तांत्रिक क्रियाओं (मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन आदि) में सहायता मिलती है, क्योंकि **योगिनी का सम्पूर्ण स्वरूप ही इस प्रकार का होता है, जो प्रेम व शक्ति का समन्वित स्वरूप कहा जाता है।**

अप्सरा साधनाओं की अपेक्षा योगिनी साधना जीवन में अत्यधिक तीव्रता से सिद्ध होने वाली तथा अनुकूल फल प्रदान करने वाली होती है। कई बार तो ऐसा होता है, कि साधना की पूर्णता के पूर्व ही योगिनी अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य व प्रेम के साथ उपस्थित होकर एक प्रकार से साधक को अपने स्नेहपाश में बद्ध कर लेती है।

यदि यह कहा जाए, कि तंत्र के क्षेत्र में योगिनी साधना का आश्रय लिए बिना पूर्णता प्राप्त की ही नहीं जा सकती, तो यह कोई अनुचित बात नहीं होगी। योगिनी साधना पूर्णता से केवल, और

सत्य तो यह है कि योगिनी साधना केवल, और केवल प्रेमिका के रूप में ही सिद्ध की जा सकती है. . .

साधना का पूर्ण प्रभाव अपने रग-रग में उतार लेने के लिए एक हलचल को जीवन में घटित कर देने के लिए।

खेचरी विद्या की प्राप्ति का रहस्य. . .

केवल प्रेमिका के रूप में ही सिद्ध की जा सकती है। प्रेमिका का तात्पर्य यहां प्रचलित अर्थों से नहीं, अपितु इस रूप में है, कि **साधक को एक ऐसी अभिन्न सहयोगिनी प्राप्त हो जाती है, जिसके माध्यम से वह तंत्र की विशिष्ट क्रियाएं सम्पन्न कर सकता है।** इसी से योग्य और साधना के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के इच्छुक साधक स्पष्टता और दृढ़ता से योगिनी साधना सम्पन्न कर अपने-आप को जहां एक ओर रसमयता से परिपूर्ण करते हैं, वहीं मार्गदर्शिका के रूप में योगिनी की सहायता भी प्राप्त करते ही हैं।

योगिनी की रूप-राशि किसी भी वर्ग की स्त्री से सर्वथा अलग हट कर इस रूप में मनोहर होती है, कि उनमें एक प्रकार की चुम्बकीयता और मादक गंध समायी होती है, जिसके आकर्षण से साधक मुक्त हो ही नहीं पाता। इसका कारण होता है, योगिनी वर्ग द्वारा पारद विज्ञान के क्षेत्र में पूर्ण सिद्धहस्त होना। **पारद भक्षण व पारद-कल्प के द्वारा वे इसी प्रकार से सदैव चिरयौवनवती बनी रहती हैं।**

केवल शारीरिक सौन्दर्य और अत्यन्त आकर्षक भावभंगिमाएं ही नहीं, योगिनी अपने-आप में पूर्णरूप से साधिका के गुणों से भी सुसज्जित होती है, जिससे उसके अन्दर एक अतिरिक्त अपनत्व, मृदुता, शीतलता और साधक से शीघ्र ही घुल-मिल जाने का गुण प्रचुर मात्रा में होता है। इस साधना के द्वारा वास्तव में साधक को ऐसा साहचर्य और मधुरता मिलती है, जिससे वह साधनाओं में तीव्रता से गतिशील हो सकता है।

तंत्र की कुछ अत्यन्त उच्चकोटि की साधनाएं तो योगिनी के साहचर्य के बिना पूर्ण होती ही नहीं। **तिब्बत के लामा जिस कारणवश प्रख्यात तांत्रिक एवं सिद्ध साधक हुए, उसके मूल में यही योगिनी साधना ही है,** क्योंकि तिब्बत में लामा सम्प्रदाय के अन्तर्गत् 'तंत्र दीक्षा' केवल मात्र योगिनियों को ही प्राप्त होती थी तथा उनके साहचर्य में रहकर ही कोई साधक तंत्र की साधनाएं सम्पन्न कर सकता था।

यह एक मिथ्या धारणा है, कि योगिनियां क्रूर, वीभत्स एवं अत्यन्त तीव्र होती हैं। वस्तुस्थिति यह है, कि योगिनी एक अपूर्व व ऐसे निर्मल सौन्दर्य की स्वामिनी होती है, जिसकी तुलना किसी भी वर्ग से की ही नहीं जा सकती, क्योंकि योगिनी अपने दैहिक सौन्दर्य के साथ-साथ आंतरिक रूप से भी इस प्रकार के गुण सम्पन्न एवं बुद्धिमता से परिपूर्ण होती है, जिससे उसे एक अनोखी आभा प्राप्त हो जाती है, तथा जो भी उसके साहचर्य में आता है, वह भी

एक अनोखे लावण्य से भर जाता है।

अत्यन्त गौर, वर्ण, दिपू-दिपू करता मुखमंडल, चुम्बकीय नेत्रों में लहराती करुणा, कोमलता और प्रेम की त्रिवेणी, सारे शरीर पर जैसे यौवन ही यौवन अठखेलियां कर रहा हो, और दूर से ही आती अत्यन्त विशिष्ट गंध! सदैव बीस-बाईस की लगती आयु और मोहक सुडौलता से भरा कुछ लम्बाई लिए हुए पुष्ट शरीर, जो वास्तव में तेज का संग्रह ही होता है, और जब साधक को सिद्धि के उपरान्त योगिनी प्रत्यक्ष होती है, आम स्त्री की भांति व्यवहार व वार्तालाप करती है, तो साधक एक क्षण के लिए अपने सौभाग्य पर विश्वास नहीं कर पाता, कि उसे अचानक कहां से रूप, लावण्य व मधुरता का ऐसा स्पर्श मिल रहा है, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की होती थी।

योगिनी साधना को प्रचलित रूप से अलग हटकर समझने से साधक अपने जीवन में बहुत कुछ घटित कर सकता है, और तब वह जीवन के दोनों पक्ष अर्थात् भोग व मोक्ष एक साथ प्राप्त कर पाने का अधिकारी बन जाता है, क्योंकि तभी उसके अन्दर उस तंत्रमयता का उद्भव होता है, जो जीवन के दोनों पक्षों को लेकर चलने की स्पष्ट धारणा रखती है।

यद्यपि आज मोहन, वशीकरण आदि तांत्रिक क्रियाओं को हेय दृष्टि से देखा जाने लग गया है, लेकिन अपने मूल स्वरूप में ये क्रियाएं दूषित अथवा व्यभिचार युक्त कदापि नहीं हैं, जिसका प्रमाण **दुर्गा सप्तशती** जैसे प्रतिष्ठित ग्रंथ में मिलता है, और तंत्र के क्षेत्र में जाने के इच्छुक साधक को इन क्रियाओं में निष्णात होना ही होता है।

प्राचीनकाल में चौंसठ तंत्रों के अन्तर्गत इसी कारणवश एक विशिष्ट तंत्र **वीणाख्य योगिनी तंत्र** रचा गया था। नव तंत्रों के अन्तर्गत भी वर्तमान में **योगिनी तंत्र** एवं **योगिनी हृदय** नामक दो ग्रन्थ प्रचलित हैं, किन्तु योगिनी साधना की मूल भावना तो **वीणाख्य योगिनी तंत्र** में ही समाहित है। जिन अर्थों में योगिनी का वर्णन प्रस्तुत लेख में किया गया है, उसे तथा खेचरी शक्ति प्राप्त करने के लिए उच्चकोटि के साधक इसी पद्धति का अवलम्बन लेते रहे हैं।

इस साधना को किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न किया जा सकता है। योगिनी का अपने स्वरूप में कोमल और शीघ्र फलप्रद होने के कारण योगिनी साधना में अधिक विधि-विधान की आवश्यकता नहीं रहती, केवल **"योगिनी यंत्र" (मंत्र-सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठा युक्त)** तथा **"योगिनी माला"** दो सामग्रियां ही इस साधना में पर्याप्त उपयोगी हैं। साधक रात्रि में पश्चिम की ओर मुख करके श्वेत आसन पर बैठ जाए और अपने सामने भी श्वेत वस्त्र बिछा ले। साधक स्वयं पैंट, कमीज छोड़ करके किसी भी प्रकार के धुले वस्त्र धारण कर सकता है। इस अवसर पर वह स्पष्ट रूप से अपनी मनोभावना व्यक्त करे, कि **"मैं योगिनी को प्रेमिका के रूप में सिद्ध करते हुए तंत्र के क्षेत्र में तीव्रता से आगे बढ़ने का इच्छुक हूं।"** तदुपरान्त "योगिनी यंत्र" का सामान्य पूजन पुष्प की पंखुड़ियों, अक्षत आदि से कर "योगिनी माला" से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करे —

मंत्र

ॐ ह्रीं योगिन्यै फट्

इस साधना में अन्य विधि-विधान दीपक आदि की आवश्यकता नहीं है और जब तक पूर्ण सफलता न मिल जाए, तब तक प्रति शुक्रवार साधना करता रहें। पांच शुक्रवारों की साधना पूर्ण सफलतादायक और स्थाई मानी गई है। पांच शुक्रवार के बाद माला व यंत्र को नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें।

इस साधना की सफलता के रूप में प्राथमिक रूप से तीव्र सुगन्ध, प्रातः साधना स्थल पर पुष्प प्राप्ति आदि संकेत मिलते हैं, और धैर्य पूर्वक नियमित रूप से साधना करने पर साधक पूर्ण सफलता प्राप्त कर ही लेता है। यदि **"योगिनी दीक्षा"** ग्रहण कर इस साधना को सम्पन्न किया जाए, तो साधक को भविष्य में 'खेचरी विद्या' की प्राप्ति भी होती है।

योगिनी साधना करना अपने-आप में सौभाग्य है। जिस साधक को योगिनी की सिद्धि प्राप्त हो जाती है, उसके लिए भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान तो अत्यन्त मामूली सी बात होती है, क्योंकि ऐसे सिद्ध साधक को योगिनी स्वयं अदृश्य रहते हुए भी दूसरे व्यक्ति से सम्बन्धित विवरण और गोपनीय रहस्य स्पष्ट बता जाती है।

अत्यन्त गौर वर्ण, दिपू-दिपू करता मुखमण्डल, चुम्बकीय नेत्रों में लहराती करुणा, प्रेम और कोमलता की त्रिवेणी और सारे शरीर पर जैसे यौवन का समुद्र अठखेलियां कर रहा हो।

इसके उपरान्त भी सहज और घुल - मिल जाने को तत्पर . . .

अणु और परमाणु में क्या भेद है? यह आज के वैज्ञानिक युग में एक साधारण सा प्रश्न है, और इसका उत्तर भी सामान्य सा ही है, जो कि लगभग प्रत्येक व्यक्ति जानता होगा। फिर आत्मा और परमात्मा में क्या भेद है? इस सीधे से प्रश्न का उत्तर क्यों हर कोई नहीं जानता, क्यों यह एक रहस्यपूर्ण विषय है?

वास्तविकता तो यह है, कि जीवन को आरामदायक बनाने व कष्टों और दुःखों से मुक्त रखने के लिये दिन-रात हम जो कृत्रिम साधनों को एकत्र करने में जुटे हैं, वह एक मृगतृष्णा, एक मिथ्या है, यह कृत्रिम साधन कभी भी किसी के जीवन को सुखमय नहीं बना पाये हैं, और न ही बना पायेंगे।

अभी कुछ वर्ष पहले मैं बस द्वारा काठमांडू से दिल्ली जा रहा था। **बस में मेरे साथ की सीट पर एक अंमरीकी सहयात्री थे, जो कि एक साधारण सा चोगा पहिने थे और ''पंचमुखी रुद्राक्ष'' की माला धारण किये हुए थे।** अध्यात्म में गहन रुचि और विश्वास होने के कारण मैं उनके इस परिवेश के सम्बन्ध में वार्ता करने से स्वयं

अतीन्द्रीय शक्ति का जागरण

त्राटक द्वारा
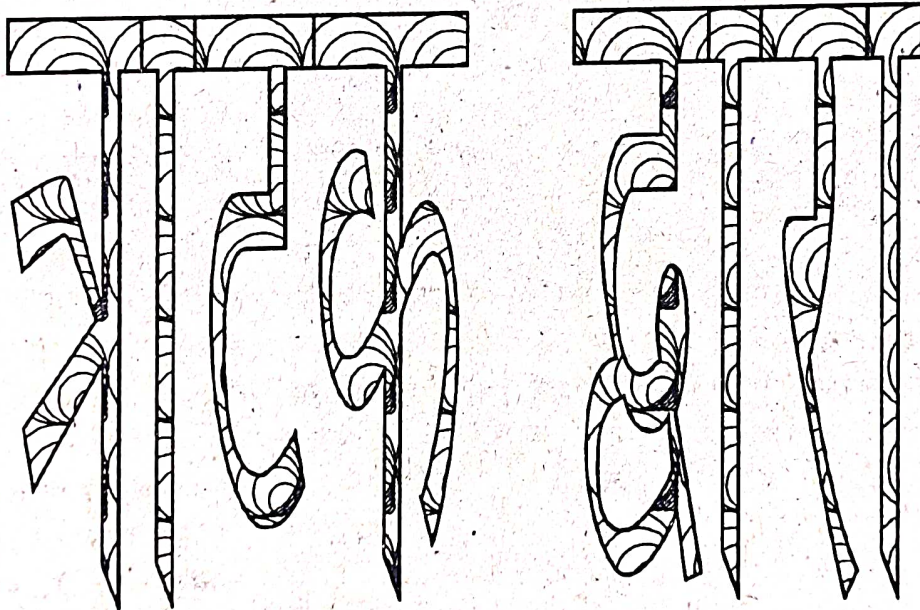
● विकास कुमार शर्मा

"गर्भ में जब शिशु का आगमन होता है, तभी से उसके अन्दर ब्रह्माण्ड की समस्त अतीन्द्रीय शक्तियां सुप्तावस्था में रहती हैं। परिवेश व संस्कार तथा योग्य गुरु के मार्ग दर्शन में इनका जागरण किया जा सकता है। इसी क्रम का एक माध्यम है – ''त्राटक''"

को न रोक सका, और अपना परिचय देने के पश्चात् मैंने उनसे पूछा— "क्या आपको जीवनयापन के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे, जो आपने यह साधुवेष धारण कर लिया?"

उन्होंने उत्तर दिया— "मित्र जो आप कह रहे हैं, उसका ठीक विपरीत मेरे साथ है। मैं एक धनी उद्योगपति का पुत्र हूं, मेरे पिता के पास इतना धन, इतने ऐशोआराम हैं, जितने संसार में बहुत ही कम व्यक्तियों को उपलब्ध हो पाते हैं। मैं इन सब सुविधा-साधनों से बुरी तरह ऊब गया था, और हर समय मेरा मन इस कृत्रिमता के वशीभूत अशान्त रहता था, किन्तु अब मैं शांति का रहस्य पा चुका हूं। वास्तव में जिस रूप में हमारा जन्म होता है, वही वास्तविकता है, और उस समय कितने कीमती वस्त्र हमने पहिने हुए होते हैं, कितनी सुख-सुविधाएं हम साथ लेकर आते हैं, यह हर कोई जानता है।"

क्या कभी आपने संध्या के समय आकाश में उड़कर जाते पक्षियों के झुंड देखे हैं? उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे उन्हें अपने दिन भर के प्रवास के पश्चात् अपने घर की स्मृति हो आयी है, तो क्यों हमें अपनी मंजिल की याद नहीं आती? क्या इस संसार के मायाजाल में फंसकर हम अपनी वास्तविक मंजिल को भी भूल चुके हैं? जो चौरासी लाख योनियां हैं, उनमें से सर्वश्रेष्ठ 'मानव योनि' है, क्योंकि इस ब्रह्माण्ड में केवल मानव ही ऐसा जीव है, जो कि परलोक को सुधारने और अपनी आत्मा के परिष्कार हेतु प्रयास कर सकता है।

मैं आपसे सत्य कहता हूं, कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति चांहे अच्छा हो या बुरा, साधु हो या डकैत, कामी हो या पापी, किसी भी जाति का हो या किसी भी धर्म को मानने वाला, स्वयं में एक असीमित शक्ति का भंडार लिये होता है, ठीक वैसे ही जैसे मृग अपनी नाभि में कस्तूरी लिये होता है, लेकिन वह स्वयं इस बात को जानता नहीं है। इस महाशक्ति के जागरण के लिये आवश्यकता है, तो मात्र प्रयास की।

मेरे कहने का तात्पर्य लंगोटी बांधकर साधु हो जाने या फिर सन्यास ले लेने जैसे प्रयास से नहीं है। कर्तव्यों से दूर भागना तो किसी धर्मशास्त्र में नहीं लिखा है, और न ही आप अपने जाति धर्म को छोड़ें। **आप चाहे किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के अनुयायी हों, कभी अपनी दिनचर्या न छोड़ें, बल्कि इसमें थोड़ा सा सुधार करें और प्रतिदिन कुछ समय साधना के लिये अवश्य निकालें। मैं ध्यान, साधना की जिस मुख्य शाखा को स्पष्ट करने जा रहा हूं, उसका नाम है-- "त्राटक साधना"।**

वास्तव में "त्राटक साधना" ही वह महान साधना है, जिसके द्वारा अतीन्द्रीय शक्तियों का जागरण सुगमता से किया जा सकता है। त्राटक सिद्ध व्यक्ति कल्याण भी प्राप्त करता है और मोक्ष भी, यह एक निर्विवाद सत्य है। उसके लिये कुछ भी अप्राप्य नहीं होता।

त्राटक साधना के लिये लगन और धैर्य की आवश्यकता है। यहां मैं यह भली-भांति स्पष्ट करना चाहूंगा, कि यह कोई थोड़े- बहुत दिन की साधना नहीं है। आप यह कदापि न समझें, कि कुछ दिनों तक साधना करने से ही आप चमत्कारिक सिद्ध व्यक्ति हो जायेंगे। आप को सफलता कितनी जल्दी मिलती है, यह आपके ध्यान, आपकी एकाग्रता व नियमित प्रयास पर निर्भर करता है।

किसी भी बिन्दु पर पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर, मन को विचार शून्य बनाकर अपलक देखने की क्रिया ही **"त्राटक"** कहलाती है। "त्राटक साधना" में पलकें खुली रखकर किसी वस्तु, चित्र, बिन्दु, नक्षत्र पर या आंखें बंदकर मन में उसकी कल्पना पर एकाग्रता पूर्वक विचारों को केन्द्रित किया जाता है। त्राटक को तीन श्रेणियों में बांटा गया है— बाह्य त्राटक, माध्यम त्राटक व आंतर त्राटक। साधक को इन तीनों प्रकारों का अभ्यास करना चाहिए।

"बाह्य त्राटक" में काफी दूरी पर स्थित वस्तुओं जैसे चन्द्रमा, वृक्ष, अविरल बहता झरना, पर्वत के शिखर या किसी भवन के शिखर इत्यादि को किसी एकांत स्थान पर बैठकर ध्यान का केंद्र बनाया जाता है। मात्र अपलक देखना ही नहीं, वरन् आंखें, मन, विचार सब कुछ केन्द्रित करना होता है। ध्यान रहे, कभी भी आंखों में चुभने वाले तीव्र प्रकाश— जैसे कि वेल्डिंग से निकलने वाला प्रकाश, चढ़ते सूर्य की किरणें या सर्चलाइट के प्रकाश की ओर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास कभी न करें। इससे नुकसान के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं होगा।

"माध्यम त्राटक" में अपने से लगभग छत्तीस इंच की दूरी पर रखी वस्तु, जैसे— किसी देवी-देवता का विग्रह, श्री यंत्र, क्रिस्टल बॉल, शिवलिंग, मोती, पत्थर या कागज पर बनायी गयी शून्याकृति पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अनुभवी व्यक्तियों के अनुसार इनमें 'दीपक त्राटक' और 'बिन्दु त्राटक' अधिक उपयुक्त हैं।

"आंतर त्राटक" मुक्ति प्रदान करने वाला है। आंतर त्राटक करते समय पलकें बंद करके बाह्य या माध्यम त्राटक में कहे गये किसी भी साधन का ध्यान किया जाता है। इस त्राटक में **ध्यान लगाना कठिन है, क्योंकि हम पूर्णतः मन में ही कल्पना करते हैं और मन अत्यंत चंचल है, परन्तु यही त्राटक सर्वोच्च श्रेणी का माना जाता है।**

साधना के लिये सर्वोत्तम समय ब्रह्म बेला (प्रातःकाल) है। साधक को चाहिए कि प्रातः जल्दी उठकर, स्नानादि से निवृत्त होकर, साधना कक्ष में आसन बिछाकर, सुखासन या सिद्धासन लगाकर बैठ जाए। आसन पर्याप्त मोटाई का होना चाहिए, जिससे आपको कष्ट न हो और शरीर का पृथ्वी से सीधा सम्पर्क न हो।

अपने सामने तीस से छत्तीस

इंच की दूरी पर खुली आंखों से माध्यम पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करें। **ध्यान केन्द्रित करने से तात्पर्य, मात्र पलकें झपके बिना देखना ही नहीं, वरन् दिल-दिमाग, भावनायें सब कुछ नियंत्रित करना भी है।** इस मुद्रा में जितने समय तक आराम से रह सकते हैं, तब तक रहें, लेकिन आंखों में पानी आने या खिंचाव प्रतीत होने पर कुछ देर के लिए आंखें बंद कर लें, और आंखों को कुछ समय के लिये आराम देकर पुनः अभ्यास आरम्भ कर सकते हैं। शुरू-शुरू में एक दो मिनट भी बिना पलकें झपके बैठना कठिन प्रतीत होगा, किन्तु निरन्तर अभ्यास से यह समय अपने-आप विस्तृत होता जायेगा।

धीरे-धीरे समय बढ़ाते हुए साधना काल बीस मिनट तक बढ़ायें, यदि पूर्ण नियमों के पालन के साथ, बीस मिनट तक पलकों को स्थिर रखने में आप सक्षम हो गये, तो ऐसी साधना से बारह से पन्द्रह माह में **''त्राटक साधना''** में सिद्धि मिल जायेगी।

इसके पश्चात् साधारण व्यक्ति जिसे चमत्कार कहते हैं, उस श्रेणी के कार्य सुगम हो जाते हैं, परन्तु ध्यान रहे, कि साधना से अर्जित शक्ति का प्रयोग किसी के हित के लिये ही करें, अपनी शक्ति से अहित करने का विचार कदापि मन में न लायें, क्योंकि आप समर्थ तो अहित करने में भी होंगे, किंतु इससे अत्यन्त कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त शक्ति का विनाश व दुरुपयोग मात्र ही होगा।

साधना काल में अनेकों प्रकार की दिव्यानुभूतियां भी होती हैं, कभी-कभी नेत्र खुले होने पर भी माध्यम आपके सामने से चलायमान होकर कुछ समय के लिये गायब हो सकता है, तो कभी-कभी माध्यम का स्वरूप बदलता हुआ भी दिखाई देता है, इस प्रकार के अनुभवों से आप स्वयं को साधना के मार्ग पर ठीक प्रकार चलने का प्रतीक मानें, और सफलता प्राप्त हो रही है ऐसा जानें।

धीरे-धीरे माध्यम से दिव्य प्रकाश-पुञ्ज निकलते और अनेकों प्रकार के दृश्य भी दिखाई देंगे। आगे चलकर इन्हीं दृश्यों में आप सम्पूर्ण विश्व की किसी भी प्रकार की गतिविधि का पूर्वाभास प्राप्त कर सकते हैं।

आपका इच्छित व्यक्ति इस समय कहां है, क्या कर रहा है, यह जान सकते हैं, या अपने साधना कक्ष में बैठे-बैठे किसी भी व्यक्ति को, जैसा आप चाहें, वैसा करने का निर्देश दे सकते हैं, यहां तक कि, जिस व्यक्ति की आंखों में आंखें डालकर देख लेंगे, वह आपके अनुकूल व्यवहार करने को बाध्य हो जायेगा, परन्तु यहां एक बात का ध्यान रखें, कि थोड़ी सी सफलता मिलने पर उसका प्रदर्शन न करें, और न ही सिद्धि मिल गई यह समझें।

''माध्यम त्राटक'' में पूर्ण सफलता प्राप्त होने के पश्चात ''आंतर त्राटक'' की ओर जायें। आंतर त्राटक के अभ्यास में आंखें मूंदकर अपने माध्यम पर ध्यान केन्द्रित करें और साधना काल का विस्तार करते जायें।

आंतर त्राटक सिद्ध होने पर आप समस्त सांसारिक बंधनों, माया-मोह से मुक्त होकर हर समय केवल साधना में ही मग्न रहना चाहेंगे व परमानन्द अवस्था को प्राप्त करेंगे, और तब होगा आत्मा का परमात्मा से मिलन।

दीक्षा मूलं गुरु कृपा

एक पूर्ण घड़े के निर्माण में कुम्हार को बहुत ही मेहनत करनी पड़ती है. . . ठीक उसी प्रकार प्रत्येक शिष्य को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण करने के लिए गुरु को न जाने कितना प्रयास करना पड़ता है, उसे शिष्य आंक ही नहीं सकता. : .

वह दिन बड़ा ही उल्लासमय था, जब मेरा जन्मदिन था और मैं गुरुधाम में गुरुदेव के आशीर्वाद प्राप्ति हेतु पहुंची थी। गुरुदेव के सान्निध्य में होने से मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा था, लेकिन शायद प्रकृति को कुछ और भी मंजूर था, तभी एकाएक मुझे मेरे परीक्षा-परिणाम के बारे में पता चला। अखबार में जैसे ही मैंने बी० एस० सी० फाईनल की योग्यता सूची में अपना नाम देखा, उसे देखते ही खुशी के मारे मेरी आंखों से अविरल आंसू बह निकले। ये आंसू खुशी के तो थे, लेकिन इससे भी ज्यादा मेरे गुरुदेव की असीम कृपा, जो मुझ पर हुई थी, से धन्य-धन्य होकर निकले थे।

पूरे मेरठ विश्वविद्यालय में स्थान पाना केवल, और केवल मात्र पूज्य गुरुदेव की अनुकम्पा एवं उनके द्वारा दी हुई दिव्य दीक्षाओं का ही परिणाम है। मैं जीवन भर उस स्वर्णिम दिन को भूल नहीं सकती, जिस दिन परमपूज्य गुरुदेव ने अत्यन्त विराटता से मुझे **''सरस्वती दीक्षा''** दी थी, और आशीर्वाद देते हुए कहा था, कि **''आज से तुम अध्ययन के क्षेत्र में हमेशा आगे ही रहोगी।''** मैं उस क्षण गुरुदेव के कथन का पूर्णतः भाव न समझ सकी थी, परन्तु उस दिन परीक्षा-परिणाम देखते ही मुझे उस अति सुन्दर वाणी का वरबस ही ध्यान हो आया था, वास्तव में गुरुदेव की महिमा अपरम्परा है।

मेरे भाग्य में अभी शायद और

भी स्वर्णिम क्षण थे, कि एकाएक गुरुदेव ने मुझे बुलाकर कहा, कि **''नेहा! आज मैं तुम्हें अति दिव्य ''वाग्देवी दीक्षा'' दूंगा, जिसका परिणाम तुम आने वाले समय में देख सकोगी।''**

''वाग्देवी दीक्षा'' प्राप्त होने के कुछ समय बाद से मुझे एहसास होने लगा, कि मैं जो कुछ भी अपने मुख से बोलती हूं, वह बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सामने वाले के हृदय में उतर जाता है, पर गुरुदेव शायद मुझे हर दृष्टि से श्रेष्ठता की पराकाष्ठा पर पहुंचाना चाहते हैं, इसीलिए एकाएक उन्होंने मुझे इलाहाबाद शिविर में बिना किसी पूर्वानुमान के **''सर्वोच्च सिद्धि दीक्षा''** प्रदान कर दी थी। वह दिन और आज का दिन है, कि मैं पूज्य गुरुदवे की असीम कृपा से हर क्षेत्र में ही उच्चता से बढ़ रही हूं, और गुरुदेव के आशीर्वाद से बढ़ती ही रहूंगी, चाहे वह क्षेत्र अध्यात्म का हो या फिर अध्ययन का। जिसके सिर पर पूरी सृष्टि के संचालक का वरद हस्त हो, तो वह पीछे रह भी कैसे सकता है।

नेहा
मुजफ्फर नगर

दिव्य संकेत

पूज्य गुरुदेव मैंने लखनऊ जाकर आपसे **''अप्सरा सिद्धि दीक्षा''** लिया, उसका यह परिणाम सामने आया, कि आप मुझे अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली दुर्घटनाओं आदि के बारे में संकेत दे रहे हैं। मैं दैनिक रूप से गुरु मंत्र कर रहा हूं। मैंने अभी **''तांत्रोक्त गुरु साधना''** के लिए सामग्री मंगा लिया है। गुरुवार (१३ तारीख) को रात्रि ६ बजे पूजा-कक्ष से मैं बाहर जाने के लिए निकल रहा था, तो ऐसा संकेत मिला, कि जैसे कोई दुर्घटना होने वाली है, मैं लगभग ११ मिनट रुका, उसके बाद चलने को हुआ, तो फिर ऐसा ही संकेत मिला, तब मैं २ मिनट और रुका, फिर चला तो २०० मीटर चलने पर दुर्घटना होते-होते बच गया, उसके बाद आपके द्वारा दिए गए संकेत को मैंने सोचा, तो मेरे नेत्र आंसू से भीग गये।

वास्तव में आप ही सच्चे गुरु हैं,
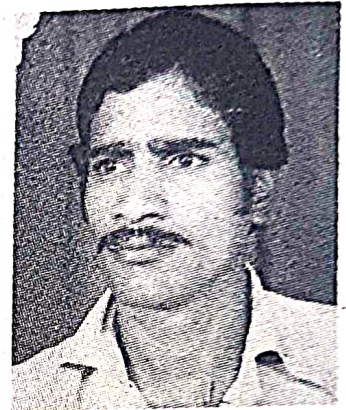
जरूरत है तो आपको पहिचानने की, पर दुनिया के लोग, जो कि भौतिकता के पीछे दौड़ रहे हैं, वे लोग आपको समझ ही नहीं पाते हैं। हम लोग पत्रिका का प्रचार करके आपका संदेश लोगों तक पहुंचायेंगे।

गजेन्द्र साहू
रायपुर (म० प्र०)

रोग मुक्ति

मेरे पिता पश्चिम बंगाल के बर्नपुर नामक स्थान में **IISCO** के कर्मचारी हैं। जून ९३ में उनकी बीमारी का समाचार पाकर भागा -भागा वहां पहुंचा। वहां के डॉक्टरों ने शल्यक्रिया के बाद यह कहकर कि कैन्सर की सम्भावना हो सकती है। यहां दिल्ली अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया। हम सब के हाथ - पांव फूल गए। इस मध्य मैं बर्नपुर से ही एक पत्र आपके नाम भेज चुका था। उसका उत्तर मिला कि श्री गुरुदेव वैद्यनाथ धाम पधार रहे हैं, वहीं

शिविर में मिल लूं। मगर उससे पहले ही बाबूजी एवं मां के साथ मैं यहां आ गया था। १८ अगस्त को पिताजी के साथ गुरुधाम आया और गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी से मिला। उन्होंने पिता जी को रक्षा कवच प्रदान किया। पश्चात् अक्टूबर में दुबारा उनका सफल ऑपरेशन हुआ। अब वे ठीक होकर ड्यूटी पकड़ चुके हैं। गुरुदेव की असीम कृपा है।

सुभाष चन्द्र वर्मा
नई दिल्ली

पूर्ण गृहस्थ सुख

मैंने अपनी समस्या सम्बन्धी प्रपत्र भरकर गुरुदेव को पत्र लिखा। पूज्य गुरुदेव ने मुझे **"मनोवांछित चैतन्य यंत्र"** एवं उससे सम्बन्धित पूजा विधि लिख कर भेजा।

विधिनुसार मैंने सोमवार को १२/६/६४ से २/१०/६४ तक पूजा एवं मंत्र-जप किया।

गुरुदेव का निर्देश था, कि आप इस यंत्र को किसी भी सोमवार, बुधवार या शुक्रवार को पूजा स्थान में रख दें और उस दिन से मात्र इक्कीस दिन तक किसी भी माला से **"ॐ ह्रीं नमः"** का एक माला (मात्र १०८ बार) मंत्र-जप सुबह या शाम किसी भी समय हो सकता है। अगरबत्ती, दीपक या अन्य किसी ताम-झाम की जरूरत नहीं, आप नहीं तो किसी भी परिवार के सदस्य को मंत्र उच्चारण का निर्देश था।

निर्देशानुसार मैं सोमवार १२/०६/६४ को **"मनोवांछित चैतन्य यंत्र"** पूजा स्थान पर स्थापित कर गुरु-पूजन के पश्चात् **"स्फटिक माला"** से मंत्र-जप शुरू किया।

जप कार्य शुरू होने के दूसरे दिन से ही मुझे इसका प्रभाव महसूस होने लगा। घर में मुझे परिवार के सभी सदस्यों पिताजी, मेरे बड़े भाई-भाभी एवं भतीजे-भतीजी का व्यवहार ठीक नहीं लगता था, किसी से कोई बातचीत खुल कर नहीं होती थी। यहां तक कि मेरी पत्नी एवं भाभी में तथा भतीजों में तो दो माह से बिलकुल बातचीत ही नहीं थी। पत्नी तो भाभी की सूरत देखना भी पसन्द नहीं करती थी, तथा उनके हाथ का खाना भी नहीं खाती थीं। इसी बीच में पत्नी के मायके वाले आए, तो मेरी पत्नी यह कह कर मायके गई थी, कि मैं दो-तीन माह बाद घर वापिस आऊंगी, लेकिन पूजा प्रारम्भ करने के ८ वें दिन अर्थात् जाने के १५ दिन बाद ही वह घर वापिस आ गई, तथा भाभी के हाथ का बना खाना भी बेझिझक आते ही खाना शुरू कर दिया। दो माह तक बातचीत न करने वाली भाभी एवं पत्नी दो दिन में ही बातचीत प्रारम्भ कर दे, यहां तक कि अब बच्चे भी अपनी चाची के साथ घुल-मिल कर रहने लगे हैं। २१ दिन के बीतते-बीतते तो यह हो गया, कि कहीं भी जाने-आने या कोई भी कार्य एक-दूसरे के बिना होता ही नहीं। परिवार में सभी सदस्यों का व्यवहार अब सामान्य हो गया है। इसके पूर्व तो घर में आने की इच्छा ही नहीं होती थी। खाना जरूर एक साथ होता था, लेकिन सन्नाटे में, और पत्नी तो अलग ही अपने लिये खाना बनाकर खाती थी।

वास्तव में ही गुरुदेव महान् हैं जो अपने शिष्यों में आध्यात्मिक चेतना ही जाग्रत नहीं करते, अपितु अपने शिष्यों की भौतिक सुख-सुविधाओं का भी पूर्ण ख्याल रखते हैं, जिसके फलस्वरूप आज मेरा घर-परिवार टूटने एवं बिखरने से बच सका। इनके पूर्व मां-पिताजी का प्रयास विफल रहा। वे भाभी एवं पत्नी को मिलाने में असफल रहे।

रामकिसून साहू शिक्षक,
दुर्ग (म० प्र०)

जीवन - रक्षा

गुरुदेव, मैंने आपसे २३/०६/६४ को गुरुधाम दिल्ली में मिल कर प्रार्थना की थी, कि आप की कृपा मुझे कैसे प्राप्त होगी, यही बता दीजिए। आप का उत्तर था **"मैं सदा तुम्हारे साथ हूं"**। आपका उत्तर पाकर संतुष्टि तो हुई थी, पर मन में ऊहापोह लगा हुआ था।

कल शाम २८/०६/६४ को मैं नई दिल्ली स्टेशन से रिजर्वेशन करा कर अपने स्कूटर से बाहर निकल रहा था, मन में आप को स्मरण करते हुए, कि दाहिने तरफ से अचानक एक तिपहिया स्कूटर तेजी से आकर टक्कर मारने वाला था। समझ में नहीं आ रहा
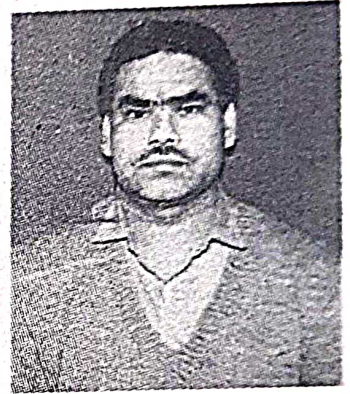
था, कि यह सब क्या हो रहा है, कि लगा बहुत बड़ी दुर्घटना घटने वाली है। दिल भय से कांप उठा, पर तत्काल ही लगा, कि कोई अदृश्य हाथ, एक हाथ से मेरे स्कूटर को तथा दूसरे हाथ से तिपहिया को परे धकेल रहा है, और मैं तथा मेरा स्कूटर बाल-बाल बच गया, खरोंच तक नहीं आयी। मैं आपका स्मरण करते-करते सकुशल घर पहुंच गया, जहां मेरे बच्चे अकेले (उनकी मां बाहर गई है) मेरे आने का इन्तजार कर रहे थे। अब जब सारी घटनाओं का विश्लेषण करता हूं, तो आप की वाणी कि, "मैं सदा तुम्हारे साथ हूं" की सत्यता समझ में आ गई . . . और उसे सोचकर आंखों में अश्रु प्रवहित होने लग जाते हैं, शरीर रोमाञ्चित हो उठता है। मुझे मेरी धृष्टता के लिए क्षमा कर इसी प्रकार कृपा बनाए रखें, प्रभु! आपको मेरे लिए कष्ट उठाना पड़ा इसके लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूं।

आपका शिष्य
दीनानाथ साहा, दिल्ली
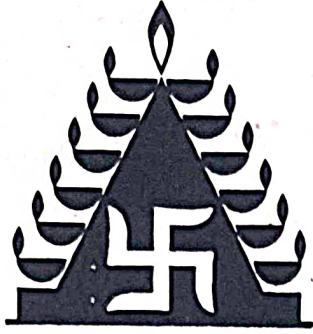
21 अप्रैल 1995

इलाहाबाद

पूज्य गुरुदेव का षष्ठी पूर्ति महोत्सव

कौस्तुभ जयन्ती

कस्तूरी की तरह महक एवं पुलक से भरा महोत्सव

: ध्यान रखें :

कुछ अवांछनीय तत्व **२१ अप्रैल शिविर का आयोजन अपने क्षेत्र में हो रहा है** कह कर शिविर के नाम पर लोगों से धन एकत्र कर रहे हैं। जबकि २१ अप्रैल के शिविर का आयोजन इलाहाबाद में करने की अनुमति पूज्य गुरुदेव ने पानीपत शिविर में दी थी। अतः समस्त पाठकों, साधकों एवं शिष्यों का यह कर्त्तव्य बनता है कि इस प्रकार के व्यक्तियों की बातों में न आयें और न ही उन्हें किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग प्रदान करें, यदि कुछ लोगों ने ऐसे तत्वों को धन - राशि दे दी हो तो उन्हें पूर्ण अधिकार है कि वे अपना सहयोग वापिस ले लें, क्योंकि इस प्रकार से एकत्र की गयी धन राशि का उपयोग वे अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए करते हैं, इससे संस्था का किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

– व्यवस्थापक

रुको . . . कस्तूरी मृग की तरह इस माया रूपी जंगल में भागना बंद करो. . . मैं तुम्हारा गुरु तुम्हें आवाज दे रहा हूं, तुम जिस सुगन्ध के पीछे भाग रहे हो वह तुम्हारे अन्दर ही है. . . यह सुगन्ध कहीं और से नहीं, तुम्हारे अन्दर से ही आ रही है . . . मैं उससे तुम्हारा परिचय कराऊंगा . . . और तुम्हारे चेहरे से विषाद, तनाव, दुःख को हटाकर, तुम्हें तेज प्रदान करूंगा, दिप् - दिप् करता आभा मण्डल प्रदान करूंगा चाहे इसके लिए **मुझे कोई भी प्रयोग सम्पन्न करवाना पड़े** . . . चाहे **"ऊर्ध्वपात दीक्षा"** जैसी दीक्षा ही क्यों न देना पड़े. . . और यह मेरा कर्तव्य है।

अब तुम्हें इस शिविर में आना ही है। यह मेरा आदेश है।

– गुरुदेव

शिविर शुल्क - ६६०/-

: सम्पर्क :

श्री एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हॉल, रिकॉब गंज, फैजाबाद, उ. प्र., फोन : (0527) 812595, 814052
श्री एस. के. मिश्रा, 317, मधवापुर, इलाहाबाद, उ. प्र.
श्री सी. डी. शर्मा, B-395, इन्द्रा नगर, लखनऊ (उ. प्र.), फोन : 0522-383900
श्री एस. सी. कालरा, फोन : 0536-7216,7237
श्री राज कुमार वैश्य, 94/A/13 A सन्तूर खारा, इलाहाबाद
डॉ० प्रमोद यादव, इलाहाबाद, फोन : 0532-632229
श्री हेमन्त सिंग, इलाहाबाद
श्री एल. डी. सिंह, किदवयी नगर, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, भावड़ खेड़ा, शाहजहांपुर
डॉ० पी. सी. अग्रवाल, मुजफ्फर नगर, फोन : 0131-28579
श्री जे. एल. गोयल, बुलन्द शहर
श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, वाराणसी, फोन : 0542-43131
श्री दीनानाथ यादव, अशोक नगर, वाराणसी
श्री वेद कुमार जायसवाल, वाराणसी, फोन : 0542-383759, 385427
श्री अच्छे लाल यादव, बसखारी, फैजाबाद
श्री ओम प्रकाश जायसवाल, फतेहगंज, फैजाबाद
श्री वेद प्रकाश, 21/11 पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्री एस. पी. सांगड़, 47, रविन्द्र नगर, उदयपुर, फोन : 0294-2635
श्री हरि राम चौधरी (फर्मासिस्ट), डफ्रिन हॉस्पीटल, फैजाबाद
श्री वासुदेव पाण्डेय (मैनेजर), जिला सहकारी बैंक, हरैया, बस्ती

जिसकी प्रतीक्षा वर्षों से सिद्धाश्रम के योगियों को भी है

आकाशे तारकं लिंगम् पाताले हाटकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं, लिंगमत्रयं नमाम्यहम्।।

भगवान सदाशिव के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग विग्रह के अर्चन का सौभाग्य यदि **''परम पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी''** के सान्निध्य में प्राप्त हो, तो गृहस्थ शिष्यों को परम सौभाग्य ही नहीं, जीवन का अहोभाग्य समझना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के शिवलिंग का अर्चन सामान्य अर्चन नहीं हैं, इसे सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता।

इस प्रकार के शिवलिंग की साधना हेतु **'तत्त्वमसि'** क्रिया-ज्ञान होना जरूरी है। सम्पूर्ण शिव-पूजन की विधि एकमात्र ब्रह्मर्षि वशिष्ठ को ही ज्ञात है। प्रचलित **'रुद्राष्टाध्यायी'** के मंत्रों के द्वारा **'शिवार्चन'** या **'रुद्राभिषेक'** असम्भव है। भगवान सदाशिव के ज्योतिर्लिंग का पूजन रावणकृत **''दाक्षिणात्य द्रविड़ पद्धति''** से ही सम्भव है, वह भी पूर्ण जीवन्त, जाग्रत और चैतन्य स्वरूप से। यदि जीवन का सौभाग्य महाकालेश्वर के दर्शन एवं साधना में है, तो पूर्णता केवल सद्गुरु द्वारा ही सम्भव है।

''शिवमहापुराण'' में स्पष्ट लिखा है — **जिसने साक्षात् शिव स्वरूप सद्गुरुदेव के सान्निध्य में शिव साधना सम्पन्न नहीं की, उसे शिवत्व की प्राप्ति भला कैसे हो सकती है।** पूर्वजन्म के संस्कार, निरन्तर साधना और सद्गुरुदेव की कृपा से ही ज्योतिर्लिंग के अर्चन का सौभाग्य महाशिवरात्रि पर प्राप्त होता है।

रात्रि तो आनन्द देने वाली है, और अमावस्या का अर्थ होता है, जिस दिन सूर्य और चन्द्रमा सर्वथा एक साथ हो जाएं। 'अमा' का अर्थ है — साथ-साथ तथा 'वस' का अर्थ होता है — रहना। इसलिए अमावस्या वह हुई, जिसमें सूर्य तथा चन्द्र एक ही नक्षत्र में एक साथ रहते हैं। दोनों के साथ-साथ रहने का अर्थ ही अमावस है, क्योंकि सूर्य **''आत्मा''** है और चन्द्रमा का

अर्थ **''मन''**। जब आत्मा और मन सर्वथा एक हो जाएंगे, उस समय संसार का बोध नहीं रहेगा। अमावस के एक दिन पूर्व जो स्थिति है, वह कृष्ण पद की चतुर्दशी है, अतः परमात्मा से सर्वथा एक तो नहीं हुए, लेकिन चन्द्रमा, सूर्य की राशि में जाने को तैयार बैठा है, और अमावस के प्रवेश करते ही उसकी तरफ मुख करके पहुंचने को तैयार, एक चरण उठा हुआ है, यही चतुदर्शी की स्थिति है। इसी प्रकार साधक का मन बाकी सब तरफ से हटकर परमेश्वर के साथ एक हो जाने को, उनकी गोद में चढ़ जाने को तैयार है। साधक के मन की यह स्थिति ही **'चतुर्दशी तिथि'** है।

साधक के सभी कर्मों के कारण पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां और चार अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त और अंहकार) हैं, ये चौदह जब परमेश्वर के पास जाने को तैयार हो गए, तभी यह **'चतुर्दशी'** हुई, ये चौदह ही तो जीव का सब कुछ हैं, इसके अतिरिक्त साधक के पास है ही क्या? इसलिए भगवान सदाशिव को **''कृष्ण चतुर्दशी''** प्रिय है।

देहस्थाः सर्व-विद्याश्च देहस्थाः सर्वदेवताः।
देहस्थाः सर्वतीर्थानि गुरु वाक्येन लभ्यते।।

(शांभवी तंत्र)

देह में समस्त विद्या, देवता तथा तीर्थ समूह विराजित रहते हैं। देह में ही गुरु हृदय स्थापित होने से सब का ज्ञान हो जाता है।

महाकाल की नगरी में काल पर विजय प्राप्त करने का क्षण तो सद्गुरुदेव की कृपा से ही प्राप्त होता है, चाहे वह उच्चकोटि का योगी हो या तांत्रिक हो अथवा मांत्रिक हो या सद्गृहस्थ, चाहे किसी भी दृष्टि से कहें, कालजयी पूर्णता सद्गुरुदेव द्वारा ही सम्भव है। वास्तविक सिद्धाश्रम में जिस कर्म का अनुष्ठान होता है, उसमें काल का ध्वंस करने के लिए काल का ही आश्रय लेते हैं, दूसरे शब्दों में इसे **'अष्ट क्षण'** कहते हैं।

महाकाल की नगरी में **''महाशिवरात्रि''** लोक प्रचलित शिवरात्रि से अलग है, यह चतुर्वर्गदायिनी पूर्णतः आध्यात्मिक महाशिवरात्रि है। शिवरात्रि में जागरण होता है, जागरण अर्थात् **''आत्मानुसन्धान''**। यह आत्मानुसन्धान शिष्य को पूरे वर्ष में मात्र एक बार ही मिलता है, इसे खोना अपने जीवन के महत्वपूर्ण अवसर को खो देने के बराबर है, वास्तव में **'परा'** या **'अपरा'** सब कुछ तो स्वयं सदाशिव स्वरूप सद्गुरुदेव ही हैं। साधक का 'कर्त्तव्य' है– साधना, और 'उद्देश्य'– मन को एकाग्र करना या केन्द्र में स्थापित करना।

सप्तमोक्षदायिनी नगरी 'उज्जैन' महाकाल की नगरी है, ''महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग'' जहां प्राकट्य है, उसके ठीक ऊपर **'श्री यंत्र'** प्रतिष्ठित है। **'कर्क रेखा'** भी ठीक महाकालेश्वर के शिखर पर से होकर गई है। महाकालेश्वर का ज्योति विग्रह दक्षिणमुखी

> **महाशिवरात्रि का पर्व होता है ''आत्मानुसंधान'' का। स्व को समाप्त कर अपने मूल स्वरूप को पहिचानने का . . . और इसे खोना अपने जीवन के एक स्वर्णिम अवसर को अपने ही हाथों गंवा देना है।**

हैं, यह शिवालय पूर्णतः तांत्रोक्त पींठ है। ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर इसके ठीक सामने स्थापित है, अद्भुत, अनिर्वचनीय एवं अपने-आप में अन्यतम्। जहां ओंकारेश्वर को पृथ्वी का नाभि-स्थल कहा गया है वहीं दूसरी ओर महाकाल उज्जैन नगरी को भारत देश का नाभि-स्थल (केन्द्र बिन्दु) माना गया है, क्योंकि समस्त काल गणना भी उज्जयिनी नगरी में होती है।

जहां भी ज्योतिर्लिंग है, वहां 'श्री यंत्र' अवश्य होता है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग पांच जगह से टेढ़ा-मेढ़ा है, इसे **''अग्नि ज्योतिर्लिंग''** भी कहा गया है। **उक्त शिवलिंग में १०८ प्रकार के 'श्री यंत्र' स्पष्ट अंकित हैं, साथ ही वे मंत्र एवं साधनाएं, जिसे की ''आद्य शंकराचार्य जी'' को उनके सद्गुरुदेव ''गोविन्द पादाचार्य जी'' ने प्रदान की थी। इसके विपरित महाकाल ज्योतिर्लिंग तो सर्वथा एक अलग ही रहस्य को लिए हुए है। यह स्वरूप है– ''विराट त्रिपुर सुन्दरी षोडशी'' का।**

काल को या मृत्यु को जीतने का अर्थ है, ऊर्ध्वगति प्राप्त करना और यह ऊर्ध्वगति, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में सम्भव है। अव्यक्त किन्तु व्यक्त मूर्ति (ज्ञान की दृष्टि से), महाकाल के नाभि-स्थल से जो ब्रह्म नाल प्रकट होता है, उसी के ऊपर सुमंगला शक्ति **''श्री विद्या''** है, जो महाकाल, ज्योतिर्लिंग के ठीक ऊपर 'श्री यंत्र' के रूप में प्रतिष्ठित है, बिना इस शक्ति के सहस्रार प्रवेश असम्भव है।

प्रत्येक मानव-शरीर में चक्रों की स्थिति है, और ब्रह्माण्ड के विभिन्न भागों में यंत्र अवस्थित है, शरीरस्थ चक्र और ब्रह्माण्ड में निहित यंत्र के मध्य सम्बन्ध है, इन पर ध्यान केन्द्रित कर साधक ब्रह्माण्ड के साथ अंतरंगता स्थापित कर सकता है। प्रत्येक मानव अपने शरीर में श्री यंत्र के प्रतीकों को लिए हुए और समर्थ सद्गुरु ही सुयोग्य साधक को मौखिक रूप से उसका ज्ञान देते हैं।

महाकालेश्वर में ही 'श्री यंत्र' ब्रह्माण्ड में स्थित है, महाकाल की यह शक्ति महाकाली ऊर्ध्वोर्ध्व गति अनायास ही प्राप्त

कराती है। बिना ज्ञान के यह ऊर्ध्वगति असम्भव है। ऐसे क्षेत्र में चाहे अज्ञानी हो, पापी अथवा पुण्यवान या अन्य कर्म से युक्त हो, व्यक्ति देह त्यागने के साथ ही ज्ञान प्राप्त करके ऊर्ध्वगति प्राप्त करता है। यहां देह त्यागने का अर्थ है, **''अज्ञान-वृत्तियों का विनाश''।**

वस्तुतः ज्ञान स्वरूप सद्‌गुरुदेव के बिना ज्ञान का उदय नहीं हो सकता। मृत्युञ्जयी योगी बनने हेतु महाकाल की साधना जरूरी है। प्राण तथा चैतन्य दीक्षा प्राप्त होने पर भी काल का संहार क्रम लुप्त नहीं हो सकता। ज्ञान सम्पन्न पुरुष भी मृत्यु को नहीं जीत सके, उसकी देह का ध्वंस होना स्वाभाविक है।

देह का चैतन्य होना मात्र ज्ञान प्राप्ति से असम्भव है। मानव देह में जो कुछ चैतन्यता जीवन काल में दृष्टिगोचर होती है, वह आत्म-सत्ता या जीवात्मा स्वरूप है। जीवात्मा द्वारा इस देह का त्याग करते ही, यह शरीर निर्जीव हो जाता है। देह, काल के द्वारा ग्रसित हो जाती है, यही कारण है कि ज्ञान द्वारा देह प्रभावित नहीं हो सकती है। देह में अमरत्व का संचार हो सकता है, और यह संचार होता है मन के द्वारा।

'सिद्धाश्रम' के योगियों ने अपने अनुसंधान में पाया, कि अब तक प्रचलित सभी साधनाओं में मन को निरुद्ध कर दिया जाता था। फलस्वरूप मन और देह दोनों की उपेक्षा स्वाभाविक बन गई थी। इसका परिणाम यह हुआ, कि मन तथा देह में चैतन्य संचरण नहीं होता था। कुछेक समय पूर्व प्राप्त **'शांभवी तंत्र'** में इस विषय को अधिक स्पष्ट करते हुए बताया गया है — **साधना का अर्थ यह नहीं, कि अपने-आप को अत्यधिक कष्ट युक्त बना लें, अपितु साधना के मूल लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु, अपनी कमी को दूर करने हेतु उचित सद्‌गुरु का वरण करना चाहिए।** सद्‌गुरु खोजने से नहीं, अपितु उचित समय पर स्वयं प्राप्त हो जाते हैं। सम्यक प्रयत्न और दृढ़ श्रद्धा ही शीघ्र सिद्धि प्राप्त कराती है।

देह, प्राण तथा मन में एक तारतम्य का होना नितान्त आवश्यक है। यह योग्यता केवल मात्र आद्यशक्ति मां द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, यही महाकालेश्वर के 'श्री यंत्र' का रहस्य है और यही मृत्यु या काल पर विजय प्राप्त करने का भी रहस्य है।

चैतन्य मन ही निज स्वमन है। भाव-शक्ति आद्यशक्ति मां की अपनी शक्ति है, जो मृत्युञ्जय हैं, उनकी देह में **'षोडशी कला'** का पूर्ण प्रकाशन होता है। यह 'षोडशी' काल का शोषण कर लेती है, तथा काल द्वारा बाधित नहीं होती। जिस देह में 'षोडशी कला' स्थापित है, वह देह अमृत-स्वरूप है, और महाकाल ही मृत्युञ्जय हैं, ठीक ऐसा ही स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, महाकाल पीठ का।

इस बार ऐसा ही, बहुत कुछ घटित होने जा रहा है, इस महाशिवरात्रि पर, महाकाल की नगरी में। आप समस्त शिष्यों का आह्वान है, परम पूज्य गुरुदेव जी द्वारा, क्योंकि काल किसी के लिए रुकता नहीं है, काल का प्रभाव अमिट है।

''महर्षि जावाल'' की तपःस्थली **'जवलपुर नगरी'** जावाल ऋषि के आश्रम होने के साथ प्रसिद्ध है। 'महर्षि जावाल' ने अत्यन्त गूढ़ रहस्यों में **'महामृत्युञ्जयी साधना'** के बारे में स्पष्ट कहा है — यह साधना तो अत्यन्त दुष्कर है, त्रिक शास्त्र का ज्ञाता, शाम्भवी योग सम्पन्न उच्चकोटि का योगी ही, जिसे बिन्दु (शिववीर्यपारद) धारण की क्रिया ज्ञात हो और जो पारद के सम्पूर्ण १०८ संस्कारों का ज्ञाता हो, **जिसे 'रसेश्वरी दीक्षा' का ज्ञान और देने की क्रिया ज्ञात हो, साथ ही जिसने ऐसी दीक्षा प्राप्त की हो, ऐसा विरला योगी ही ''द्वादश ज्योतिर्लिंग'' के क्रिया-विधान द्वारा ''महाकाल मृत्युञ्जय साधना'' सम्पन्न करा सकता है।** अतः शिष्य को मन, वचन और कर्म से एकाग्रचित्त होकर ऐसे ही सद्‌गुरु का वरण करना चाहिए। गुरु ही उपाय है, और पारमेश्वरी अनुग्रहिका शक्ति ही गुरु है। उपनिषद् का अर्थ — शिष्य का सद्‌गुरु के सामीप्य जाना है, और इतना अधिक, कि वह गुरु को अपने-आप में आत्मसात कर सके—

महाकाल का संहार क्रम कभी रुकता नहीं है। हां! इतना अवश्य होता है कि सद्‌गुरु से दीक्षा प्राप्त व्यक्ति के देह का ही संहार काल के द्वारा हो पाता है, उसकी दिव्यता, श्रेष्ठता व ज्ञान का नहीं। अतः दीक्षित व्यक्ति अमर व कालजयी होता ही है।

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथ बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषद् माहं ब्रह्मनिराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु सन्तु।

(रु० जाबालोपनिषद)

अर्थात् मेरे सभी अंग वृद्धि को प्राप्त हों। वाणी, घ्राण (प्राणवायु) चक्षु, श्रोत्र, बल और शेष सभी इन्द्रियां वृद्धि को प्राप्त हों अर्थात् मृत्युञ्जयी बनें। हे सद्‌गुरुदेव! आपको शरीर के रोम-रोम में धारण करके आपका सामीप्य, सान्निध्य प्राप्त कर के ही ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, वास्तव में ही आप सर्वोपनिषद् ब्रह्म स्वरूप हैं। मुझसे न तो कभी ब्रह्म अर्थात् सद्‌गुरु का त्याग हो, और न ही ब्रह्म अर्थात् सद्‌गुरुदेव मेरा त्याग करें।

इस प्रकार आत्मा में निरत अर्थात् आपकी आज्ञा में रत सर्वत्र आपको (सद्गुरु) देखता हुआ, आप में स्थित सर्वोपनिषद् स्वरूप समस्त ज्ञान (धर्म) प्राप्त हो। वे सभी साधनाएं एवं सिद्धियां, जो आप में औपनिषदिक स्वरूप में स्थित हैं, मुझ शिष्य में आयें।

परम पूज्य "भगवदपाद् गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी" ने महाशिवरात्रि पर सम्पन्न की जाने वाली कालजयी साधना एवं दीक्षा को अत्यन्त गोपनीय रखा है, इसके कारण सिद्धाश्रम के समस्त योगियों में चर्चा चल रही है, क्योंकि उच्चकोटि के योग वेत्ता भी जानते हैं, कि "भगवदपाद् निखिलेश्वरानन्द जी" में वह सामर्थ्य है, जो पत्थर को भी पारस बना सकती है। वर्तमान में असम्भव का सम्भव बना देना, तंत्र के जटिल एवं विशद विधानों को एक गृहस्थ शिष्य के लिए भी सुलभ बना देना, उनके लिए अत्यन्त साधारण बात है।

योगी **'स्वामी विभु महाराज जी'** जो आजकल सिद्धाश्रम में रहते हैं, उन्होंने आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व **'मृतसञ्जीवनी विद्या'** की सिद्धि प्राप्त की थी, उससे सम्बन्धित एक लघु प्रयोग मुझे **'योगी ज्ञानानन्द'** द्वारा प्राप्त हुआ, जिसको मैं साधकों के हितार्थ दे रहा हूं— यह लघु प्रयोग महाकाल साधना का ही अंग है।

इस मृतसञ्जीवनी विद्या को **'भार्गव शुक्राचार्य'** ने **'कच'** को प्रदान किया था, इसमें निम्नलिखित सामग्री आवश्यक है **"पारद शिवलिंग, श्री यंत्र एवं त्रिपुर सुन्दरी गुटिका"** ये तीनों सामग्री विराट् त्रिपुर सुन्दरी **"ऊर्ध्वश्चेतना मंत्र"** से सिद्ध हों। इसके अलावा **"मृत्युञ्जयगर्भित माला"** की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम शिवरात्रि को या किसी भी सोमवार को साधक अपने पूजा कक्ष में गुरु, गणेश और भैरव का संक्षिप्त पूजन करे एवं उनसे साधना की आज्ञा मांगे।

तत्पश्चात् सामने किसी थाली में चंदन से गुरु मंत्र **"ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः"** लिखें। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र के ऊपर ही तीनों सामग्री स्थापित कर दें। "पारद शिवलिंग, श्री यंत्र एवं गुटिका" का संक्षिप्त पूजन करें। अब हाथ में जल लेकर विनियोग का मंत्र पढ़ें —

विनयोग

ॐ अस्य श्री मृत सञ्जीवनी विद्या मन्त्रस्य, भृगुऋषिः। विराट्छन्दः। चिदानन्द लहरी देवता। ह्रीं सर्व-व्यापिनी प्राणेश्वरी बीजं। क्लीं कीलकम्। ह स क ल ह्रीं शक्तिः मृत सञ्जीवने विनियोगः।

(उच्चारण करके सामने किसी पात्र में या भूमि पर जल छोड़ें)

इसके पश्चात् अपने बाएं हाथ की ओर एक ताम्र कलश (लोटा) जल से भरा स्थापित करें, बाएं हाथ से कलश का स्पर्श करके दाहिने हाथ से माला द्वारा मंत्र-जप करें।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ह्सौः सर्व-तत्त्व-व्यापिनी जीव जीव प्राण प्राणे मृतामृते क ए ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं हुं हुं मृत विद्रावणे प्राण तत्त्वे तत्त्वाति- तत्त्वे सर्वेश्वरि वेद गुह्ये ह स क ह ल गर्भे सावित्रि ऐं वाचम्भरि कालि क्लीं जीवय जीवय स्वाहा।।

यदि कोई असाध्य, कष्ट साध्य मानसिक व शारीरिक बीमारियां, अल्पायु योग या अपमृत्यु योग हो, तो इसके लिए मात्र २१ दिन तक नित्य प्रति १०८ बार अर्थात् एक माला मंत्र-जप अनिवार्य है।

साधना की समाप्ति पर माला एवं गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें और पारद शिवलिंग व श्री यन्त्र को पूजा स्थान में स्थापित रखें। साधना की सफलता के लिए परम पूज्य सद्गुरुदेव जी को पत्र अवश्य लिखें।

प्रस्तुति : सेवानन्द बोरकर

गर्भ रक्षा प्रयोग

यदि किसी स्त्री का बार-बार गर्भपात हो जा रहा हो तो उसे चाहिए कि एक भोजपत्र पर अथवा सफेद कागज पर कुंकुम से निम्न यंत्र अंकित करे—

.यः	रः

पुनः इसके ऊपर **गौरी शंकर रुद्राक्ष** रखकर सामान्य शिव-शक्ति पूजन कर पांच दिन तक नित्य निम्न मंत्र का ५ माला मंत्र जप **सफेद हकीक माला** से करें और पांचवे दिन जप समाप्ति पर यंत्र अंकित कागज में रुद्राक्ष को लपेट कर गर्भवती स्त्री के चित्र के साथ बांध कर शुद्ध स्थान पर रख दें और सन्तानोत्पत्ति के बाद माला व यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

मंत्र – **ॐ यं हं रं**

ॐ अष्टगंध प्रदाय नारायणाय नमः

मैं तुम्हारे लिए बांहें फ़ैलाए खड़ा हूं, और तुम्हारे आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूं, तुम्हें मुझसे मिलकर मुझमें समाहित होना ही है, वह भी पूर्ण समर्पण के साथ. . . क्योंकि तुम्हारे शरीर में मेरा ही रक्त प्रवाहित हो रहा है, क्योंकि तुम्हारे सीने में मेरा ही हृदय धड़क रहा है, क्योंकि तुम्हारी सांसों में मेरी ही श्वास है, इसीलिए तुम्हें तो केवल और केवल मुस्कराना है, थिरकना है और अपने जीवन के पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर लेना है।

यह तो पूज्य गुरुदेव के ही शब्द हैं – **"तुम व्यर्थ ही चिन्ता करते हो, तुम्हें तो निश्चिन्त हो जाना है, और निश्चिन्त व मुक्त भाव से ही मृदुगान गाते हुए, नृत्यमय होकर, इस पृथ्वी तल पर प्रेममय वातावरण का विस्तार करना है. . . और यह तभी सम्भव हो सकता है, जब तुम मेरी सुगन्ध से आप्लावित होओगे, जब तुम पूर्ण श्रद्धा से समर्पित हो जाओगे, जब तुम्हारा अपना कोई अस्तित्व नहीं रहेगा, क्योंकि तुम्हारे चारों ओर मेरा ही अस्तित्व है. . . तभी तुम मेरे ज्ञानामृत को अपने हृदय में, अपने शरीर में समाहित कर सकोगे, तभी तुम जीवन के सौन्दर्य और सत्य का साक्षात्कार कर सकोगे।"**

इस प्रकार पूर्ण समर्पित होते हुए लीन हो जाने की क्रिया व्यक्ति के सांसारिक प्रपंचों की मृत्यु होती है. . . और जिस प्रकार रात्रि के गहन अन्धकार के बाद पुनः सूर्य अपनी रोशनी से जगत को प्रकाशवान करता है, उसी प्रकार गुरुदेव भी शिष्य के संचित पाप कर्मों की मृत्यु कर पुनः अपने ढंग से उसके जीवन का निर्माण करते हैं. . . फिर होता है उस शिष्य का पुनर्जन्म, जो सारे जगत को सूर्य की किरणों की ही भांति प्रकाशवान करने में समर्थ होता है।

. . . और इसीलिए २१ अप्रैल, जो कि पूज्य गुरुदेव के **"जन्म-दिवस"** के रूप में मनाया जाता है, **'गुरु दिवस'** भी कहलाता है, वास्तव में इसे 'गुरु दिवस' न कहकर **'शिष्य दिवस'** ही कहा जाना ज्यादा उचित होगा, क्योंकि यह सही अर्थों में शिष्य के जीवन का पुनर्जन्म ही होता है, और इस क्रिया को गुरुदेव हर वर्ष २१ अप्रैल पर तीन दिन के शिविर के रूप में मनाते हैं, जो कि पूरे जोश, उमंग और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

यह पर्व तो उल्लास का पर्व है, अपने-आप को खो देने का पर्व है, गुरु को अपने हृदय में समाहित कर लेने का पर्व है, आत्म-तत्व से साक्षात्कार का पर्व है, क्योंकि इस दिवस विशेष पर एक नए शिशु का जन्म होता है, जिसमें गुरु द्वारा दिए सुसंस्कारों का समावेश होता है, और जो शक्ति द्वारा इस समाज को अपने

प्रकाश से आलोकित कर देता है. . . क्योंकि उसका चिन्तन, उसका विचार, उसके अन्दर समाहित ज्ञान और प्रकाश सभी कुछ उस गुरु का होता है, जो रक्त बनकर उसकी धमनियों में प्रवहित होने लग जाता है, क्योंकि गुरुदेव ही स्वयं पूर्णरूप से उसके हृदय, उसकी आत्मा, उसके रोम-रोम में समाहित हो जाते हैं. . . फिर उसमें और गुरु में कोई भेद नहीं रह जाता, क्योंकि 'गुरु का ज्ञान' ही सही अर्थों में **'गुरु'** कहलाता है।
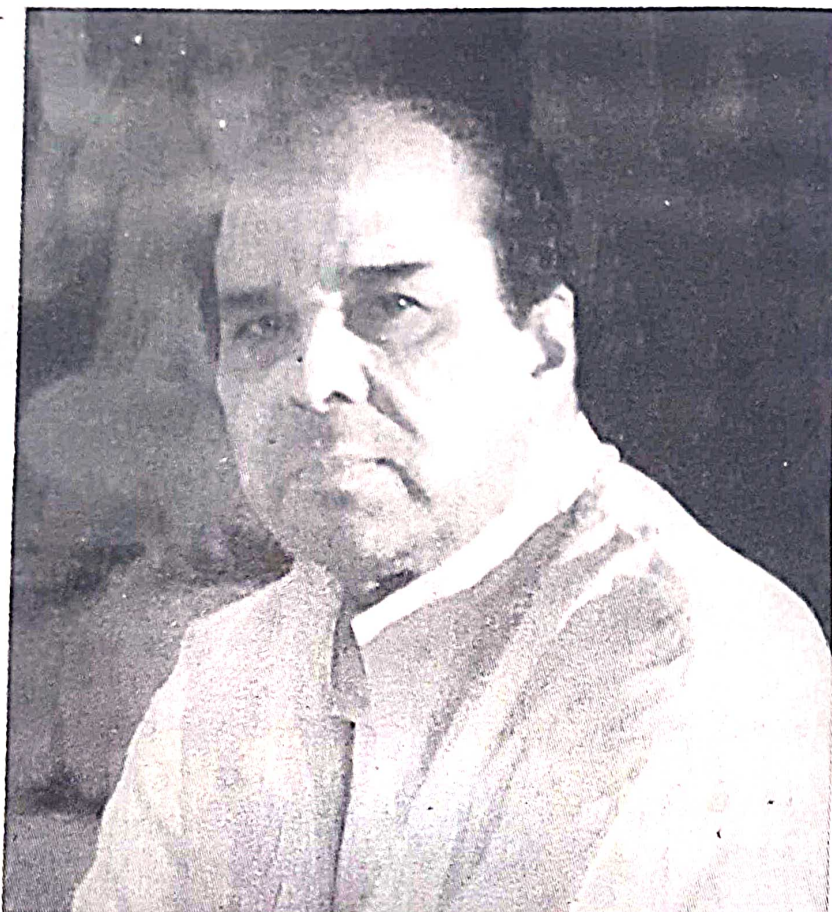
'शिव' ही हैं, जो संहारकर्ता भी हैं, जो पालनकर्ता भी हैं और जो सृष्टिकर्ता भी हैं।

यों तो नवरात्रि पर्व, महाशिवरात्रि पर्व सभी वर्ष के विशेष दिवसों में से एक माने जाते हैं, किन्तु २१ अप्रैल (गुरु जन्मदिवस) इन सबसे श्रेष्ठ है। गुरु-चरणों में शिष्य का नया जीवन उसके जीवन की श्रेष्ठता ही तो है. . . और जो उनके वास्तविक स्वरूप से परिचित हैं, उनके लिए तो यह एक विशेष सौभाग्यदायक दिवस है।

यह जागृति, यह चैतन्यता, यह हृदय स्थापन क्रिया गुरुदेव के जन्मदिवस पर ही सम्भव होती है, क्योंकि यह मात्र गुरु जन्मदिवस ही नहीं है, यह तो शिष्य जन्मदिवस भी है, और इस दिवस विशेष पर प्रत्येक शिष्य को चाहिए, कि वह गुरु चरण-कमलों में उपस्थित हो ही, क्योंकि यह उसके जन्म का पर्व है, यह उसके सौभाग्य का पर्व है, यह उसकी श्रेष्ठता का पर्व है।

इस विशेष पर्व को मनाने के लिए तो ब्रह्माण्ड में व्याप्त समस्त देवी-देवता भी व्याकुल रहते हैं, क्योंकि पूज्य गुरुदेव कोई साधारण व्यक्ति नहीं अपितु ऐसी शाश्वत शक्ति हैं, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हर क्षण विचरण करते रहते हैं। सांसारिक व्यक्ति के लिए तो यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है, किन्तु यह मिथ्या नहीं है, कई गृहस्थ साधकों ने इस बात को अनुभव भी किया है, और वह भी पूर्णतः प्रामाणिकता के साथ।

उन साधकों व शिष्यों ने उनकी देह से निकलती अष्टगंध का अनुभव किया है, जो कि उनके देवमय होने की प्रामाणिकता को सिद्ध करती है, क्योंकि ऐसी दिव्य गंध किसी साधारण व्यक्ति की देह से नहीं आ सकती, वह तो किसी उच्चकोटि की देवात्मा के ही शरीर से प्रवहित हो सकती है, और कई शिष्यों ने तो, जिन पर गुरुदेव की असीम कृपा-दृष्टि पड़ी, उनके देवत्व स्वरूप के, उनके विराट स्वरूप के दर्शन भी किए हैं, जो किं उनके जीवन की पूर्णता कही जा सकती है।

ऐसी देवात्मा के जन्मदिन पर न आने वाला तो अभागा ही कहा जा सकता है, क्योंकि पूज्य गुरुदेव तो इस धरा पर साक्षात्

यह सौभाग्यदायक दिवस इस युग के लिए एक बहुत बड़ी देन है, कि पूज्य गुरुदेव का जन्म इस धरा पर हुआ, और यह कोई साधारण बात नहीं है, इसलिए इस दिन की विशेषता को तो शब्दों में भी नहीं बांधा जा सकता।

गुरुदेव के इस जन्मदिवस को मनाने के लिए, जो कि शिष्यों के ही अनुरोध द्वारा निर्धारित किया गया है. . . अलग-अलग स्थानों पर साधना शिविर के रूप में मनाते हैं. . . शिविर तो माध्यम है गुरु और शिष्य के मिलन का, शिविर तो माध्यम है शिष्य को पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने का, शिविर तो माध्यम है गुरु में पूर्णरूप से एकाकार हो जाने का।

इस शिविर में गुरुदेव विभिन्न प्रकार के नए-नए रहस्यों, दीक्षाओं और साधनाओं के द्वारा शिष्य की प्राणश्चेतना को जाग्रत करने का प्रयास करते हैं. . . और जब तक शिष्य उनसे मिलेगा नहीं, तब तक यह प्रक्रिया भी सम्भव नहीं है।

किन्तु कई बार ऐसा होता है, कि मनुष्य चाहकर भी इस विशेष दिवस पर उपस्थित नहीं हो पाता, वह सोचता तो है, परन्तु कई सामाजिक, मानसिक परिस्थितियां उसके आड़े आकर खड़ी हो जाती हैं, और उसे रुकने पर मजबूर कर देती हैं, जिस कारण वह इस अवसर पर उनके समक्ष नहीं पहुंच पाता और अकुलाकर रह जाता है, या फिर उसके पिछले जन्म के कई पाप और दुष्ट ग्रह उसके आगे आकर खड़े हो जाते हैं, जो उसके पांवों में जंजीर डाल देते हैं, कदम-कदम पर विपत्तियां उसके आगे दीवार बनकर खड़ी हो जाती हैं, और वह विवशतापूर्वक आत्मा से तो

गुरुदेव के चरणों में उपस्थिति होता ही है, किन्तु शारीरिक रूप से उपस्थित न होकर उस चैतन्यता को, उस प्राणश्चेतना को, उस ज्ञानश्चेतना को ग्रहण कर पाने में असमर्थ ही रहता है।

ऐसे शिष्यों के लिए, जो वहां उपस्थित नहीं हो सके, उनके लिए एक विशेष साधना को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे वह व्यक्ति, साधक या शिष्य घर पर ही रहकर इस विशेष दिवस पर सम्पन्न करे, जो इस प्रकार है —

साधना विधान

सामग्री– **गुरु-कृपा माल्य, स्फटिक माला, श्रीयत्व फल (२७), गुरु चित्र, गुरु यन्त्र।**

दिवस – २१ अप्रैल ९५

समय – प्रातः - ४ से ८ बजे के मध्य
दोपहर - ११.३० से २.३० तक
सांय - ९.२५ से १२.१५ तक

इन तीनों विशिष्ट मुहूर्तों में से किसी भी मुहूर्त में आप साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।

विधि–

२१ अप्रैल से एक दिन पूर्व ही पूजा-कक्ष को धोकर स्वच्छ करें तथा फूल मालाओं से सुसज्जित करें। पूजन के लिए एक गुलाब के पुष्पों की माला अथवा अन्य कोई सुगन्धित माला ले आएं तथा अपनी सामर्थ्यानुसार फल तथा मिठाइयां ले आएं। २१ अप्रैल को विविध सुस्वादु भोजन बनाएं।

निर्धारित मुहूर्त में अपने आसन पर आकर बैठ जाएं तथा पूजन प्रारम्भ करें।

पूजन क्रम –

पवित्रीकरण

सर्वप्रथम बाएं हाथ में जल लेकर उसे दाईं हथेली से ढककर निम्न मंत्र पढ़ें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इस अभिमंत्रित जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, जिससे आन्तरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमन

मन, वाणी, अन्तःकरण की शुद्धि के लिए पंचपात्र से आचमनी द्वारा जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ पीयें—

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

"ऐश्वर्य काम धर्मोश्रय मूले गुरौर्वा"

जीवन में ऐश्वर्य, पुत्र, यौवन, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति गुरु को हृदय में पूर्णता के साथ धारण करने से ही सम्भव है।

— ध्यान, धारणा और समाधि

शिखा बन्धन

तदुपरान्त शिखा पर दाहिना हाथ रखकर दैवी शक्ति की स्थापन करें, जिससे साधना पथ में प्रवृत्त होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके—

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

न्यास

इसके उपरान्त मंत्रों के द्वारा अपने सम्पूर्ण शरीर को साधना के लिए पुष्ट व सबल बनाएं। प्रत्येक मंत्र उच्चारण के साथ सम्बन्धित अंग पर जल का स्पर्श करें—

ॐ वाङ्ग मे आस्येऽस्तु – मुख पर
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु – नासिका के दोनों छिद्रों पर
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु – दोनों नेत्रों पर
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु – दोनों कानों पर
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु – दोनों बाजुओं पर
ॐ अरिष्टानि मे अंगानि सन्तु – सम्पूर्ण शरीर पर

दिशा बन्धन

बाएं हाथ में जल या चावल लेकर, दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में व ऊपर - नीचे छिड़कें—

ॐ अपसर्पन्तु ये भूताः ये भूताः भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।

गणेश जी का स्मरण

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करें, प्रत्येक कार्य करने के पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण सिद्धिदायक माना गया है—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

गणपति पूजन के पश्चात् गुरु-ध्यान करें

ध्यान

येनोदारातपः चयेन सततं सन्यस्तमाभूषितं,
ब्रह्मानन्द रसेन सिक्तमनसा शिष्याश्च संभाषिताः।
ब्रह्माण्डं नवराग रंजितवपुः हस्तामलमकवद्धृतं
सोऽयंभूतिविभूषितः गुरुवरः निखिलेश्वरः पातु मां।
श्री ब्रह्मस्वरूपाय निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

आह्वान

सर्वात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः आह्वानं समर्पयामि।

आसन

शिष्यप्रियाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः आसनं समर्पयामि।

अर्घ्य स्नान

विज्ञानात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, स्नानं च समर्पयामि।

वस्त्र, चन्दन, अक्षत

तत्त्वमस्यादि लक्ष्यात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः वस्त्रं, चन्दनम्, अक्षतान् च समर्पयामि।

पुष्प, बिल्वपत्र

परमानन्दरूपाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः पुष्पं, बिल्वपत्रं, पुष्पहारं च समर्पयामि।

धूप दीप

गुणमयातीताय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः धूपं, दीपं, नैवेद्यं, च निवेदयामि।

(एक थाली में समस्त भोज्य पदार्थ तथा फल को सजा कर भोजन ग्रहण करने का निवेदन करें)।

ताम्बूल

देहध्यासातीताय श्री परमपुरुषाय निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः ताम्बूल, दक्षिणा द्रव्यं च समर्पयामि।

नीराजन

कालमयातीताय सर्वदेवमयाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः, नीराजनं, प्रदक्षिणां च समर्पयामि।

उपरोक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार उसमें वर्णित सामग्रियों को श्री गुरुदेव के सम्मुख अर्पित करें। **"गुरु-कृपा माल्य"** को गले में धारण कर **"स्फटिक माला"** से गुरु-मंत्र का तीन, सोलह, इक्कीस या एक सौ आठ (अपनी सामर्थ्यानुसार) मंत्र-जप सम्पन्न करें।

गुरु मंत्र–

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

मंत्र-जप समाप्ति के उपरान्त हवन के लिए अग्नि प्रज्वलित करें तथा निम्न मंत्र बोलते हुए, सुख, सम्पदा व सिद्धि प्रदायक, **"श्रीयत्व फल"** को एक-एक कर अग्नि में समर्पित करें –

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।
ॐ भुवनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ परमेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ भाग्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ योगेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ वागीश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ पूर्णेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ मंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ तंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ यंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ व्याप्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ श्रींशेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं शेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ क्लींशेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ तपसेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ कालेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ निखिलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ यजनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ लेखेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ करुणेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ मदनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ सकलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ ज्ञानेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ दिव्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ सिद्धेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ अमलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ इच्छेश्वराय नमः स्वाहा।

तत्पश्चात गुरु-आरती सम्पन्न करें तथा आसन पर शांत चित्त से बैठ कर, गुरुदेव से हाथ जोड़ कर अपनी गलतियों के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हुए, गुरुदेव की कृपा-प्राप्ति की कामना करें।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने से निश्चित रूप से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। गुरु-चित्र व यन्त्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, स्फटिक माला को नित्य पूजन के लिए प्रयोग करें।

त्रिवेणी का महाश्मशान

● विश्वनाथ यादव

उड़ीसा के स्वाधीन हिंदू राजा हरिचरण मुकुंद देव (१५६०-१५६५ ई०) ने मुगल बादशाह अकबर से संधि कर १५६५ ई०में बंग देश पर आक्रमण किया तथा पठानों को पराजित कर अपने राज्य की सीमा सप्तग्राम तक विस्तृत कर ली। बंग विजय की स्मृति अक्षुण्ण रखने के लिए उसने स्मारक-स्वरूप त्रिवेणी में, गंगा के तट पर एक घाट का निर्माण करवाया। इस तरह की सोपान, विशिष्ट घाट काशी को छोड़कर बंग देश में कहीं भी दुर्लभ नहीं। त्रिवेणी का यह घाट "मुकुंद देव घाट" के नाम से प्रसिद्ध है।

त्रिवेणी के इसी मुकुंद देव घाट पर उस दिन शास्त्रार्थ हो रहा था। भोलानाथ कंठाभरण नामक एक पंडित ने त्रिवेणी आकर साधक जगन्नाथ को शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। आसपास के बहुत से पंडित व विद्वान इस शास्त्रार्थ को देखने-सुनने के लिए उपस्थित हुए थे।

दो दिन, दो रात्रि कुछ विश्राम का समय छोड़ लगातार शास्त्रार्थ होता रहा। दोनों पंडितों में से किसी ने भी हार स्वीकार नहीं की। दोनों में से किसी ने भी न आहार ग्रहण किया और न निद्रा देवी को पास फटकने दिया। मुकुंद देव घाट पर उपस्थित ब्राह्मणों व विद्वानों की भीड़ दोनों पंडितों के मध्य हो रहे शास्त्रार्थ से क्षण भर के लिए भी उदासीन नहीं हुई थी।

शास्त्रार्थ के मध्य ही एक समय कोलाहल हुआ। घाट पर उपस्थित लोगों में गुंजन हुआ। कानों- कान सभी को खबर मिल गई, कि बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देव राय शास्त्रार्थ देखने आ रहे हैं। घाट पर उपस्थित लोगों ने रास्ता बना दिया, कुछ ही देर में बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देवराय ने दोनों हाथ जोड़े ब्राह्मणों के मध्य से होते हुए, दोनों शास्त्रार्थ कर रहे पंडितों के पास पहुंच बारी-बारी से झुक कर उन्हें प्रणाम किया, फिर उन्होंने दोनों हाथ जोड़े हुए ही चारों तरफ दृष्टि फेंक, घाट पर शास्त्रार्थ देखने आए विद्वानों, पंडितों व ब्राह्मणों को प्रणाम कर कहा—विद्वत समाज मेरा प्रणाम स्वीकार करें, कहा गया है—

न माधव समो देवो, न च गंगा समः नदी
न तीर्थ त्रिवेणी सदृशं क्षेत्र भक्ति जगामये।

– ब्रह्म पुराण

(माधव सदृश देवता नहीं, गंगा सदृश दूसरी नदी नहीं एवं तीनों जगत में त्रिवेणी सदृश पूज्य क्षेत्र और कहीं नहीं।)

आज इसी त्रिवेणी के पवित्र घाट पर शास्त्रार्थ होने से इसकी महिमा और भी बढ़ गई है। त्रिवेणी सरस्वती के तट पर अवस्थित है, अतः हम गर्व से कहते हैं कि हम सब मां सरस्वती की गोद में बैठे हैं। सरस्वती को पार कर किसी पंडित को दिग्विजयी होने की आवश्यकता नहीं रहती।"

मुकुन्द देवघाट पर बैठे ब्राह्मण समाज ने बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देव राय की तरफ प्रशंसा से देखा। ब्राह्मणों को आत्म संतुष्ट पा राजा गोविन्द देवराय ने पुनः कहा— "बंग देश में संस्कृत शिक्षा के लिए नवद्वीप, भाटपाड़ा, गुप्तपाडा और त्रिवेणी यह चार

स्थान विशेष प्रसिद्ध हैं। इसमें त्रिवेणी का अलग महात्मय है। **प्राचीनकाल से ही यहां मकर संक्रान्ति, विष्णु संक्रान्ति, दशहरा, वारुणी, अभ्युदय योग, सूर्य और चन्द्रग्रहण के उपलक्ष में भक्तजनों का समावेश होता रहा है। आज हो रहे इस शास्त्रार्थ से त्रिवेणी की महिमा में और भी वृद्धि होगी।"**

उपस्थित ब्राह्मण-समाज ने प्रसन्न होकर बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देवराय की तरफ देख साधु! साधु! जयघोष किया। इस पर उत्साहित हो राजा गोविन्द देवराय ने हाथ जोड़े ही कहा— "मैं देव-द्विज भक्त बांसबेड़िया का राजा गोविन्द देवराय आज आपसे एक प्रार्थना करने आया हूं।"

ब्राह्मण-समाज ने उत्सुक हो राजा की तरफ देखा। इस पर राजा गोविन्द देवराय ने उपयुक्त समय देख हाथ जोड़े ही विनम्र स्वर में कहा— "पंडितगण! दोनों शास्त्रार्थ कर रहे विद्वान दो दिन व दो रात्रि से लगातार शास्त्रार्थ कर रहे हैं, आहार व निद्रा को विसर्जन दें। ब्राह्मण निराहार रहे तो राजा को पाप लगता है। अतः मैं विनती करता हूं कि पंडित द्वय स्नान कर आहार ग्रहण कर लें, फिर कुछ समय तक निद्रायापन कर पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ करें।"

राजा गोविन्द देवराय की देव द्विज भक्त के रूप में ख्याति थी। ब्राह्मणों में वह लोकप्रिय था, फिर राजा का अनुरोध आदेश के समान होता है, फलस्वरूप कुछ समय के लिए शास्त्रार्थ रुक गया।

बांसबेड़िया की राजा के तरफ से आहार की व्यवस्था की गयी। दोनों शास्त्रार्थ कर रहे ब्राह्मणों ने स्नान कर आहार ग्रहण किया। बाकी ब्राह्मणों के भी आहार की व्यवस्था की गयी थी। उन्होंने स्नान कर आहार के सुयोग को नष्ट नहीं किया। तय हुआ कि दूसरे दिन सूर्योदय के संग-संग पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ कर दिया जायेगा।

दूसरे दिन सूर्योदय होने के संग-संग पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। दोनों पंडित अपनी विद्वता की झोली को खोले बैठे थे। उपस्थित ब्राह्मण समाज दोनों की विद्वता पर मुग्ध था। **सात दिन तक चलने वाले इस शास्त्रार्थ के अंतिम दिन अपराह्न को पंडित जगन्नाथ ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। भोलानाथ कंठाभरण के अनुयायियों ने उसकी जय-जयकार करनी शुरू कर दी। जगन्नाथ पंडित का मस्तक नीचे झुका हुआ था।** ब्राह्मण समाज को सुना कर भोलानाथ कंठाभरण ने गर्व से कहा — "राजा कृष्ण देवराय ने ठीक ही कहा है, सरस्वती को पार कर किसी को दिग्विजयी होने की आवश्यकता नहीं रहती। अतः मैं त्रिवेणी से वर्द्धमान जा रहा हूं।"

भोलानाथ कंठाभरण विजय माला पहन, ब्राह्मण समाज को हाथ जोड़ प्रणाम कर अपने अनुयायियों के साथ वापस लौट गया। एक-एक कर घाट पर उपस्थित सभी ब्राह्मण चले गए। किसी ने भी जगन्नाथ की तरफ दृष्टि नहीं फेंकी। जगन्नाथ भी जानते थे— उगते सूरज को सभी नमस्कार करते हैं, डूबते सूरज को कोई नहीं पूछता। आज उनका मान-सम्मान सभी अस्ताचल हो चुका है। आज की पराजय ने उन्हें मर्मान्तिक कष्ट दिया था।

संध्या को रात्रि की कालिमा ने डस लिया, जगन्नाथ उसी तरह त्रिवेणी के मुकुन्द देव घाट पर बैठे रहे। जगन्नाथ पंडित की पराजय का सम्वाद तब तक चतुर्दिक प्रसारित हो गया था। गृह लौटने में विलम्ब होते देख उनका भृत्य रामदास उन्हें खोजते-खोजते घाट पर पहुंचा तथा उन्हें वहां बैठे देख कहा— "बाबा, घर चलो। मां अधीर हो आपकी प्रतीक्षा कर रही है।"

वृद्ध जगन्नाथ पंडित ने अपने भृत्य के स्वर को पहिचान विषन्नता से कहा— "रामदास! तुम आये तो हो. . . किंतु मैं तो अब गृह वापस नहीं लौट सकता।"

— क्यों बाबा?

—"आज के शास्त्रार्थ में पराजित होने से मेरी काफी सम्मान हानि हुई है। मैं जन-समाज को कैसे अपना मुंह दिखाऊंगा।"

— "बाबा! मां का क्या होगा? आपके वापस नहीं लौटने पर वे तो सिर पटक कर प्राण दे देंगी।"

—"रामदास! ब्राह्मणी को अभी भी जीवित रहना होगा। वह गर्भ से है।"

—"तब तो आपको अभी तुरंत मेरे साथ घर चल देना चाहिए।"

—"नहीं, रामदास! मेरे पास तो सिर्फ एक ही वस्तु थी, वह था "सम्मान"। उसे पाने के लिए मैंने सतत् अध्ययन किया, कठोर परिश्रम किया। उसे खोकर मैं जीवित रह ही कैसे सकता हूं।"

—"बाबा, ऐसा न कहें।"

—"रामदास, मेरे पास समय बहुत कम है। मैंने निश्चय कर लिया है कि अपना मुख जन-समाज को अब और नहीं दिखाऊंगा। अतः मैंने प्राण त्याग देने का निश्चय कर लिया है।

रामदास यह सुन क्रन्दन करने लगा। इस पर वृद्ध जगन्नाथ पंडित ने कहा— "रामदास! यह रोने का समय नहीं है। मेरी बातें ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें एक गुरुत्व पूर्ण कार्य सौंपना चाहता हूं।"

रामदास ने वृद्ध जगन्नाथ की तरफ देखा। इस पर जगन्नाथ ने कुछ निर्णय ले कहा— "रामदास! मैं तुम्हें अपने पुत्र के समान स्नेह करता हूं। मुझे ज्ञात है, तुम भी मुझे पिता के समान भक्ति व प्रेम करते हो। कहो रामदास! क्या तुम इस कार्य का भार लोगे?"

रामदास ने जगन्नाथ पंडित का चरण स्पर्श कर अपना

समर्थन दिया। इस पर संतुष्ट हो जगन्नाथ पंडित ने रामदास को गंगा-स्नान कर आने को कहा।

रामदास के गंगा-स्नान कर आने पर जगन्नाथ पंडित ने उसके कान में महामंत्र प्रदान कर गंभीर स्वर में कहा—" रामदास! आज से मैं तुम्हारा गुरु हुआ और तुम मेरे शिष्य। इस महामंत्र को तुम अच्छी तरह से कंठस्थ कर लेना।

रामदास ने सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की। इस पर जगन्नाथ पंडित ने पुनः कहा—"रामदास! शास्त्रार्थ में पराजित होने का कारण है कि मैं **गणेश सिद्ध** हूं और भोलानाथ कंठाभरण **महाविद्या तारा मां सिद्ध**। गणेश भी कहीं मां से जीत सकते हैं। अतः मुझे पराजय स्वीकार करनी पड़ी, इस पराजय की ग्लानि से मुक्त होने के लिए मुझे प्रतिशोध लेना होगा।"

जगन्नाथ पंडित के चुप हो जाने पर रामदास ने प्रश्नात्मक दृष्टि से उनकी तरफ देखा। इस पर जगन्नाथ पंडित ने रामदास के कंधे पर हाथ रख स्नेह भरे स्वर में कहा—

"रामदास, ब्राह्मणी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न होगा। तुम्हें उस पुत्र की देखभाल करनी होगी। उसका उपनयन-संस्कार कर जो महामंत्र मैंने तुम्हें प्रदान किया है, उसे मेरे पुत्र को प्रदान करना। त्रिवेणी के इस महाश्मशान में इस महामंत्र के बदौलत साधक बनकर मेरे पुत्र को महाविद्या काली सिद्ध होने के लिए शव-साधना कराना। मेरी आत्मा हमेशा तुम लोगों के संग रहेगी।"

जगन्नाथ पंडित ने दूर क्षितिज की ओर दृष्टि निक्षेप की, उनके नेत्र चमक रहे थे, आह्लादित हो उन्होंने फिर कहा—

"रामदास, भगवती से आशीर्वाद पा, भोलानाथ कंठाभरण को त्रिवेणी के इसी मुकन्द देव घाट पर मेरे पुत्र की तरफ से शास्त्रार्थ के लिए आह्वान करना। **जिस दिन मेरा पुत्र भोलानाथ कंठाभरण को परास्त करेगा, उसी दिन मैं पराजय की कालिमा से मुक्त हो जाऊंगा। उसी दिन मेरी आत्मा शांति प्राप्त कर परमात्मा में विलिन हो जायेगी।** "

इसके बाद जगन्नाथ पंडित ने रामदास के कान में कुछ और मंत्र प्रदान कर उसे गृह वापस लौट जाने का निर्देश दिया। अर्द्धरात्रि को जगन्नाथ पंडित के आदेश पर ब्राह्मणी उनसे मिलने मुकुन्द देव घाट पर आयी, तथा उनसे आशीर्वाद ले वापस लौट गयी।

दूसरे ही दिन सुबह जगन्नाथ पंडित ने शरीर का त्याग कर दिया।

प० बंगाल के हुगली जिला के अर्न्तग़त कलकत्ता से ४५ मील दूर त्रिवेणी अतीत से ही एक श्रेष्ठ तीर्थ क्षेत्र के रूप में ख्याति प्राप्त करता आ रहा है। गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीन नदियों के मिलन-स्थल को त्रिवेणी कहा जाता है। प्रयाग (इलाहाबाद) में गंगा-यमुना और सरस्वती का मिलन हुआ है, अतः उक्त स्थान को त्रिवेणी कहते हैं, जो कि "युक्तवेणी" है, प० बंगाल के हुगली जिला के अन्तर्गत त्रिवेणी को ही "मुक्तवेणी" कहा जाता है, क्योंकि यहां ये तीनों नदियां मुक्त होकर विभिन्न दिशाओं में चली गई हैं।

(शेष अगले अंक में)

२४, २५, २६ और २७ फरवरी १९९५

उज्जैन

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर

इस शिविर में सम्पन्न कराये जाएंगे अद्वितीय प्रयोग व देह सुख, निरोगता व ऐश्वर्य प्रदायक साधनाएं

(१) महामृत्युञ्जय साधना
(२) महालक्ष्मी साधना
(३) कात्यायनी कामना सिद्धि प्रयोग

प्रदान की जाएंगी दुर्लभ दीक्षाएं

(१) ऊर्ध्वपात दीक्षा
(२) त्रिनेत्र जागरण दीक्षा

अन्य विशिष्ट दीक्षाएं जो आपके लिए लाभप्रद हैं, इन दुर्लभ अवसरों को खोना नहीं है, हर एक पल को पूर्ण चैतन्यता से जीना है, इसलिए इस शिविर में आप में से प्रत्येक को भाग लेना अनिवार्य है।

सम्पर्क

श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव जी
श्री के. आर. कुर्रे, बजरंग चौक, रायपुर, फोन - 533479
श्री गोविन्द लाल सोनी, आलोट, रतलाम
श्री टी० सुब्बाराव, 4/1 सी. पी. आर. आई. कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-589282
श्री विजय चौहान, काली देह गेट, उज्जैन

– विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन - 0291-32209, फेक्स - 0291-32010

आपके जीवन में सौभाग्यप्रद अवसर

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

एवंम्

श्री नन्द किशोर श्रीमाली जी

के आशीर्वाद तले . . .
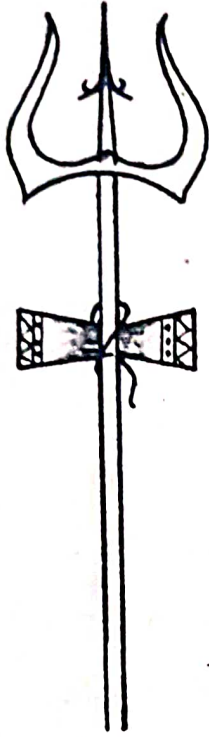
महामृत्युञ्जय साधना शिविर

दिनांक २४ से २७ फरवरी १९९५ तक

दुर्लभ साधनाएं -

१. महामृत्युञ्जय साधना
२. महालक्ष्मी साधना
३. कात्यायनी काम्य सिद्धि प्रयोग

विशिष्ट दीक्षाएं -

१. ऊर्ध्वपात दीक्षा
२. त्रिनेत्र जागरण दीक्षा
३. अन्य विशिष्ट दीक्षाएं जो आप के लिए लाभदायक हैं।

शिविर शुल्क : ६६०/-

साथ ही . . .

पूज्य गुरुदेव व उज्जैन के श्रेष्ठ पण्डितों द्वारा भूत-भावन भगवान महाकालेश्वर का भव्य रुद्राभिषेक तथा पूर्ण विधान युक्त चारों वेदों से पारदेश्वर पूजन।

आयोजन स्थल : महाकालेश्वर मंदिर के निकट, उज्जैन

सम्पर्क

1- श्री टी० सुब्बाराव, 4/1 सी. पी. आर. आई. कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-589282
2- श्री पूर्णेश चौबे, जी-5, कुक्षी, धार (म.प्र.)
3- श्री ओम प्रकाश शर्मा, 321,अम्बेडकर नगर, होटल सुहाग के पीछे, इन्दौर, फोन - 21030 (P.P.)
4- श्री विजय गुप्ता, कालानी नगर, इन्दौर, फोन-412400
5- श्री अमित सक्सेना एवं निखिल वाणी टीम, भोपाल
6- श्री ब्रज मोहन चौहान, सब-इंजीनियर, खातेगांव

क्या मध्यावधि चुनाव निकट भविष्य में सम्भव है?
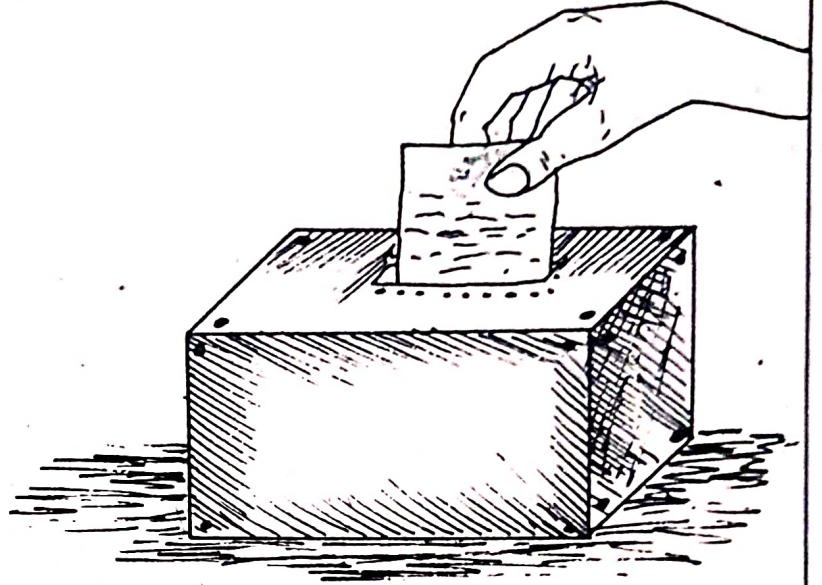
इन दिनों राजनैतिक सरगर्मियां बढ़ गई हैं, दक्षिण में जो कांग्रेस की स्थिति हुई है, वह अपने-आप में अत्यधिक चिन्ताजनक है, और जैसे सब कुछ उथल-पुथल हो रहा है, जहां बहुत अधिक उम्मीद थी, वहां बहुत कम सफलता मिल पाई, जिन पार्टियों की उम्मीद ही नहीं थी, वे पार्टियां वहां सफलता की ओर बढ़ीं और उन्होंने अपना शासन स्थापित किया, ऐसी स्थिति में ज्योतिष का आंकलन ज्यादा आवश्यक है, ज्योतिष के विद्वानों और पण्डितों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है, कि शायद निकट भविष्य में ही मध्यावधि चुनाव हो।

मध्यावधि चुनाव के लिए यह आवश्यक है, कि भारत की जन्मकुण्डली और देश के शीर्षस्थ व्यक्ति की जन्मकुण्डली का सूक्ष्मता से अध्ययन करें, तो यह स्पष्ट हो सकता है, कि आने वाले समय में राजनीति किस तरफ करवट ले सकती है।

इन दोनों ही स्थितियों का आंकलन और अध्ययन करने पर ऐसा लगता है, कि यह जो निःश्रृंखलता है, यह जो अस्थिरता है, यह जो मानसिक द्वन्द्व है, यह जो ऊहापोह है, यह फिलहाल कुछ समय तक रह सकता है। १५ जनवरी को मकर संक्रान्ति के बाद स्थिति में अनुकूलता आने के लक्षण हैं, परन्तु तब तक तो काफी समस्याएं बढ़ने की सम्भावना है, पर इसके साथ ही साथ यह भी देखना पड़ रहा है, कि क्या अन्य कोई ऐसी राष्ट्रीय पार्टी है, जो दक्षिण में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर सके? क्या दक्षिण में कांग्रेस की हार से दूसरी राष्ट्रीय पार्टी को विशेष लाभ पहुंचा है? और इस बात का भी अध्ययन करना पड़ेगा, कि

क्या इन दिनों या निकट भविष्य में उत्तर भारत में यदि चुनाव कराए जाएं, तो किस पार्टी को ज्यादा लाभ हो सकता है?

मध्यावधि चुनाव कराने की स्थिति में कांग्रेस पार्टी ही है? देश के प्रधानमंत्री चाहें, तो मध्यावधि चुनाव सम्पन्न करवा सकते हैं, और वे न चाहें, तो मध्यावधि चुनाव नहीं भी हो और पूरा कार्यकाल सम्पन्न होने के बाद ही ठीक समय पर चुनाव हो। इन दोनों ही स्थितियों का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है, कि बृहस्पति, वृश्चिक राशि में जाने के बाद से काफी कुछ परिवर्तन होने लगे हैं। मंगल की राशि में बृहस्पति का गोचर होना, अपने-आप में अस्थिरता की तरफ संकेत प्रदान करता है, मगर यह अस्थिरता ज्यादा से ज्यादा १५ अप्रैल तक भी आ सकती है, क्योंकि ज्यों ही सूर्य मंगल की राशि अर्थात् मेष राशि पर आयेगा, तब गुरु और सूर्य दोनों ही मंगल की राशि में होंगे और वे दोनों ही ग्रह अस्थिरता की ओर संकेत देते हैं, ऐसा लगता है, कि वर्तमान समय से अप्रैल के अंत तक थोड़ी बहुत अस्थिरता बनी रहेगी, ऊहापोह रहेगी, कई प्रकार के नए आंकलन होंगे, और ऐसा लगेगा, कि शायद भविष्य में ही चुनाव हो जाए, मगर यह स्थिति अप्रैल के अंत तक ही रह सकती है।

अप्रैल के बाद स्थिति में परिवर्तन आयेगा और उत्तर भारत में स्थिति सभी पार्टियों की लगभग बढ़ेगी, मगर कोई भी पार्टी आज इस स्थिति में नहीं है, कि वह मध्यावधि चुनाव को झेल सके। मध्यावधि चुनाव के लिए संगठन की आवश्यकता है, मध्यावधि चुनाव के लिए जनता का रुख देखने और समझने की आवश्यकता है, और इस समय जो राष्ट्रीय पार्टियां हैं, वे इस लिहाज से सफल नहीं हैं, कि वे अचानक इस मध्यावधि चुनाव को झेल सकें।

प्रश्न यह उठता है, कि क्या ऐसी स्थिति में कांग्रेस एकदम से सभी पार्टियों को भौचक्का करके मध्यावधि चुनाव करा सकती है? यदि कांग्रेस पार्टी की जन्मकुण्डली देखें, तो उस समय सूर्य और मंगल की स्थिति सामान्यतः अनुकूल है, और कुछ समय तक अस्थिरता प्रदान कर सकती है, मगर अप्रैल के बाद से इन्हें अनुकूलता प्राप्त होने लग जाएगी, और वह स्थिति ऐसी होगी, कि मध्यावधि चुनाव की सम्भावनाएं धीरे-धीरे न्यून होती रहेंगी तथा जून तक सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी, और यह इस बात को स्पष्ट करती है, कि यह पार्टी और देश स्थिरता की ओर अग्रसर होने लगेगा, जो पिछले समय में एक परिवर्तन आया, जो डांवाडोल स्थिति बनी, उसका सुधार हो पायेगा, और यह

अप्रैल के बाद जून तक इस बात की सम्भावनाएं ज्यादा प्रबल हो जाएंगी कि मध्यावधि चुनाव न देश के लिए हितकर है न किसी पार्टी के लिए, तो . . . . ?

स्पष्ट होने पर, कि किसी भी समय मध्यावधि चुनाव हो सकते हैं, सम्भावनाएं धूमिल हो जायेंगी।

कुल मिलाकर भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस और अन्य पार्टियों की जन्मकुण्डलियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करते हैं, तो इस अध्ययन से यह पता चलता है, कि सारी पार्टियां अपना-आपना गणित और हिसाब-किताब लगाने में जुटी हुई हैं। केवल अप्रैल तक ही ऐसी स्थिति रहेगी, परन्तु अप्रैल के बाद जून तक इस बात की सम्भावनाएं ज्यादा प्रबल हो जायेंगी, कि मध्यावधि चुनाव न देश के लिए हितकर है और न किसी भी पार्टी के लिए अनुकूल, इसलिए लड़खड़ाता हुआ समय फिर संभल जायेगा और मध्यावधि चुनाव नहीं हो पायेगा।

जन्मकुण्डली के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है, कि आने वाले ठीक समय पर ही चुनाव होंगे, और उस समय तक देश संगठित होकर सफलता की ओर अग्रसर होगा, यह सारी गणित, यह सारा आंकलन, ये सारे विचार अपने-आप में धूमिल हो जाएंगे और एक बार फिर देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

ज्योतिष इस बात की ओर संकेत करता है, कि निकट भविष्य में मध्यावधि चुनाव होने की कोई सम्भावना नहीं है, चुनाव ठीक समय पर ही होंगे, और तब तक देश में अस्थिरता समाप्त हो पायेगी, अनुकूलता आ पायेगी।

हम अगले किसी अंक में एक बार पुनः इस बात का आंकलन करेंगे, कि सभी पार्टियों का आने वाला समय किस प्रकार का है? देश के शीर्षस्थ व्यक्ति की जन्मकुण्डलियां क्या कहती हैं? और ग्रहों की गति से कौन व्यक्ति ज्यादा सुदृढ़ बनकर देश को गतिशील करने में समर्थ हो पाता है?

ये प्रश्न प्रत्येक व्यक्ति के मानस में है, और प्रत्येक भारतीय इन प्रश्नों के उत्तर ज्योतिष की दृष्टि से जानने के लिए उत्सुक है। हम अगले ही अंक में इन सारी घटनाओं का विस्तार से आंकलन करके बतायेंगे, कि देश के प्रधानमंत्री के लिए कौन-कौन व्यक्ति ज्यादा मजबूत और सुदृढ़ हो करके आगे बढ़ सकेगा? देश की भूमिका किस प्रकार की रहेगी और चुनाव के बाद में स्थिति क्या बन सकेगी? कौन-कौन पार्टी ज्यादा उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगी, इन सारे प्रश्नों के उत्तर आप अगले किसी अंक में पढ़ सकेंगे।

— दिव्य चक्षु

जिसकी अधिकतम प्रतियां विदेशों में भेजी जाती हैं . . .

MANTRA

TANTRA YANTRA VIGYAN

संरक्षक : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक पत्रिका
पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के अवसर पर
पाठकों के अत्यन्त अनुरोध पर
त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका

जिसमें है–

- जीवन के बहुमुखी उत्थान के लिए प्रामाणिक व उपयोगी साधनाएं, योग, चिकित्सा, सौन्दर्य और ज्योतिष
- इसके पूर्व प्रकाशित दो संस्करण ''भगवती जगदम्बा विशेषांक'' तथा ''महालक्ष्मी विशेषांक'' जिसका पाठकों ने अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया।

आपके जिज्ञासा को ध्यान में रख कर प्रस्तुत है इस बार . . .

TANTRA SPECIAL

इस विशेषांक के आकर्षण है –

- **The Myths & the baseless . . .**
- **Beginning of a New Life**
- **Guhya Kali Sadhana**
- **Read YOur own hand**
- **Yes! we have experienced divinity**
- **Life after Death**

आप अपनी प्रति निकटतम बुक स्टालों से प्राप्त करें न मिलने पर लिखें –

Mantra Tantra Yantra Vigyan
Dr. Shrimali Marg,
High Court Colony, Jodhpur (Raj.)
Ph. : 0291-32209
Fax : 0291-32010

Siddhashram
306, Kohat Enclave,
Pitampura, New Delhi-34,
Ph : 011-7182248
Fax : 011-7186700

राशिफल

मेष - रुका हुआ पैसा आएगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा तथा पारिवारिक तनाव की समाप्ति होगी, गलत निर्णय लेने से हानि हो सकती है, शुभ चिंतकों की सलाह पर ध्यान दें, किसी दुःखद स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, इस माह में १, १८, २२, २७ तारीखें आपके लिए विशेष अनुकूल सिद्ध होंगी, साधनात्मक दृष्टि से यह समय अत्यन्त ही शुभ एवं सफलतादायक है, मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी, कारोबारी यात्रा आपके लिए विशेष फलप्रद, जिस कार्य को आपने हाथ में लिया है उसी को करें, लाभ होगा, नए संम्पर्क भविष्य में लाभ देने वाले होंगे, सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, प्रेम करने वालों के लिए समय अनुकूल रहेगा, मुकदमे की स्थिति अनुकूल नहीं।

वृषभ - किसी के बहकावे में आकर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, राज्य पक्ष की तरफ से आर्थिक लाभ सम्भव, राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का विकास होगा, शत्रु आपके पक्ष में होंगे, पत्नी पक्ष की ओर से निराशा, स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, सामान्य यात्रा योग, यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, किसी से अपने मन की बात न कहें, मित्र वर्ग से अथवा अपने ही किसी सम्बन्धी से विश्वासघात हो सकता है, व्यय की अधिकता से तनाव होगा, समय पर काम होगा, प्रयत्न जारी रखें, परिवार की ओर विशेष ध्यान दें, आलस्य का त्याग करें, सट्टे आदि पर व्यर्थ व्यय न करें।

मिथुन - समय को पकड़ कर चलें, ढुलमुल चलने से हानि हो सकती है, कठोर परिश्रम करें, सोमवार आपके लिए अनुकूल रहेगा, मकान-दुकान का क्रय-विक्रय सम्भव, धन को अचल सम्पत्ति में लगा सकते हैं, वाहन को ध्यानपूर्वक चलाएं; दुर्घटना का योग प्रबल है, शत्रुओं से सावधान रहें, पीछे से वार कर सकते हैं, पारिवारिक उपेक्षा से मन खिन्न रहेगा, इस माह में ७, १२, १६, २४, २८ तारीखें आपके लिए अनुकूल कही जा सकती हैं, किसी ऐसे व्यक्ति से सम्पर्क जो आगे चलकर आपके लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, किसी की आर्थिक मदद करनी पड़ेगी, धार्मिक कार्यों के सम्पन्न होने के योग, समाज में प्रतिष्ठा बनेगी, कला-जगत के व्यक्ति धन लाभ की स्थिति में रहेंगे, साधक वर्ग के लिए समय प्रतिकूल रहेगा, पद व सम्मान की प्राप्ति होगी, यात्रा स्थगित करें।

कर्क - अधिकारियों से वाद-विवाद की स्थिति में शांति रखें, कोई नवीन मुकदमा हो सकता है, घर में कोई रचनात्मक कार्य करने पर विशेष लाभ एवं शांति, यात्रा अनुकूल एवं सुखद रहेगी, किसी से व्यर्थ के विवाद में पड़ने से हानि, नया सम्पर्क भविष्य में फलदायी सिद्ध होगा, व्यापारिक मतभेद हो सकते हैं, संतान पक्ष से चिंताजनक समाचार, मित्रों का व्यवहार अनुकूल रहेगा, रुका हुआ धन प्राप्त होने के अवसर, अपना कार्य निकालने के लिए मधुरता का सहारा लेना होगा, सफेद रंग की वस्तुओं का व्यवसाय आपके लिए विशेष रूप से फलप्रद सिद्ध होगा।

सिंह - दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का समाधान होगा, वाहन चलाते समय उतावली न करें, किसी के काम में मदद से आर्थिक संकट, किसी पुराने मित्र से सहयोग मिलेगा, विश्वासघात की स्थिति से सावधान रहें, इस माह में १, १०, १६, २८ तारीखें आपके लिए सभी दृष्टियों से शुभ रहेंगी, यात्रा अनुकूल एवं सुखद रहेगी, संतान की ओर से चिंताजनक समाचार मिलने से परेशानी होगी, आय कम तथा व्यय अधिक होने से चिंता होगी, व्यापारिक स्थिति में सुधार के लिए आपका श्रम अपेक्षित होगा, सम्बन्धियों की सहायता प्राप्त होने से रुका हुआ कार्य पूरा होगा, मांगलिक कार्यों के अवसर बनेंगे, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें, किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्ध बनेंगे, जो आपके लिए लाभकारी होंगे, कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे किसी दूसरे को चोट पहुंचे।

कन्या - यह माह आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक अनुकूल कहा जा सकता है, धार्मिक कार्यों में रुचि होगी, व्यापार की दृष्टि से यह सप्ताह सुखद, साधक वर्ग के लिए उत्तम समय, अपने काम में जुट जाएं सफलता मिलेगी, परन्तु निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, रुका हुआ पैसा आयेगा, परन्तु व्यय भार में वृद्धि होगी, व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें, स्वजनों से मतभेद होने की स्थिति में शांति बरतें, मुकदमे में विजय होगी, नवीन मुकदमों से बचें, घरेलू समस्याओं से मन उद्विग्न रहेगा, नए व्यक्ति से सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होगा, सुख-सुविधा में धन अधिक व्यय होगा।

तुला - अकस्मात् सुखद समाचार मिलने से प्रसन्नता होगी, काम में प्रगति होने से मानसिक चिन्ता मिटेगी, किसी परिचित की सहायता करने से संतोष होगा, इस माह में आपके लिए ६, १५, २२ व २४ तारीखें अनुकूल रहेंगी, कला जगत के व्यक्ति मानसिक तनाव अनुभव करेंगे, साधनात्मक दृष्टि से यह समय अनुकूल रहेगा, मांगलिक कार्यों में बाधा आने की सम्भावना, गृहस्थ-सुख में उतार-चढ़ाव बना रहेगा, मित्रों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा, आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग नहीं, व्यर्थ के धन व्यय से बचें। किसी धार्मिक कार्य के सिलसिले में यात्रा सम्भव, यात्रा अनुकूल सिद्ध होगी, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

वृश्चिक - व्यापारिक कार्यों को लेकर व्यस्तता रहेगी, मानसिक शांति बनाए रखें, व्यापार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, व्यस्तता के क्षणों में पारिवारिक दायित्वों की उपेक्षा न करें, आय के साथ-साथ खर्च में वृद्धि होगी, मांगलिक कार्य के बनने का योग, जो करना है सही निर्णय लेकर ही करें, वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें, इस माह में ६, १८, २७ तारीखें आपके लिए अनुकूल कही जा सकती हैं, पत्नी से वैचारिक मतभेद की स्थिति में शांति बरतें, स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी, अधिकारियों से मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे।

धनु - धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी, प्रेम-प्रसंग के लिए यह माह प्रतिकूल रहेगा, व्यापारिक वर्ग के लिए लाभ अर्जित करने का अनुकूल समय, लगन के साथ परिश्रम करें। ३, ६, १२, १८, २१ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी, २० व २५ तारीखें शुभ नहीं, जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें, आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग बनेंगे, पारिवारिक समस्याओं के प्रति उदासीनता न बरतें, अधिकारियों से सहयोग मिलेगा, साधनाओं के लिए अनुकूल अवसर, व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें, परिवार के किसी सदस्य के सम्बन्ध में चिंता होगी, चिकित्सा व्यय में वृद्धि होगी, नए कार्य शुरू करने का योग बनेगा।

मकर - माह का आरम्भ सामान्य ही रहेगा, जो कार्य चल रहा है उसी में लाभ होगा, नए कार्य भी आरम्भ किए जा सकते हैं, निर्णय लेने में उतावली न करें, यात्रा स्थगित करनी पड़ सकती है, आपसी मतभेद से खिन्नता होगी, स्वास्थ्य सामान्यतः अनुकूल ही रहेगा, स्थानान्तरण के अवसर निर्मित होंगे, ऋण के लेन-देन में हानि होगी, भूमि के क्रय-विक्रय का योग बन रहा है, नवीन वाहन की खरीद होगी, कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे, श्रमिक वर्ग मांगलिक कार्यों से प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

कुंभ - नए काम की योजना बनायेंगे, आर्थिक लाभ में वृद्धि होगी, मुकदमे में सफलता मिलने के अवसर बनेंगे, महत्वपूर्ण योजना में सफलता मिलेगी, संतान सुख उत्तम रहेगा, अधिक श्रम करने से स्वास्थ्य में गड़बड़ी होगी, जोखिम भरे कार्य करने वाले पारिवारिक तथा निजी समस्याओं से तनाव अनुभव करेंगे, रेल-यात्रा कष्टप्रद होगी, इस माह में ८, १७, २३, २६ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल सिद्ध होंगी, मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, स्त्री सुख उत्तम रहेगा, सोचा हुआ कार्य आसानी से पूरा होगा, अदालती मामले उलझेंगे, राज्य पक्ष की ओर से स्थिति प्रतिकूल रहेगी, अधिकारियों से व्यवहार में कार्य कुशलता बरतें।

मीन - व्यापारिक दृष्टि से यह माह मंदा ही रहेगा, परिश्रम करें। ध्यान दें २ तारीख को व्यर्थ की भाग-दौड़ और अनावश्यक खर्च होंगे, वहीं अगला दिन सभी दृष्टियों से अनुकूल होगा, इस माह में ५, १२, १८, २२, २६ तारीखें आपके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल होंगी, नए व्यापार आरम्भ करते समय उतावली न करें, सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा, धार्मिक संस्था से जुड़ना होगा, स्थिति लाभप्रद सिद्ध होगी, संतान की ओर से स्थिति में प्रतिकूलता आयेगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, प्रेम-प्रसंगों के लिए समय सामान्य ही रहेगा।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ५	बसन्त पञ्चमी	२७.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण १३	महाशिव रात्रि
०४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ५	रतिकामोत्सव दिवस	०१.०३.६५	फाल्गुन कृष्ण ३०	शिव खप्पर पूजा
०७.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ८	दुर्गाष्टमी, भीमाष्टमी	०६.०३.६५	फाल्गुन शुक्ल ०८	होलाष्टक प्रारम्भ
११.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ११	जया एकादशी	१३.०३.६५	फाल्गुन शुक्ल ११	आमला एकादशी
१४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष १४	ललिताम्बा जयन्ती	१६.०३.६५	फाल्गुन शुक्ल १४	होलिका दहन
१८.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ३	गणेश चतुर्थी	१७.०३.६५	फाल्गुन शुक्ल १५	होली
२२.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ७	कालाष्टमी	२०.०३.६५	चैत्र कृष्ण ०४	गणेश चतुर्थी
२५.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ११	विजया एकादशी	२७.०३.६५	चैत्र कृष्ण ११	पापमोचनी एकादशी

जीवन में पूर्ण सुख, समृद्धि एवं उन्नति के लिए

सर्वथा मुफ्त

उन्नति की कामना प्रत्येक व्यक्ति के मन में होती है और यह जीवन मे जरूरी भी है, क्योंकि जीवन का तात्पर्य है निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना, निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर होना, निरन्तर उन कार्यों को सम्पन्नता देना या पूर्णता देना, जो हमारे जीवन की इच्छाएं हैं।

परन्तु इस आपाधापी के युग में, इन व्यस्तता के क्षणों में, प्रतिस्पर्धा के समय में यह सम्भव नहीं है, कि व्यक्ति अपनी सारी इच्छाओं को पूर्णता दे सकें या अपने कार्यों को सफलता दे सके, उसको पग-पग पर परेशानियों का, बाधाओं का, अड़चनों का सामना करना पड़ता है, और निरन्तर रुकावटें-उसके जीवन में आती रहती हैं, वह जितना ही प्रयत्न करता है, उतनी ही असफलताएं भी उसके सामने आती-जाती रहती हैं, क्योंकि आज के युग में मित्र कम, शत्रु अधिक बढ़ गए हैं, आज के जीवन में सहायता देने वाले कम, पीठ पीछे छुरा भोंकने वाले ज्यादा बन गए हैं, आज के जीवन में उन्नति की ओर बढ़ाने वाले कम, अपितु मित्र बनकर दुश्मनी करने वाले ज्यादा बढ़ गए हैं।

ऐसे समय में क्या करें? क्या उपाय करें, क्योंकि जीवन तो एक छोटा-सा जीवन है, और इस छोटे से जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेना ही सफलता कही जाती है, चाहे हम किसी भी क्षेत्र में हों, शिक्षा के क्षेत्र में हों, राज्य सेवा के क्षेत्र में हों, व्यापार के क्षेत्र में हों, राजनीति के क्षेत्र में हों या जीवन के किसी भी क्षेत्र में हों, आवश्यकता इस बात की है, कि हम जीवन में उस ऊंचाई तक पहुंच जाएं, जो हमारे जीवन का लक्ष्य है, जो हमारे जीवन का उद्देश्य है।

परन्तु इस लक्ष्य पर पहुंचने के लिए इस प्रतिस्पर्धा और एक-दूसरे के बीच में द्वन्द्व, द्वेष, कलह की समस्याओं के बीच पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेना अत्यन्त कठिन और असम्भव सा हो गया है। यह भी सम्भव नहीं है, कि हम अपने प्रयत्नों में कोई कमी रख रहे हों, यह भी सम्भव नहीं है, कि हम किसी प्रकार की न्यूनता बरत रहे हों, परन्तु उसके बावजूद भी सफलता नहीं मिल रही है, तो कोई न कोई ऐसा उपाय होना चाहिए, जिससे कि हम कम-से-कम समय में बिना बाधाओं, बिना अड़चनों के उस पूर्ण सफलता को प्राप्त कर सकें।

और **यह निश्चित है, कि जब तक दैवी सहायता नहीं मिलेगी, जब तक मंत्र बल का सहारा नहीं होगा, जब तक किसी न किसी प्रकार का प्रयोग सम्पन्न नहीं हो पायेगा, तब तक अपने प्रयत्नों से सफलता पा लेना अत्यन्त कठिन है,** और आज के युग में यह प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, कि वह साधना सम्पन्न करे, प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, कि वह उच्चकोटि का मंत्र-जप करे या पूर्ण साधना पद्धति को अपनाए, उसके लिए यह सम्भव नहीं है, कि वह समय निकालकर सवा लाख मंत्र-जप कर सके, और अपनी समस्याओं का समाधान करे।

ऐसी स्थिति में यह पत्रिका आपके लिए सहायक बनकर प्रस्तुत है, इस पत्रिका में ऐसे कई प्रयोग हैं, जिसके माध्यम से सैकड़ों-हजारों साधकों ने लाभ उठाया है और पूर्ण सफलता प्राप्त की है, सैकड़ों-हजारों साधकों के पत्रों से यह भी ज्ञात होता है, स्पष्ट होता है, कि उन्होंने मंत्र-जप किया और उन्हें सफलता मिली।

परन्तु साथ ही साथ इस होली के अवसर पर, जबकि होली का पर्व निकट है, ऐसे समय में **''अपराजिता यंत्र''** अपने-आप में अद्वितीय यंत्र है। एक नहीं कई ग्रंथों में 'अपराजिता यंत्र' का वर्णन और महत्व स्पष्ट है, और यह बताया गया है, कि **इसे पहिनने वाला व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निश्चित रूप से पूर्ण सफलता प्राप्त करता ही है, चाहे वह व्यापार का क्षेत्र हो या राजनीति का, चाहे नौकरी का हो या प्रमोशन का, चाहे जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना, और बिना बाधाओं के, अड़चनों के अपनी मंजिल को पाप्त कर लेने के लिए इस यंत्र की महत्ता गभग सभी ग्रंथों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।**

नए वर्ष के प्रारम्भ से होली के बीच का यह जो पूर्ण समय है, वह अपने-आप में अद्वितीय समय है, इसके लिए श्रेष्ठ पण्डितों के द्वारा और पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में कुछ ऐसे अपराज्य यंत्रों का निर्माण किया गया है, जिसे धारण करने वाला व्यक्ति अपने जीवन की इच्छाओं को भली प्रकार से पूर्णत कर सके, सफलता अर्जित कर सके, प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो सके।

यह यंत्र गले में पहिना जा सकता है, अपनी जेब में रखा जा सकता है या दाहिनी भुजा पर बांधा जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है, कि यह अपने पास रखें, या अपने साथ लेकर किसी से मिलने जाए, या कोई कार्य प्रारम्भ करें, या किसी कार्य क्षेत्र में उन्नति की ओर बढ़ें, तो निरन्तर जो अचड़नें, बाधाएं आ रही हैं, वे निश्चित रूप से दूर हो सकेंगी, और हम अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगे, अपने रोगों पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकेंगे, अपनी कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त कर सकेंगे, और उन कार्यों को सम्पन्न कर सकेंगे, जो अभी तक हमारे जीवन में अधूरे रहे हैं।

उदाहरण के लिए यदि प्रमोशन नहीं हो रहा है, राज्य बाधा है, प्रयत्न करने पर भी पुत्री का विवाह नहीं हो रहा है, मकान नहीं बन रहा है, किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही है, व्यापार प्रारम्भ किया है और उसमें आर्थिक लाभ नहीं हो रहा है, निरन्तर ऋण बढ़ता जा रहा है या घर में कलह है, इन स्थितियों में यह **''अपराजिता यंत्र''** अपने-आप में वरदान स्वरूप है, विशेष रूप से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना, मुकदमों में सफलता प्राप्त करना और असफलताओं पर विजय प्राप्त करने के लिए यह 'अपराजिता यंत्र' अपने-आप में अद्वितीय है ही।

हमने यह निश्चय किया है, कि इस महत्वपूर्ण अवसर पर यह यंत्र बिना शुल्क लिए सर्वथा निःशुल्क पत्रिका साधकों को और शिष्यों को प्रदान किया जाए, इसके लिए किसी प्रकार की धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है। इस पत्रिका में ही इससे सम्बन्धित पोस्टकार्ड प्रकाशित है, उस पोस्ट कार्ड में आप स्वयं अगले दो वर्षों के पत्रिका सदस्य बन जाएं अथवा किसी मित्र को या स्वजन को पत्रिका सदस्य बना दें, फिर उसका नाम और पता पूर्णरूप से स्पष्ट लिख दें, तथा नीचे अपना नाम और पता भी लिख दें, जिससे कि आपको यह यंत्र भिजवाया जा सके। दो वर्षों का पत्रिका शुल्क ३६०/- रुपये होता है, और १६ रुपये डाक खर्च होता है। इस प्रकार यह अपराजिता यंत्र ३७६/- रुपये की वी० पी० से आपको भेजा जा सकेगा। पोस्टमैन जब भी पैकेट लेकर आपके पास आये, आप उसे यह धनराशि देकर पैकेट छुड़ा लें, और ऊपर जो आपने पता लिखा है, उसे हम दो वर्ष का पत्रिका सदस्य बनाकर उसकी रसीद आपको भिजवा देंगे, और निरन्तर दो वर्षों तक उसको प्रतिमाह यह पत्रिका प्राप्त होती रहेगी, यह आपकी तरफ से उस मित्र को एक श्रेष्ठ उपहार होगा।

यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सकेगा तथा इस यंत्र का आप दिनभर उपयोग कर सकते हैं, और फिर यह यंत्र प्राप्त कर सकते हैं सम्बन्धी या रिश्तेदार के लिए, मित्र या स्वजन के लिए, पुत्र या परिवार के प्रति सदस्य के लिए भी इस यंत्र को प्राप्त कर सकते हैं।

परन्तु ये यंत्र कम मात्रा में ही निर्मित हो सके हैं, इसलिए कुछ चुने हुए व्यक्तियों को ही या **जिनके पोस्टकार्ड पहले प्राप्त हो जायेंगे, उनको यह यंत्र भिजवाने की व्यवस्था की जा सकेगी,** यदि किसी सदस्य को यंत्र नहीं भिजवा सकें या नहीं प्राप्त कर सकें, तो इसके लिए हम पहले से ही क्षमा प्रार्थी हैं।

वस्तुतः होली के अवसर पर अपने-आप में वरदान स्वरूप इस 'अपराजिता यंत्र' को धारण करने से आप स्वयं अनुभव कर सकेंगे, कि आपने अपने जीवन में अपनी बाधाओं, अपनी समस्याओं, अपनी अड़चनों, अपनी कठिनाइयों को दूर किया है, और जीवन में पूर्ण सफलता, यश, सम्मान, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त किया है। हमें प्रसन्नता है, कि आप अपने जीवन में अपराजेय बनें, ऐसा ही आपको आशीर्वाद है।

– व्यवस्थापक

जब छोटे बालकों को विशिष्ट दीक्षा दी और उनके ललाट भव्यता से चमक उठे

आंखिन देखी

उन नन्हें बालकों को देखकर तो उनके भाग्य पर ईर्ष्या होने लगती है, कि धन्य हैं ये बालक जिन्होंने पूज्य गुरुदेव जी से उस विशिष्ट दीक्षा क्रम को प्राप्त किया, जिसके कारण उनके चेहरे पर एक अद्‌भुत लालिमा सी छा गई, ललाट भव्य एवं चमकता हुआ दिखाई देने लगा. . . उन बालकों का तो कहना ही क्या, जिन्होंने अपने भाग्य को पूज्य गुरुदेव द्वारा सोने की कलम से लिखवा लिया है, वे अब कमजोर और असहाय नहीं बन सकेंगे, क्योंकि गुरुदेव ने उन्हें अपनी प्राणश्चेतना प्रदान की है, उनकी धमनियों में अपने ही लहु को संचरित किया है।

यह केवल दीक्षा की एक सामान्य प्रक्रिया ही नहीं है, अपितु नवशिशु के इस माटी की देह में एक ऐसा बीजारोपण है,
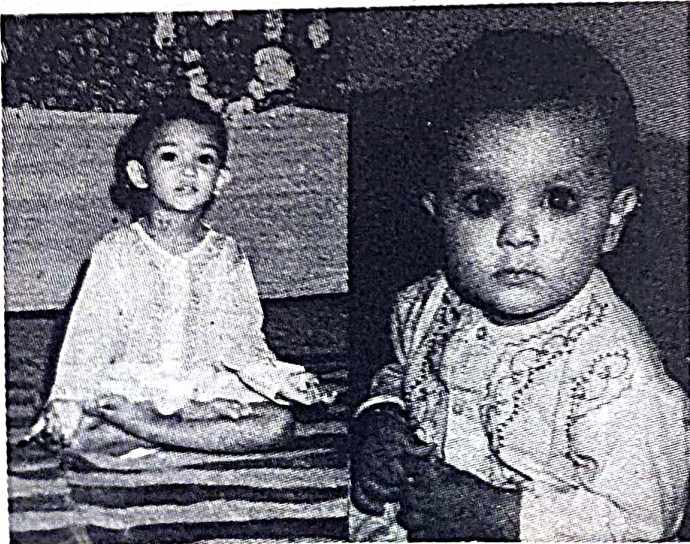
जिससे कि प्रत्येक बालक आने वाले समय में एक विशाल वटवृक्ष बनकर समाज के सामने खड़ा हो सके, और जिसकी छाया तले सैकड़ों-हजारों मनुष्य असीम तृप्ति, असीम आनन्द प्राप्त कर सकें।

किन्तु यह तभी सम्भव है, जब लोगों के मन में दीक्षा के प्रति जो आशंकाएं व्याप्त हैं, वे दूर हो सकेंगी, इसके लिए आवश्यकता है, उस दीक्षा के महत्व को समझने की, इसके लिए आवश्यकता है, उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास की। लोगों के मन की यह भ्रामक धारणा, कि दीक्षा (प्राण-ऊर्जा) नन्हें बालकों के लिए इतनी आवश्यक नहीं है, जितनी कि बड़े और वृद्ध उम्र के लोगों के लिए उपयुक्त है, सर्वथा गलत है, ज्ञानश्चेतना और प्राण-ऊर्जा को ग्रहण करने के लिए कभी भी उम्र बाधक नहीं होती, क्योंकि **''ज्ञान वृद्धोऽपि वृद्धः''**।

यहां तक कि गर्भस्थ शिशु को भी पूज्य गुरुदेव ने दीक्षा प्रदान की है, क्योंकि यह प्रक्रिया उन बालकों के लिए, उस मानव जाति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं जरूरी है, वह इसलिए कि

सारा ज्ञान और विज्ञान केवल एक ही केन्द्र बिन्दु पर आधारित है। वह एक ही चिन्तन, एक ही धारणा, एक ही ध्यान, एक ही तथ्य पर अपने को अग्रसर कर रहा है, कि किस प्रकार मनुष्य को पूर्ण सुखी, पूर्ण सफल, पूर्ण सभ्य और पूर्ण-उन्नत बनाया जाए . . .और उसको पूर्ण सफल बनाने के लिए, पूर्ण सुखी बनाने के लिए ही उस दिव्य चेतना की, उस प्राण-ऊर्जा की आवश्यकता है, जिससे कि मानव ज्यादा सुखी बन सके, ज्यादा आनन्द अनुभव कर सके।

नन्हें बालक या गर्भस्थ शिशु को दीक्षा देना इसलिए महत्वपूर्ण एवं जरूरी होता है, कि जो ज्ञान व्यक्ति को सयाना होने के बाद, योग्य होने के बाद दे सकते हैं, जो ज्ञान उसे पच्चीस साल की उम्र में दे सकते हैं, वही ज्ञान हम किसी नन्हें बालक को कम उम्र में ही या पांच-छः महीने का होने पर भी दे सकते हैं। इसका मुख्य कारण यह है, कि नन्हा, अबोध बालक, निर्मलता, शुद्धता और पवित्रता जैसे गुणों को अपने अन्दर समाहित किए होता है, उसके अन्दर झूठ, छल, कपट, द्वेष जैसी भावनाएं नहीं होतीं, इसलिए उसके भीतर ग्राह्य शक्ति अधिक होती है, और यही कारण है कि उसके भीतर जो भी संस्कार डाले जाते हैं, उसका शरीर और उसकी आत्मा उसे अति शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं, अतः बालकों में जिस प्रकार से संस्कार डाले जायेंगे, उसी के अनुरूप ही उनका व्यक्तित्व सामने प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगा।

इसीलिए यह आवश्यक है कि उनमें ऐसे नवीन संस्कारों एवं नवीन चेतना का समावेश हो, जो उनको एक प्रखर व्यक्तित्व प्रदान कर सके, जिससे वे ज्यादा सुखी एवं आनन्द की अनुभूतियों को प्राप्त कर सकें। यही कारण है, कि पूज्य गुरुदेव ने नन्हें-नन्हें बालकों के अन्दर अपनी विशिष्ट ऊर्जा को प्रवाहित किया, एक नवीन चिन्तन, एक नवीन धारणा को दीक्षा के माध्यम से उनके भीतर संचरित किया।

उन बालकों को लखनऊ, इलाहाबाद, भोपाल आदि शिविर स्थलों पर भी दीक्षा के माध्यम से एक नया गोत्र, नया नाम, नई जाति प्रदान की गई, जिससे कि उनका सर्वांगिक विकास हो सके, जिससे वे उन्नति के पथ पर गतिशील हों, उन्हें एक नई दिशा मिल सके, नया चिन्तन प्राप्त हो सके, जिससे कि उनके जीवन में कोई न्यूनता शेष न रह जाए, न धन की, न वैभव की, न प्रतिष्ठा की, न ऐश्वर्य की, वे हर दृष्टि से पूर्ण होकर श्रेष्ठ जीवन निर्वाह कर सकें, और इसके लिए **उन्हें एक विशेष प्रकार की तेजस्विता प्रदान की गई, जो दीक्षा लेने के बाद उन नन्हें बालकों के चारों ओर आभामण्डल के रूप में आलोकित हो रही थी, क्योंकि बालकों में ग्रहण करने की सामर्थ्य-शक्ति अधिक होती है,** इसलिए छोटी-सी उम्र में ही उन्हें उस वास्तविक ज्ञान से परिचित कराकर दीक्षित करवाना, उनके ही भविष्य के लिए नहीं, अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए भी हितकर एवं श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

जिन लोगों ने इस बात को पूर्णतः समझ लिया है, वे इस बात को स्वीकार करने में कदापि संकोच नहीं करते, और उन्होंने इस बात पर अमल भी किया है, क्योंकि जिस प्रकार वे दुःखी, कष्टप्रद एवं तनाव ग्रस्त जीवन को जीने के लिए मजबूर हुए, ऐसा जीवन उनके बालकों को न प्राप्त हो, इसीलिए उन्होंने अपने छोटे-छोटे बालकों को विभिन्न प्रकार की दीक्षाएं दिलवाईं, जिनमें से प्रमुख हैं— **वाग्देवी दीक्षा, सरस्वती दीक्षा, ज्ञानमार्गी दीक्षा, सर्वोच्च सिद्धि दीक्षा, चैतन्य दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** आदि।

इन दीक्षाओं को लेकर वे सुखी, समृद्ध और सम्पन्नता युक्त जीवन जी सकेंगे, और समाज के प्रहरी के रूप में कार्यरत रह कर, ज्ञान की उस अविरल धारा को प्रवहित कर जन कल्याण हेतु प्रयासरत रहेंगे। चूंकि **अनेक साधक दीक्षा के महत्व को भली प्रकार से समझ चुके हैं, इसीलिए वे अपने नन्हें बालकों को शीघ्र पूज्य गुरुदेव द्वारा दीक्षा दिलाने के लिए संलग्न एवं उत्सुक रहते हैं।**

पूज्य गुरुदेव ने अन्य साधना शिविरों में सैकड़ों-हजारों बालकों व गर्भस्थ शिशुओं को दीक्षित किया है, शिविर स्थल में उन निर्मल व भोले बालकों को दीक्षित होता देख, ऐसा लगता है, जैसे पूज्य गुरुदेव **''डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी''** प्रत्येक नवशिशु को एक नया जन्म देते हुए, समाज के लिए नवीन मानवों का निर्माण कर एक नवीन रास्ता, एक नवीन पृष्ठभूमि, एक नवीन भावभूमि पर उन्हें खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं, और उनमें उस ताकत को, उस क्षमता को जगाने का प्रयास कर रहे हैं, जो कि एक नवीन समाज की सृष्टि के लिए श्रेष्ठ एवं अद्वितीय कहा जा सकता है।

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण

अज्ञानी मानव की दृष्टि में ग्रहण अशुभ माना जाता है, क्योंकि प्राचीनकाल से चली आ रही परम्परागत रीतियों ने साधारण मानव के मन में यह धारणा बैठा दी है, कि ग्रहण के समय कोई भी कार्य करना अशुभ या निरर्थक होता है, इसलिए लोग ग्रहण के समय कोई भी कार्य करने में भय अनुभव करते हैं, किन्तु उन्हें इस बात से आशंकित न होकर ग्रहण के समय का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

इस बार खग्रास चन्द्र ग्रहण **१५.०४.९५** को पड़ रहा है, और यह लगभग एक घंटे तक रहेगा, जिसका लाभ प्रत्येक साधक को उठाना ही चाहिए। चन्द्र ग्रहण साधनात्मक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि चन्द्र ग्रहण के समय वायुमण्डल में एक विशेष प्रकार की शक्ति व्याप्त होती है, जो साधनात्मक दृष्टि से सफलतादायक होती है।

चन्द्रमा अपनी शीतलता, कोमलता और सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए चन्द्रमा व्यक्ति को सौन्दर्य, समस्त भौतिक-सुखों और गृहस्थ- सुखों को देने वाला है, अतः **चन्द्र ग्रहण के दिन का विशेष समय साधक के लिए महत्वपूर्ण समय होता है, क्योंकि उन क्षणों में साधना सम्पन्न करने पर साधक की अन्तःस्थिति विशेष तरंगों द्वारा ग्रहों से जुड़ जाती है, और जिस व्यक्ति का भी इन तरंगों से सामञ्जस्य हो जाता है, वह अपने जीवन में सफल हो जाता है।**

चन्द्र ग्रहण के समय साधना सम्पन्न करने पर व्यक्ति अपनी बाधाओं, समस्याओं और परेशानियों से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकता है, क्योंकि समय का अपने-आप में विशेष महत्व होता है, और इस दिन का भलीभांति उपयोग कर वह अपने लिए सफलता के द्वार खोल लेता है।

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि वह इस समय का दुरुपयोग न करते हुए पूजा-पाठ, मंत्र-जप, अनुष्ठान आदि सम्पन्न कर इसका सदुपयोग करे, क्योंकि किसी भी प्रकार की समस्या से मुक्ति पाने के लिए इससे अच्छा समय और कोई नहीं है, इसका कारण यह है, कि **इस विशिष्ट समय में किये गए पूजा-विधान, मंत्र-जप आदि का साधक को सौ गुना फल प्राप्त होता है, क्योंकि ग्रहण काल में की गई एक माला मंत्र-जप अन्य समय में की गई सौ माला मंत्र-जप के बराबर होती है।**

बड़े-बड़े तांत्रिक व मांत्रिक भी ऐसे ही क्षणों की प्रतीक्षा में टकटकी लगाए बैठे रहते हैं, क्योंकि उन्हें उसके द्विगुणित फल प्राप्ति का ज्ञान पहले से ही होता है, और साधारण मानव इस बात से अपरिचित रह जाने के कारण ऐसे विशेष क्षणों को यों ही गंवा बैठता है, चूंकि सामान्य गृहस्थ के जीवन में समस्याएं व कठिनाइयां अधिक होती हैं, जिस कारणवश वह हर क्षण दुःखी व तनावग्रस्त ही दिखाई देता है, वे व्यक्ति इस क्षण का लाभ उठाकर अपने जीवन से उन समस्याओं और बाधाओं का निराकरण कर सकते हैं, और इस दृष्टि से सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण वरदान स्वरूप होता है।

वैसे तो चन्द्र ग्रहण के समय कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, किन्तु यहां पर कुछ विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, जो भौतिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के लिए ग्रहण के समय करने पर अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे, और साधक इनमें से कोई भी एक प्रयोग, जो उसकी आवश्यकता के अनुकूल हो, सम्पन्न कर सकता है।

समय

१५.४.९५ को खग्रास चन्द्र ग्रहण का स्पर्श **सांय ५ बजकर १० मिनट** पर तथा मोक्ष शुद्धि काल **सांय ६ बजकर २६ मिनट** पर होगा। यह ग्रहण पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, आसाम तथा बंगाल में दृश्यमान होगा।

१. शत्रुहन्ता प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शत्रु होते ही हैं, यदि शत्रु द्वारा धन का हरण कर लिया गया हो, झूठे मुकदमे में शत्रु द्वारा फंसा दिया गया हो या शत्रु द्वारा इज्जत, मान, सम्मान को हानि पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेने से शत्रु बाधा समाप्त हो जाती है।

इस प्रयोग के लिए **"शत्रु बाधा निवारण यंत्र"** और **"खड्ग माला"** की आवश्यकता होती है।

साधक सर्वप्रथम पीले वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख हो बैठ जाएं, फिर एक लकड़ी के बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर, उस पर एक ताम्रपात्र में यंत्र को स्थापित कर पंचामृत से स्नान कराएं, और फिर जल से उसे धोकर कुंकुम, अक्षत, पुष्प से उसका पूजन कर धूप,दीप जला दें।

इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर यह संकल्प लें, कि मैं अमुक कार्य के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं और मुझे इसमें सफलता मिले, ऐसा कहकर जल जमीन पर छोड़ दें, फिर "खड्ग माला" से ११ माला या एक घंटे में जितनी भी माला हो निम्न मंत्र-जप सम्पन्न करें —

मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं शत्रुहन्त्यै फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र और माला को लाल वस्त्र में ही लपेट कर किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

२. रोग मुक्ति प्रयोग

जिसके जीवन में चन्द्रमा की स्थिति कमजोर होती है, वे व्यक्ति निर्बल और पेट दर्द तथा सिर दर्द अन्य प्रकार की बीमारियों से ग्रसित होते हैं, अतः अन्य बीमारियों के निराकरण हेतु इस प्रयोग को चन्द्र ग्रहण के समय सम्पन्न किया जाना चाहिए।

साधक सफेद या पीले वस्त्र धारण कर, ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़कर, पूर्व दिशा की ओर आसन बिछाकर बैठ जाएं, फिर संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर, जल लेकर संकल्प लें, इसके पश्चात् **"आरोग्य वर्द्धिनी माला"** से निम्न मंत्र का पूरे ग्रहण काल तक जप करें —

मंत्र

ॐ चन्द्र तमसे नमः

मंत्र-जप सम्पन्न होने के पश्चात् उस माला को नदी या कुंए में विसर्जित कर देना चाहिए, इस प्रयोग को रोगी स्वयं या फिर कोई अन्य भी उसके नाम का संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है, ऐसा करने पर रोग का निराकरण स्वतः ही हो जाता है।

३. आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

शेयर मार्किट, सट्टे आदि में जीतने तथा आकस्मिक धन की प्राप्ति के लिए यह प्रयोग श्रेयस्कर है। साधक को चाहिए कि वह **"लघु दक्षिणावर्ती शंख"** पहले से ही मंगवा कर रख ले और साथ ही **"बिना टूटे चावल के दाने"** भी।

साधक सर्वप्रथम पीली धोती धारण कर उत्तराभिमुख हो आसन पर बैठ जाएं, और लकड़ी के एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर, उस पर इस शंख को स्थापित कर दें, फिर हाथ में जल लेकर संकल्प लें, इसके पश्चात् बिना टूटे चावल के दानों को हर बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए १०८ बार शंख में डालें —

मंत्र

ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै ह्रीं ॐ

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें, और फिर सफेद कपड़े में उस शंख को अच्छी तरह बांधकर कुंए या नदी में विसर्जित कर दें।

४.बाधा निवारण प्रयोग

इन क्षणों में यदि व्यक्ति इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर ले, तो वह हर प्रकार की ग्रह - बाधा तथा अन्य प्रकार की गृहस्थ-बाधाओं से मुक्त हो जाता है, क्योंकि ग्रहण के समय किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण प्रयोग है।

साधक पीतवर्ण धारण कर, पूर्वाभिमुख हो आसन पर बैठ जाए, फिर अपने सामने एक बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा दे, तथा उस पर ११ पीपल के पत्तों को जल से धोकर उनके ऊपर ११ **कुलाल चक्रों** को स्थापित करे, इसके पश्चात् उन चक्रों को कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करे और निम्न मंत्र-जप सम्पन्न करें —

मंत्र

ॐ ह्रीं बाधा निवारिण्यै नमः

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् पूजन - सामग्री को पीले वस्त्र में ही बांधकर नदी या कुंए में विसर्जित कर दे। चन्द्र ग्रहण प्रारम्भ होने से लेकर ग्रहण मोक्ष तक साधक मंत्र-जप करता रहे, और मंत्र-जप को सम्पन्न करने के पश्चात् उसमें प्रयुक्त सभी सामग्री को किसी नदी या कुंए में अवश्य ही विसर्जित कर दें। प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती अवश्य करें।

वास्तव में ही इन प्रयोगों को ग्रहण काल में किए जाने पर साधक को अवश्य ही लाभ प्राप्त होता है, तथा इसे स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है, या फिर पति-पत्नी दोनों अलग-अलग प्रयोगों को भी सम्पन्न कर सकते हैं, अतः इस दिव्य प्रयोग को सम्पन्न करने पर उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति अवश्य ही हो जाती है।

वेदों में पुनरोक्ति नहीं

आज के इस युग में एक अजीब सी निराशा व्याप्त है, सच तो यह है, कि सत्य सामने होते हुए भी माना नहीं जा रहा है।

सृष्टि के प्रारम्भ में सृष्टिकर्त्ता ने मानवोन्नति के लिए वेद-ज्ञान प्रदान किया अर्थात् ज्ञान का ज्ञान, फिर उस सृष्टिकर्त्ता को वेदों में "पूर्णमदः पूर्णमिदं" कहा गया, जो स्वयं पूर्ण है, उसके कार्य भी अपूर्ण नहीं हो सकते हैं।

फिर भी यह विचारधारा रही, किं वेदों में पुनरोक्ति दोष है, यानि पूर्णता में अपूर्णता साबित करने की कोशिश की गई। क्या यह इस विचारधारा के पोषकों का अज्ञान नहीं है, जो पूर्ण को अपूर्ण बताते हैं?

आप यहीं से देखें—

प्रश्न — ईश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में क्या प्रदान किया, वेद या अवेद?

— आप कहेंगे, 'वेद'।

प्रश्न — वेद किसे कहते हैं?

— "ज्ञान को"

अब जो ज्ञान है, उसे अज्ञान समझना तो; ऐसा समझने वाले का दोष मात्र है। जिस प्रकार सूर्य की उष्णता को उष्णता ही माना जाता है, शीतलता नहीं, ठीक इसी प्रकार वेद, वेद का ही अर्थात् ज्ञान का ही भंडार है। जिन्हें केवल संस्कृत भाषा का ज्ञान ही होता है, वे ही वेदों पर ऐसा दोष लगाते हैं।

यहां जो हमने "केवल" शब्द का प्रयोग किया है, उसका तात्पर्य है— केवल उसके शरीर का ज्ञान, आत्मा यानि तत्व का नहीं।

इसका तत्व-ज्ञान तो प्रभु की कृपा, विश्वास और अभ्यास से ही मिलता है, पहले से ही कोई धारणा बनाकर वेद न पढ़े, हर तर्क से रहित हो, उसका अध्ययन करे, तभी ज्ञान-सिद्धि होगी।

जिस परमात्मा के केवल संकेत मात्र से ही यह अखिल ब्रह्माण्ड उत्पन्न और नष्ट हो जाता है, उसी की कृपा से यह ज्ञान सुलभ हुआ, आदिसृष्टि में ऋषि-आत्माओं की आज भी वह शक्ति उसी प्रकार से कार्य करती है, जैसे तब करती थी, आज भी इसके तत्व-ज्ञान को परम गुरु की कृपा से समझा जा सकता है।

चर्चा, चूंकि वेदों पर है और यह ज्ञान परमात्मा की दया स्वरूप मानव-जाति के कल्याण को प्राप्त हुआ है। जो स्वयं अभिमान में डूबे रहते हैं, उन्हें ज्ञान कदापि प्राप्त नहीं हो सकता, वे ही गर्वमण्डूक, फिर वेदों पर व्यंग कसते हैं।

एक सत्य उदाहरण दूंगा— एक बार एक विद्वान से हमारी वेद के विषय में बातचीत हुई, बातों में एक बात आई, जिसमें उन्होंने यजुर्वेद को उठाकर एक मन्त्र की तरफ संकेत करते हुए कहा— "आपकी तो वेदों पर बहुत श्रद्धा है, जरा इस मन्त्रांश को समझाइये" जिसका भावार्थ था, 'सागर में लहरें उठती हैं'. . . यह भी कोई बात है, यह तो हर कोई जानता है, यह क्या विशेष है, परमात्मा के बताने का? हमें प्रत्युत्तर में हंसी तो बहुत आई, कि क्या दूर का मोती पकड़ा है, इन वेदों को दोष युक्त मनवाने का, श्रीमान जी ने।

और दुख यह हुआ, कि जब हमारे देश के विद्वानों का ही यह हाल है, तब जनता का जो भी हो थोड़ा ही है।

लेकिन हमें जवाब तो देना ही था, अतः हमने कहा— श्रीमान जी पहली बात तो यह है, कि जब परमात्मा ने यह बताया, कि सागर में लहरें उठती हैं, तब मनुष्य इस सृष्टि के बारे में कुछ नहीं जानता था।

ठीक एक अबोध बच्चे की तरह वर्णमाला से आगे उन्नति के द्वार खुलते हैं, अगर वह बच्चा स्नातक हो यह कहने लगे— "वर्णमाला भी कोई बड़ी बात है, तो क्या, उससे वर्णमाला दोष युक्त हो गयी?"

परमात्मा ने वर्णमाला पढ़ाई, जिससे कि आगे मानव

ज्ञान-विज्ञान में तरक्की कर सके, फिर इस मन्त्रांश से सत्य ही तो कहा गया है। लहरों के संकेत से यह भी समझें, कि परमात्मा का इशारा मानव को गतिशील बनाने का भी है।

इतनी बात और जान लें, कि जो बातें आज हमें इतनी साधारण दिखाई देती हैं, वही बातें आदिसृष्टि में बिना वेदों के ज्ञात नहीं थीं, जो परमात्मा स्वयं पूर्ण है, उसकी रचना में अपूर्णता जैसी भूल किस प्रकार हो सकती है, और जब हम उसको "पूर्णमदः" मानते हैं, तो उसकी रचना को समझने का प्रयत्न करें, न कि उस पर दोष मढ़ें।

जैसे—

(१) न्याय में अन्याय कैसा?
(२) सत्य में असत्य कैसा?
(३) अहिंसा में हिंसा कैसी?
(४) पूर्णता में अपूर्णता कैसी?

जिस प्रकार ऐसा सम्भव नहीं, उसी प्रकार वेदों में पुनरोक्ति दोष नहीं, यह तो नासमझी का फेर है।

उदाहरण १.

अगर मैं यही वाक्य दो बार कहूं, तो क्या यह पुनरोक्ति दोष हो गया—

(१) वह गया गया।
(२) वह गया गया।

इसमें पहले का अर्थ— "वह गया शहर गया।"
दूसरे का अर्थ— "वह चला गया" ही मैं मानता हूं।

उदाहरण २.

अगर डॉक्टर एक औषधि कई बीमारियों के लिए देते हैं, तो क्या यह उनका पुनरोक्ति दोष है?

उत्तर— नहीं।

इसी प्रकार परमात्मा ने मंत्र आवश्यक समझा, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसको दोबारा बताया।

एक और उदाहरण— **"नमस्ते"** शब्द से।

— बड़ों के लिए यह आदर सूचक है।
— छोटों के लिए आशीर्वाद सूचक है।
— मां-बहन के लिए स्नेह सूचक है।
— पत्नी के लिए प्रणय सूचक है।

शब्द एक ही है, परन्तु संगति से उसका अर्थ बदल जाता है। इसी प्रकार परमात्मा के दोहराये मंत्रों की संगति से अर्थ जाना जा सकता है, यही उनका भाव भी है, कोई दोष नहीं।

आकाश प्रताप सिंह
बुलन्दशहर

जाने बिनु न होई . . .

सम्पूर्ण विश्व सत्, रज और तम से समन्वित है। यह समस्त गुण अवस्था और समय के अनुसार सभी को एक समान नहीं प्रतीत होते हैं। तीन देव तीन गुणों के प्रतीक के रूप में विद्यमान हैं। सूर्य - प्रातः काल सत्, मध्य में रज और सायंकाल को तम का प्रतिनिधि माना जाता है। इसी के अनुसार मंत्र-यंत्र और तंत्र की रचना हुई है।

लघु शब्द समूह में अलौकिक शक्ति का समाहित होना और निरन्तर उच्चारण से शरीर में **एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का प्रस्फुरण होना मंत्र कहलाता है।** मंत्र से तात्पर्य उसी से है जो एक निश्चित संख्या में उच्चारण के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अनन्त शक्ति का आभास करा दे। फिर उसी ओर धीरे - धीरे विश्वास बढ़ने लगता है, क्योंकि —

जाने बिनु न होई परतीती।
बिनु परतीति होई नहिं प्रीती।।

किसी वस्तु को बिना जाने उस पर विश्वास नहीं होता और बिना विश्वास के प्रेम नहीं होता।

प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई।
जिमि खगपति जल कै बिरनाई।।

बिना प्रीति अर्थात् प्रेम के भक्ति नहीं होती, जैसे — जल पर चिकना पदार्थ ठहर नहीं पाता। स्पष्ट है— उत्तरोत्तर विराम और प्रेम का नाम ही भक्ति है। यह क्रिया, सतोगुणी कहलाती है। गायत्री, महामृत्युंजय, सन्तान गोपाल तथा अन्य विभिन्न मंत्रों से यही स्पष्ट होता है कि उनमें महान शक्ति अन्तर्निहित है, किन्तु युक्ति द्वारा उससे लाभ उठाने की और दूसरों को लाभान्वित कराने मात्र की आवश्यकता है। विश्वास के साथ प्रयोग से लाभ अवश्य होता है।

इसी प्रकार से यंत्र से तात्पर्य किसी विशेष प्रकार की संख्या को विशेष प्रकार से अथवा किसी विशेष आकृति में लिखने से है। उन्हें विशेष प्रकार से लिखने से किसी गुप्त शक्ति का संचार उसमें होने लगता है, यह बात आज तक एक रहस्य ही है। यंत्रों का प्रयोग जनहित और मानव कल्याण के लिए ही करना चाहिए, अन्यथा वे शक्ति हीन हो जाते हैं। कुछ परीक्षित यंत्रों का ही प्रकाशन **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका में होता है और उनसे लाभ भी हो रहा है। इस सम्बन्ध में अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं। नवग्रहों के यंत्रों की संख्याओं में विशेष शक्ति का अन्तर्निहित होना यद्यपि यह रजोगुणी क्रियायें हैं, तथापि आज इनका प्रयोग शिक्षित और वैज्ञानिक जगत में भी होने लगा है।।

अम्बिका प्रसाद मिश्र
शाहजहांपुर

रवि पुत्राय नमः
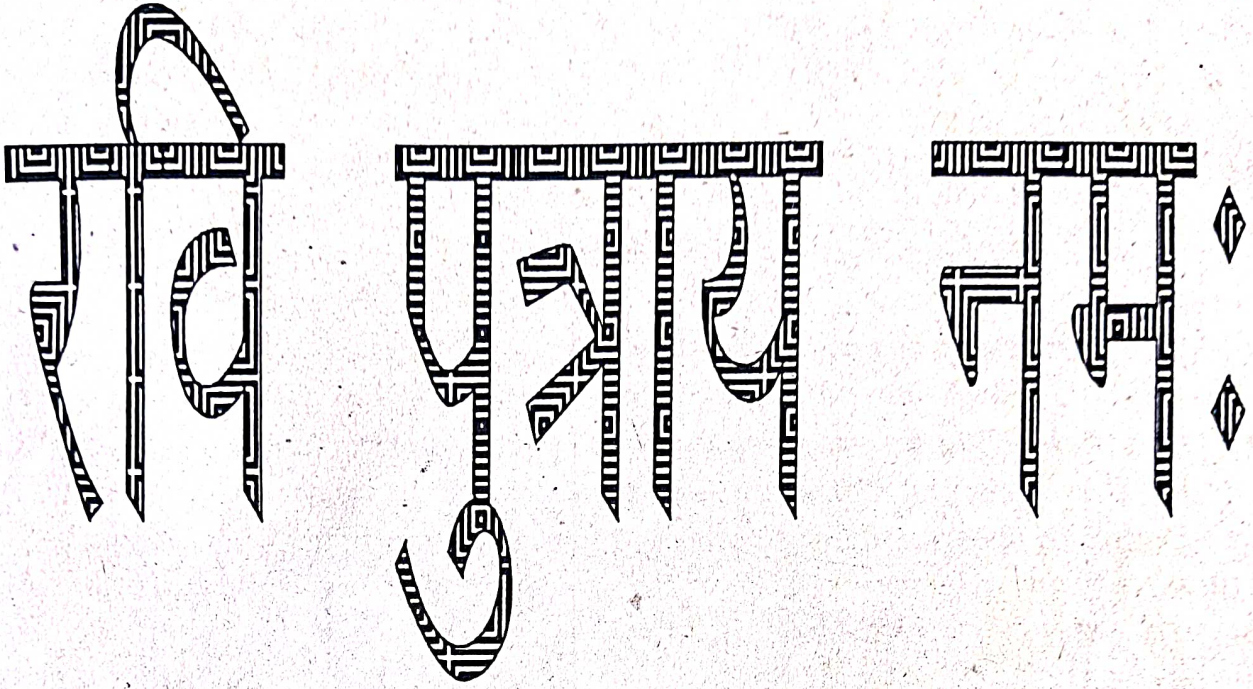
शनि मोक्ष व सुख प्रदाता भी हैं

"शनि" मनुष्य के कर्मों के अनुसार फलप्रदान करते हैं। यदि उच्चकर्म हैं, तो वह व्यक्ति को अति सम्माननीय व राज्य सम्पदा का अधिकारी बना देते हैं।

यदि निम्न कर्म हैं, तो वह व्यक्ति को महाकंगाल, महादरिद्री बना देते हैं।

चराचर माया ने जब सूर्य नारायण की छाया से गर्भ धारण किया, तब शनि देव उत्पन्न हुए, अतः मां माया और पिता सूर्य होने के कारण उन्हें **"सूर्य पुत्र"** कहा गया।

"शनि" की उपासना करने से पूर्व उसके स्वरूप और उसकी कार्य क्षमताओं से परिचित हो जाना आवश्यक हो जाता है। सात ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि में से शनि का अपना एक विशेष महत्व है, शनि का अपना एक अलग व्यक्तित्व है, क्योंकि दुःख, हानि, कष्ट आदि का आक्षेप इसी पर अधिक लगाया जाता है, जबकि ऐसा है नहीं। वह तो किन्हीं परिस्थितियों में ही सम्भव होता है।

शनि को **अंग्रेजी में SATURN (सेटर्न)** कहते हैं, तो **अरबी में जौहल, फारसी में केदवान व संस्कृत में असित, मन्द शनैश्चर, सूर्य पुत्र** कहते हैं। इस ग्रह के बारे में आज

भ्रामक धारणाओं ने मनुष्यों के दिलों में घर कर लिया है, जिस कारणवश हर कोई इस ग्रह से भयभीत तथा आशंकित दिखाई देता है।

भारतीय ज्योतिष में एक भ्रामक धारणा दिनोंदिन बलवती हो रही है, कि शनि सदैव अहित ही करता है, उसका प्रभाव सदैव अमंगलकारी, अशुभ एवं विघटनकारी ही होता है। अशांति का कारण शनि ही है, दुःख का कारण भी शनि ही है, लड़का भाग गया, स्त्री भाग गई, सन्तान कुमार्गी हो गई, व्यापार में घाटा हो गया आदि सभी शनि ग्रह के ही कारण बताए जाते हैं।

शुक्र की राशि तुला में शनि जहां उच्च का होता है, वहीं मंगल की राशि मेष में नीच का होता है। मकर व कुम्भ स्वयं शनि की राशियां हैं। जन्मकुण्डली में शनि जिस भाव में स्थित है, उससे सातवें भाव को देखता ही है तथा साथ ही तीसरे और दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। जहां दैत्य-गुरु, शुक्र तथा बुध मित्र हैं, वहीं गुरु प्रबल शत्रु तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल के साथ भी शत्रुवत व्यवहार करता है।

शनि की राशि मकर, जो २७० से ३०० अंश है, घुटनों तक प्रभाव रखती है, इसका प्राकृतिक स्वभाव उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है, कुम्भ शनि की दूसरी राशि है, यह ३०० से ३३० अंश तक पैरों पर प्रभावशाली रहती है।

लोहा व शीशा शनि की विशेष धातु हैं, तथा **''नीलम रत्न''** को धारण करने से शनि बाधा दोष कम हो जाता है। शनि नपुंसक-लिंगी एवं तामस भाव का स्वामी है। जन्मकुण्डली में स्थितिनुसार आयु, मृत्यु, द्रव्य-हानि, चौर्यकर्म, कारावास, मुकदमा, फांसी, शत्रुता, दुष्कर्म कार्यादि का ज्ञान शनि द्वारा ही किया जाता है।

शनि को ज्योतिष में **''विच्छेदात्मक ग्रह''** माना गया है। **जहां एक ओर शनि मृत्यु प्रधान ग्रह माना गया है, वहीं शनि दूसरी ओर शुभ होने पर भौतिक जीवन में श्रेष्ठता भी देता है।**

भारतीय समाज में कुछ कहावतें शनि को लेकर प्रचलित हैं, जैसे— व्यापार चौपट हो तो शनि का प्रभाव है, आज कल तो शनि का चक्कर है या किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कह देते हैं, कि यह तो शनि की तरह मेरे पीछे पड़ गया है। दो-चार ढोंगी ज्योतिषी भी ऐसे होते हैं, जो लोगों को शनि की दशा बताकर भयभीत कर देते हैं, जैसे आपके भाग्य पर शनि की क्रूर दृष्टि है, लाभ-स्थान पर नीच का शनि है, कर्म भाव पर शनि वक्री है, तथा शनि की साढ़े साती को सुनकर ही जातक का हृदय कांप उठता है।

शनि सर्वाधिक मैलाफाइड, अकस्मात, कुप्रभाव देने वाला ग्रह माना जाता है, अतः भय तो सहज स्वाभाविक है। यह समय-मृत्यु, अकाल-मृत्यु, रोग, भिन्न-भिन्न कष्ट, व्यवसाय हानि, अपमान, धोखा, द्वेष, ईर्ष्या का कारण माना जाता है, पर वास्तविकता यह नहीं है, सूर्य पुत्र शनि हानिकारक न होकर लाभदायक भी सिद्ध होता है, क्योंकि–

१. शनि तुरंत एवं निश्चित फल देता है।
२. शनि सन्तुलन तथा न्याय प्रिय है।
३. शनि शुभ होकर मनुष्य को अत्यन्त व्यवस्थित, व्यवहारिक, घोर परिश्रमी, गम्भीर एवं स्पष्ट वक्ता बना देता है।
४. संकुचित व्यक्ति, भरपूर, आत्मविश्वास, प्रबल इच्छा, शक्ति युक्त, महत्वांकांक्षी, मितव्ययता पूर्ण आचरण करने वाला, हर कार्य में सावधान रहने वाला व्यक्ति ही व्यवसाय में चतुर तथा कार्यपटु होता है।
५. मनुष्य का भेद लेने में शनि प्रधान व्यक्ति दक्ष होता है।
६. शनि प्रधान व्यक्ति सामाजिक व आर्थिक क्रांति के प्रयत्नपूर्ण, त्यागमयी जीवन व्यतीत करने वाले, पूर्ण सामाजिक व मिलनसार, परोपकार के कार्यों में समय व्यतीत करने वाले, लोक-कल्याण के सतत् कार्य संलग्न, विद्वान, मंत्री, उदारमना तथा पवित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।
७. आध्यात्मवाद की ओर विशेष झुकाव रहता है।
८. योगाभ्यासी, गूढ़ रहस्य का पता लगाने में दक्ष. कर्म कांड व धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास, ग्रंथ प्रकाश, तत्वज्ञ, लेखन कार्य का यश व सम्मान पाते हैं।

शनि अशुभ होने पर स्वार्थी, धूर्त, कपटी, दुष्ट, आलसी, मंदबुद्धि, उद्योग से मुंह मोड़ने वाला, नीच कर्म लिप्त, अविश्वास करने वाला, ईर्ष्यालु, विचित्र मनोवृत्ति युक्त, असंतोषी, दुराचारी, दूसरों की आलोचना करने वाला, वीभत्स बोलने वाला, अपने को श्रेष्ठ मानना पसन्द करता है, वह दम्भी, झूठा और दरिद्री होता है, ऐसा व्यक्ति व्यर्थ इधर-उधर घूमना पसन्द करता है, ऐसा व्यक्ति आजीवन विपत्तियों से घिरा रहता है।

शनि के लिए मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन और मिथुन राशियां शुभ हैं, तथा तुला और कुम्भ राशियां हानिकारक हैं और वृष, कन्या व मकर राशि अनिष्टकारक हैं।

जहां सूर्य एक राशि पर एक महीना, चन्द्रमा पर सवा महीना, मंगल पर डेढ़ महीना, गुरु पर तेरह महीना, बुध और शुक्र पर लगभग एक महीना तथा राहु और केतु पर उल्टे चलते हुए केवल अठारह महीने तक रहता है, वहीं शनि राशि पर वह तीस महीने तक रहता है।

कहा जाता है, कि जब भगवान राम पर साढ़े साती आई थी, तो उन्हें राज्य छोड़ कर वनवास जाना पड़ा था, जब रावण पर साढ़े साती आई थी, तो रावण के कुल का नाश हो गया था, जब राजा हरिश्चन्द्र पर साढ़े साती आई थी, तो उसका राज्य, वैभव, सुख, शान्ति, ऐश्वर्य सभी कुछ छिन गया था, और वह इतना दुःखी व दरिद्री हो गया था, कि उसे अपनी पत्नी को भी बेचना पड़ा, और उसके पास अपने पुत्र की लाश के लिए कफन तक नहीं था।

अतः जन-सामान्य की यह धारणा बन चुकी है, कि साढ़े साती सदैव अशुभ, क्रूर फलदायी, दुःखदायी व कष्टप्रद होती है, परन्तु यह समस्त सात वर्ष का समय कदापि एक जैसा नहीं है। मूलतः शनि की दृष्टि के ही प्रभुत्व का प्रभाव रहता है।

जब चन्द्र से 'द्वादश भाव' में शनि प्रवेश करता है, तब यह सम्पूर्ण दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, तो पैतृक व निजी सम्पत्ति, परिवार व कुटुम्ब पर प्रभाव डालता है। सातवीं दृष्टि 'रोग भाव' में दशम दृष्टि जन्म-राशि से भाग्य स्थान पर डालता है, जो भाग्यहीनता, निर्बलता, पितृ-कष्ट, भाग्य-नाशकारक बन जाता है। इन सबके लिए शनि कष्टप्रद होने के कारण साढ़े साती का प्रारम्भ ही कष्टप्रद व अशुभ माना गया है।

ज्योतिषीय विवेचना के अनुसार शनि की साढ़े साती जातक के पैरों में पीड़ा पहुंचाती है, मस्तिष्क विकृत एवं सिर दर्द, धन-धान्य, सम्पत्ति का नाश, सन्तान को कष्ट, स्वयं को व्यभिचारी व कुमार्गी बना अपमानित करती है।

इस प्रकार शनि की साढ़े साती दशा के कारण ही मानव-मन में यह भ्रांति उत्पन्न हो गई है, कि शनि केवल हानिकारक, अमंगलकारी एवं विघटनकारी ही होता है। शनि ग्रह की शांति के लिए जब यह ग्रह प्रतिकूल फल दे रहा हो अथवा शनि की साढ़े साती इत्यादि अवधियों में व्यक्ति को ग्रह शांति हेतु मंत्र-जप अवश्य करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति, जो इस ग्रह-दोष से पीड़ित एवं दुःखी हो, उसे २६/०४/९५ **''शनैश्चरी अमावस्या''** के दिन या फिर किसी भी शनिवार के दिन **''शनैश्चरी प्रयोग''** को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि इसे सम्पन्न करने पर शनि का उस पर अशुभ प्रभाव नहीं पड़ता।

शनैश्चरी प्रयोग शनि के कुप्रभाव को दूर करने वाला एक अत्यन्त ही गोपनीय प्रयोग है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर शनि की समस्त महादशा व अन्तर्दशाएं शांत होने लग जाती हैं, जिससे उसका कोई अहित नहीं होता।

प्रयोग विधि

यह प्रयोग प्रातः या रात्रि को किसी भी समय किया जा सकता है। साधक स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, आसन पर दक्षिण दिशा की ओर बैठ जाए तथा अपने सामने एक चौकी पर काला वस्त्र बिछा दे, और उस पर काले रंग में रंगे चावलों की सात ढेरियां बनाए, उन ढेरियों के ऊपर सात पीपल के पत्तों पर **''सात शनि गुटिकाओं''** को स्थापित करके रख दे।

इसके पश्चात् काले तिल और काली मिर्च दोनों को मिलाकर चौकी पर मध्य में ढेरी बना कर **''शनैश्चरी यंत्र''** को उस पर स्थापित कर दे, फिर यंत्र के मध्य में तथा उसके चारों ओर कुंकुम से तिलक लगाए, जिससे कि साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सके, इसके बाद उस यंत्र का अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करे, और फिर हाथ में जल लेकर शनि दोष-बाधा निवारण हेतु संकल्प लेकर जल ज़मीन पर छोड़ दे, तथा चौकी पर सरसों के या तिल के तेल के सात दीपक जलाकर रख दे, फिर इसके पश्चात् **''काली हकीक माला''** से ११ माला **''शनैश्चरी मंत्र''** का जप करे।

मंत्र

ॐ शं शनैश्चरायै नमः

मंत्र-जप समाप्ति के उपरांत समस्त पूजन-सामग्री को उसी काले वस्त्र की पोटली बनाकर, जिसमें यंत्र, गुटिका और माला भी हों, पास के किसी नदी, कुंए या तालाब में विसर्जित कर दे या फिर शनि अथवा शिव के मंदिर में भी इस सामग्री को अर्पित कर सकते हैं।

इस प्रयोग द्वारा ग्रह-दोष निवारण होता ही है। यदि एक शनिवार इस प्रयोग को सम्पन्न करने से सफलता न मिले, तो ऐसा सात शनिवार तक करें, क्योंकि इस प्रयोग द्वारा शुभ फल की प्राप्ति होती ही है।

तुम्हीं हो माता . . .

'दीक्षा' देना या 'शक्तिपात' प्रदान करना सहज क्रिया नहीं है, क्योंकि दीक्षा देते समय गुरु की तपस्या शक्ति और पुण्य शिष्य में प्रवेश करते हैं, और शिष्य के पाप-कर्म गुरु को ग्रहण करना पड़ता है, साथ ही उसे भोगना भी पड़ता है।

"आजकल जो लोग आते हैं वे इतना पाप-कर्म करते हैं कि उसका वर्णन दुष्कर है . . . फिर भी जब वे 'मां' कह कर पुकारते हैं, तब मैं स्वयं को रोक नहीं पाती। मैं जानती हूं कि यह योग्य पुत्र नहीं है, इसे नहीं देना चाहिए, फिर भी दे डालती हूं। इसीलिए कहती हूं कि जो मंत्र देती हूं जितना जप बताती हूं अवश्य करो।"

– मां शारदा

इसमें कोई संदेह नहीं कि दीक्षार्थी के पापों के कारण ही गुरु को असह्य कष्ट झेलना पड़ता है . . . और फिर भी शिष्य के हितार्थ यन्त्रणा सहन कर भी गुरु को दीक्षा देनी पड़ती है।
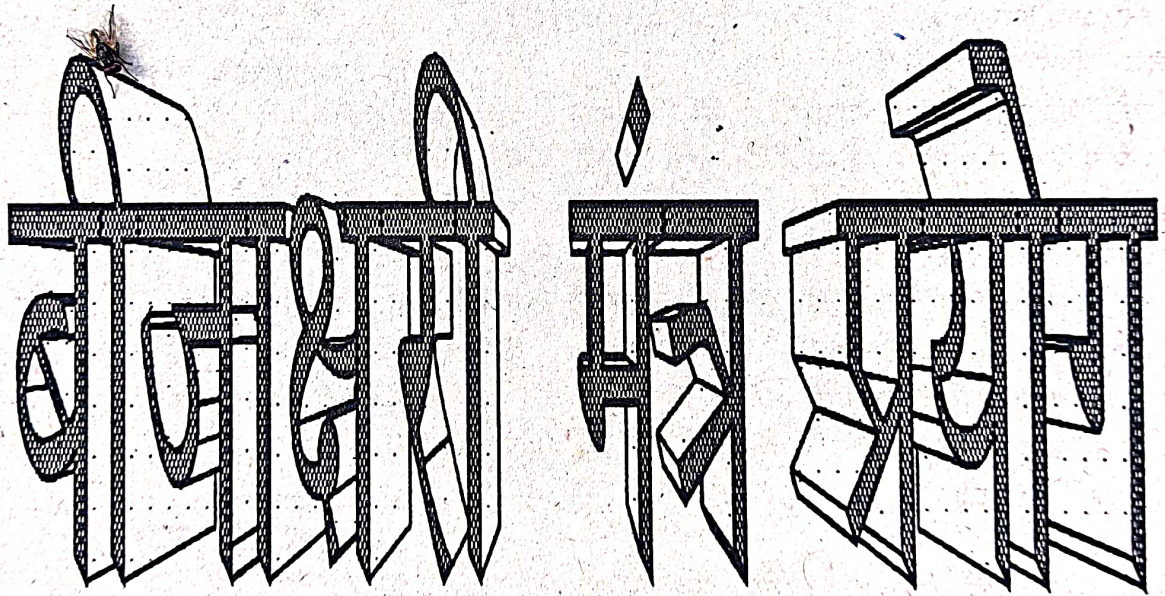
प्रत्येक नर या नारी की यह प्रबल इच्छा होती है, कि उसे उसका मनचाहा जीवन साथी मिले, और उनका गृहस्थ जीवन सुखी व सम्पन्न हो सके। वे परम्पराएं अब समाप्त होती जा रही हैं, जब मां-बाप अपने पुत्र या पुत्री का विवाह बचपन में ही कर दिया करते थे, और इस वैवाहिक जीवन से अपरिचित होने के कारण अधिकतर उन्हें एक दुःखदायक जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता था, जिसके दुष्परिणाम आज भी समाज में जगह-जगह देखने को मिलते हैं।

आज युग बदल गया है, जहां हर कोई अपने मन के अनुरूप ही जीवन साथी चुनना चाहता है, क्योंकि एक-दूसरे के मन के अनुरूप जवीन साथी न मिल पाने से उनका वैवाहिक जीवन हमेशा अशांत ही बना रहता है, रोज-रोज की कलह, पति-पत्नी में मतभेद, आत्महत्या कर

लेना ऐसे अनेक दुष्प्रभावों को देखकर हृदय कांप उठता है, और व्यक्ति आशंकित रहता है अपने भविष्य के लिए।

कई बार ऐसा होता है, कि किसी मध्यम वर्गीय परिवार की कन्या होने पर उसकी शादी में बहुत सी बाधाएं एवं अड़चनें बनी रहती हैं, जिस कारण उसका विवाह सम्पन्न नहीं हो पाता या किसी के अनेकों विवाह-प्रस्ताव आ जाने पर भी उसके लिए अनुकूल वर-प्राप्ति नहीं हो रही हो, या फिर किसी की शादी ही न हो रही हो, इन सबके लिए मात्र एक ही उपाय सर्वश्रेष्ठ है, और वह है– **''बीजाक्षरी मंत्र प्रयोग''**, जिसे सम्पन्न करने पर उस युवक या युवती का शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाता है।

बीजाक्षरी मंत्र के जप मात्र से ही साधक या साधिका को इसका चमत्कारिक परिणाम शीघ्र ही उसके मनोवांछित वर या वधु के रूप में मिल जाता है –

१. फिर उस साधक या साधिका को विवाह हेतु भटकना नहीं पड़ता, तब उसके लिए घर बैठे ही उत्तम और अनुकूल रिश्ते स्वतः ही आने लग जाते हैं।
२. फिर उस साधक या साधिका का विवाह कुछ दिनों के अन्दर-अन्दर सम्पन्न हो जाता है।
३. कुंआरी कन्याएं अपने मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिए विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा करती हैं, और शीघ्र विवाह हेतु कई प्रकार के व्रत, तप, पूजा-पाठ आदि कर डालती हैं, यदि वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर लें, तो उन्हें उनकी इच्छानुसार ही वर की प्राप्ति हो सकती है।
४. जिसके घर में जवान लड़की हो और उसका विवाह धन के अभाव के कारण न हो पा रहा हो, तो उनके माता-पिता को, जो मानसिक दुःख होता है, उसकी कल्पना तो वही कर सकता है, जो भुक्त - भोगी हो, अतः इस प्रयोग को सम्पन्न कर इस मानसिक दुःख से भी छुटकारा पाया जा सकता है।
५. यदि आप किसी से प्रेम करते हैं और उससे विवाह करना चाहते हैं, किन्तु किन्हीं कारणों वश ऐसा सम्भव न हो पा रहा हो, तो इस प्रयोग द्वारा ऐसा सम्भव हो सकता है।
६. कई बार ऐसा भी होता है, कि आप जिससे प्यार करते हों और उससे शादी भी करना चाहते हों, किन्तु वह आपको प्रेम न करता हो, तो इस प्रयोग द्वारा उसे वैवाहिक भावना देकर अपना जीवन साथी बनाया जा सकता है।
७. या फिर आप चाहते हों, कि अमुक लड़का या लड़की स्वयं आकर आपका हाथ मांगे, तो इस प्रयोग से ऐसा भी सम्भव है, कि वह स्वयं आकर-आपके आगे विवाह के प्रस्ताव को रखे।
८. यदि किसी लड़के या लड़की की शारीरिक अवस्था अच्छी न हो, और इस कारण उसके विवाह में अड़चनें आ रही हों, तो ऐसे लड़के या लड़की की भी शादी कुछ ही दिनों के भीतर हो जाती है।
९. यदि किसी की अधिक उम्र हो जाने के कारण उसके विवाह में बाधा आ रही हो, तो इस प्रयोग को करने के बाद उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।
१०. यदि किसी की मानसिक स्थिति ठीक न हो, तो ऐसे व्यक्ति की भी शादी इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद शीघ्र हो जाती है।

इस प्रकार यह लघु और सामान्य सा दिखने वाला मंत्र अपने-आप में ही पूर्ण प्रभावकारी है, और विवाह कार्य में पूर्ण सफलतादायक है।

साधना विधान

सामग्री – **ह्रीं बीजांकृत यंत्र, सिद्धिप्रद गुटिका।**

समय – ३० अप्रैल ९५ अथवा किसी भी रविवार को प्रातः ५ से ८ के मध्य।

विधि – सर्वप्रथम एक बाजोट पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर उस पर कलश स्थापित करें। कलश में जल भरें तथा पांच आम या पीपल के पत्ते रखें, फिर कलश पर एक ताम्र प्लेट में अक्षत भर कर रखें, इसके ऊपर कुंकुम से **''ह्रीं''** लिखें फिर ''ह्रीं बीजांकृत यंत्र'' स्थापित करें।

इसके उपरान्त एक तेल का दीपक प्रज्वलित करें, और दीपक तथा यंत्र का पुष्प, धूप, नैवेद्य से पूजन करें। सुखासन में बैठ जाएं तथा सिद्धिप्रद गुटिका को बाएं हाथ पर रख कर दाहिने हाथ से उसे ढक दें, और निम्न मंत्र का यंत्र पर त्राटक करते हुए पन्द्रह मिनट तक जप करें, फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर अपनी इच्छा पूर्ण होने की प्रार्थना करें, और पुनः पूर्ववत् पन्द्रह मिनट तक मंत्र- जप करें। साधना-समाप्ति के बाद नैवेद्य स्वयं ग्रहण करें, अगले दिन यंत्र व गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ

कलश में रखे जल को तुलसी पर चढ़ा दें और अक्षत पक्षियों को खिला दें।

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां पूज्यपाद गुरुदेव

''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''

द्वारा रचित

अनमोल ग्रन्थ. . . जीवन के हर आयाम को स्पर्श कर उनके रहस्यों को स्पष्टता के साथ उजागर करते हुए मौलिक और सारगर्भित ग्रन्थ, जो आपके लिए एक अमूल्य धरोहर है. . .
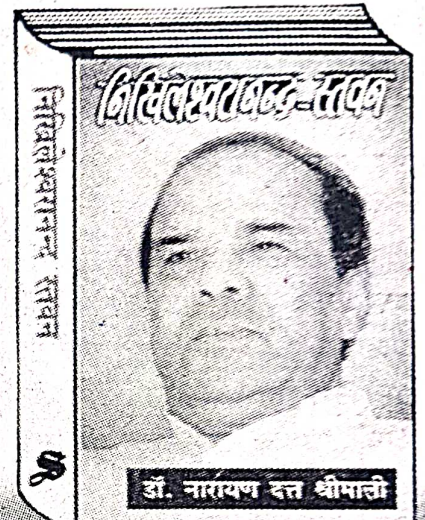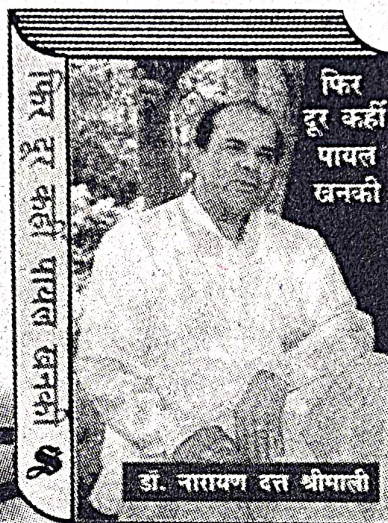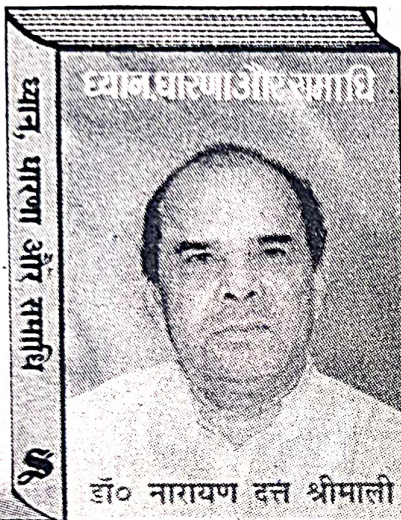
''ध्यान, धारणा और समाधि''

मात्र एक ग्रंथ ही नहीं, इसमें शब्दों के माध्यम से सरल भाषा में समझाया गया है– किस प्रकार शरीर, प्राण और आत्मा के अन्दर प्रहुंच कर ध्यानावस्थित होते हुए समाधि अवस्था प्राप्त कर ब्रह्मानन्द में लीन हो सकते हैं।

जो **ध्यान, धारणा और समाधि** का वास्तविक अर्थ है!

''फिर दूर कहीं पायल खनकी''

ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा-परमात्मा के गूढ़ रहस्यों पर और कुण्डलिनी, ध्यान, धारणा, समाधि पर लिखना आसान है, पर प्रेम. . . प्रेम के रहस्यों को उजागर करना, स्पष्ट करना अत्यधिक कठिन।

और इसी प्रेम की व्याख्या तथा उसके माध्यम से ईश्वर प्राप्ति, कुण्डलिनी जागरण तथा पूर्ण साधना-सिद्धि से सम्बन्धित एक अनमोल ग्रंथ गुरुदेव श्रीमाली जी की लेखनी से लिखित. . .

''निखिलेश्वरानन्द स्तवन''

मात्र एक ग्रन्थ ही नहीं अपितु जीवन्त, जाग्रत व्यक्तित्व है, जिसके पाठ से ही अपूर्व शांति और पूर्णता प्राप्त होती है। जो भी श्रद्धावान शिष्य हैं, उनके लिए तो यह कृति **'पूजन' है, 'शिष्यत्व' है, 'पूर्णत्व'** तक पहुंचने की क्रिया है. . . और सम्पूर्णता प्राप्त करने की दृष्टि से यह बेजोड़ कृति है, जो संन्यासियों द्वारा पूज्य गुरुदेव को ही समर्पित है।

न्यौछावर सजिल्द मूल्य प्रति – ९६/- मात्र

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

हम नहीं, यह पत्र बोल रहा है . . .

श्री सुरेश तिवारी, ग्राम- पथर गामा, जिला- गोड्डा, बिहार द्वारा हस्तलिखित पत्र, जिसका विवरण नीचे प्रकाशित है

दिनाकं : २२ / ११ / १९९४

परम श्रद्धेय श्री छोटे गुरुदेव,

साष्टांग प्रणाम,

यह सत्य सूचना **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** में प्रकाशनार्थ प्रेषित कर रहा हूं, जो क्रमानुसार है —

१. मेरे ग्राम - पथरगामा, पो०- पथरगामा, जिला- गोड्डा, बिहार में **''श्री योगेन्द्र निर्मोही'** उर्फ **''स्वामी निर्विकल्पानन्द जी''** के मार्गदर्शन में पच्चीस साधकों द्वारा ४० दिवसीय साधना शिविर एवं विशिष्ट अनुष्ठान को सम्पन्न किया गया, जिसका कि नवरात्रि से प्रारम्भ होकर १५-११-९४ को समापन हुआ।

२. यह साधना अनुष्ठान **''मौन-तप''** एवं **''विश्व शान्ति-महायज्ञ''** के नाम से सम्पन्न हुआ, लेकिन परिस्थिति वश बीच में स्वयं 'निर्मोही'' जी उर्फ ''निर्विकल्पानन्द जी'' को मौन-संकल्प भंग करना पड़ा, साथ ही साथ साधकों ने भी ऐसा ही किया।

३. पच्चीस साधक-साधिकाओं में से सात तो बीच में ही पता नहीं क्यों अपने घर वापिस चले गये।

४. प्रत्येक साधक-साधिका को प्रति व्यक्ति की दर से ५१००/- (पांच हजार एक सौ रुपये) की राशि न्यौछावर (दक्षिणा) के रूप में श्री निर्मोही जी को अनुष्ठान के पूर्व ही दे देनी पड़ी, और अन्य खर्च का वहन भी साधकों को स्वयं ही करना पड़ा।

५. इस चालीस दिवसीय साधना शिविर में साधक-साधिकाओं को मात्र एक बेला दोपहर को दिन में हल्का फलाहार एवं दुग्धाहार दिया गया।

६. **''निर्विकल्पानन्द जी''** ने **''परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द जी''** के शिष्यों को भी विशिष्ट दीक्षाएं दीं, साथ ही साथ कुल मिलाकर नवीन १५ से २० लोगों को दीक्षा देकर शिष्य बनाया तथा अपना गुरु मंत्र दिया —

''ॐ ब्रह्म तत्वाय स्वामी निर्विकल्पाय श्री गुरुवै नमः''

७. श्री यंत्र, कुबेर यंत्र, नवग्रह यंत्र सशुल्क कुछ साधकों को श्री निर्मोही जी द्वारा बेचा गया।

८. समस्या ग्रस्त एवं आधि-व्याधि ग्रस्त साधकों के घरों में शान्ति एवं सुख प्रदानार्थ ''श्री निर्मोही जी'' द्वारा अनुष्ठान कराये गये, **जिनके लिए दक्षिणा के रूप में ५१००/-, कहीं ७१००/-, तो कहीं ११०००/- रुपये तक की राशि भी ली गई।**

– चालीस दिवसीय साधना की कुछ विशिष्ट बातें –

१. **''श्री निर्मोही जी''** उर्फ **''स्वामी निर्विकल्पानन्द जी''** ने मेरे पूछे जाने पर स्पष्ट शब्दों में कहा – परम पूज्य श्री गुरुदेव **''स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी''** के गुप्तादेश से तथा सिद्धाश्रम के स्पष्टादेश से इस चालीस दिवसीय साधनानुष्ठान को सम्पन्न कराया जा रहा है।

२. साधनानुष्ठान के समापन समारोह के दिन साधक-साधिकाओं को लिखित प्रमाण-पत्र (प्रेस से छपवाकर) दिया गया, जिसमें लिखा हुआ था– **''आपको काली सिद्ध हो गई, आपने श्री गुरु को सिद्ध कर लिया, आपने भगवान शिव को साध लिया, पीताम्बरा से बातचीत की, मां दुर्गा आपके समक्ष आयीं और शुभाशीर्वाद दिया, आपने वीर-सिद्धि के क्रम में श्री हनुमान जी के दर्शन किये तथा उनसे बातचीत हुई।**

३. साधक-साधिकाओं को बिना प्राण-प्रतिष्ठा के अपने चरणों में पहिन कर ''निर्मोही जी'' उर्फ ''निर्विकल्पानन्द जी'' ने चरण पादुकाएं प्रदान कीं।

४. साधना स्थल की श्मशानस्थ पहाड़ी पर सिद्धाश्रम के स्पष्टादेश से **''भगवती पीताम्बरा पीठ स्थापना''** एवं **''पीताम्बरा की शिलामयी आकृति की स्थापना''** ''श्री निर्विकल्पानन्द जी'' के द्वारा की गई।

५. चालीस दिवसीय साधनानुष्ठान में यज्ञ-मण्डप में ''श्री निर्विकल्पानन्द जी'' की बड़ी सी फ्रेमिंग तस्वीर एक टेबल पर रखी गई थी, जिसकी नित्य पूजा-अर्चना ''निर्मोही जी'' के साथ सभी साधक-साधिकागण करते रहे, लेकिन ''श्री निर्विकल्पानन्द जी'' के परम पूज्य श्री गुरुदेव, हमारे प्राणाधार **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** की छोटी सी तस्वीर ''निर्विकल्पानन्द जी'' की टेबल पर रखी तस्वीर के ठीक नीचे पड़ी हुई थी।

यह दृश्य देख आम जनता अचंभित हो उठी, वहीं ''श्री निखिलेश्वरानन्द जी'' के स्थानीय अनेकों शिष्यों एवं अन्य गुरु से भी दीक्षित स्थानीय साधकों का मन शंका, क्षोभ एवं आश्चर्य से भर गया।

६. इस तरह के विशिष्ट अनुष्ठान अब दूसरे चरण में मध्य-प्रदेश में ''श्री निर्विकल्पानन्द जी'' के द्वारा सम्पन्न कराये जाने की भी घोषणा मंच से की गई।

इस सूचना के पूर्व भी एक सूचना आप तक प्रेषित की थी, जिसके सम्बन्ध में कोई भी किसी प्रकार का उत्तर मुझे प्राप्त नहीं हुआ।

मैंने अपने शिष्यत्व धर्म का पालन किया है, यदि आपकी पत्रिका में प्रकाशनार्थ मेरी सूचना दमखम रखती है, तो कृपया प्रकाशित करने का कष्ट करें।

आपका शिष्य

सुरेश तिवारी,

मु०+पो० – पथरगामा, जिला – गोड्डा, बिहार

इस सम्बन्ध में हम क्या कहें, पत्र स्वयं सारी बातें खोल रहा है, जहां तक पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित तथ्य है, **परमपूज्य गुरुदेव ने न तो किसी प्रकार का ''गुप्तादेश'' दिया है, और न प्रकट में ही आदेश दिया है,** यह सारा कार्य हम से छिपा कर किया गया है, इस सम्बन्ध में हमें किसी प्रकार की जानकारी पत्र मिलने तक भी नहीं थी।

रही बात, पूज्य गुरुदेव की छोटी सी तस्वीर कोने में पड़ी थी, इस सम्बन्ध में **'स्वामी निर्विकल्पानन्द जी'** की महानता ही कही जा सकती है।

अगले अंक में कुछ साधकों के विशिष्ट पत्र, जो हमारे पास इनसे सम्बन्धित प्राप्त हुए हैं, वे पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित करेंगे।

– उप सम्पादक

जिसके जाग्रत होते ही मेरे सामने अपना पूरा भविष्य साकार होने लगा
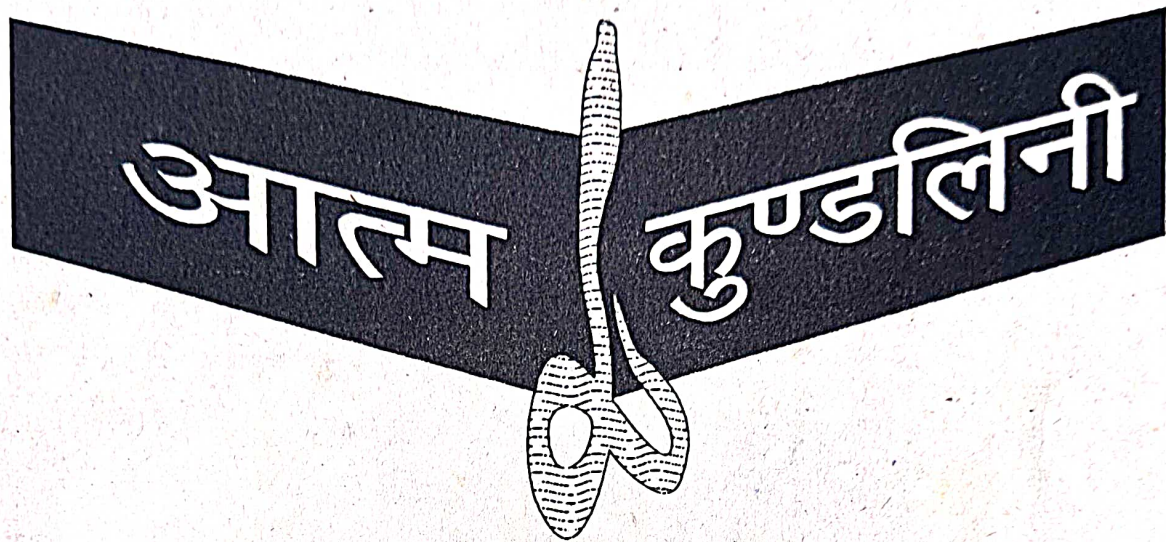
मंदाकिनी भगवान शिव की दुहिता केदारनाथ से अपने पिता के चरण पखार कर चल पड़ती है, अपनी मां गंगा की गोद में लिपटने के लिए, एक निडर बालिका की तरह उछलती-कूदती हुई। उस छोटी बच्ची की तरह, जो उचकर कर कभी इस पेड़ से कुछ तोड़ना चाहे और कभी उस पेड़ से कुछ तोड़ना चाहे, ठीक उसी तरह वृक्षों-झाड़ियों को भिगोती और नाचती-गाती, कुछ दूर जाकर उसे मिलती है, तरुणी अलकनंदा, जो उसका हाथ थाम लेती है, कि यह बच्ची कहीं भटक न जाए, और फिर जब वह धीर-गम्भीर गंगा मिलती है — तो मंदाकिनी सहज ही उसमें मां! मां!! कहकर विलीन हो जाती है।

देवभूमि उत्तराखण्ड में सम्पूर्ण प्रकृति इसी तरह जीवन्त, प्राणमय और देवमय है, वहां के कण-कण में अभी तक तपस्या के जो अंश हैं, उनसे इस घोर भौतिक युग में भी वहां निर्मलता व शीतलता के क्षण सम्भव हैं।

मानव जीवन का लक्ष्य संतान उत्पन्न करना तथा खाना-पीना-सोना नहीं है, अपितु जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर कुण्डलिनी जागरण है, भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में मानव की छटपटाहट यही है कि उसकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाए . . .

पूज्यपाद गुरुदेव ने इसी से यह निश्चित किया, कि वे हम सभी को अपने जीवन की विशिष्ट दीक्षा **"देव संस्कृति दीक्षा"** उसी तपोभूमि में देंगे।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम सभी रुद्र प्रयाग पहुंचे, जहां संगम है 'मंदाकिनी' और 'अलकनंदा' का। उसी संगम पर बना है भगवान शिव का अत्यन्त प्राचीन व कलात्मक शैली का मंदिर।

एक निर्धारित अवसर पर उन्होंने हम सभी को अपने समक्ष बैठाया और साक्षीभूत किया उस देवभूमि में उपस्थित सभी ऋषियों, मुनियों, देवताओं व गंधर्वो आदि को।

दीक्षा प्रारम्भ हुई, यह धरा अपना हर्ष व्यक्त कर रही थी, मंदाकिनी व अलकनन्दा के मिलन पर उड़ने वाली बूदों को और तीव्रता से उछाल कर, अपने वृक्षों

को तेजी से झुमा कर। वहीं आकाश में तैरकर आते काले-काले बादल कह रहे थे, कि इस कोने से उस कोने तक के सभी देवगण सवेग उपस्थित हो रहे हैं. . . और वह वर्षा काल भी नहीं था!

तीव्र वर्षा और पवित्र संगम के मध्य उठती रिमझिम फुहार और कुहासे के मध्य जब वह दुर्लभ दीक्षा समाप्त हुई, तो हम सभी के मन वर्षा से अधिक पवित्रता से भीग गए थे। **सुना था, कि प्राचीन काल में देवगण ऐसे ही अवसरों पर हर्षित होकर पुष्प वर्षा करते थे, और ठीक वही वातावरण तो था, अन्तर केवल इतना था, कि पुष्प के स्थान पर जल की बूंदें बरसी थीं।**

हम सभी का मन उस वातावरण में ऐसा रमा, कि पूज्य गुरुदेव से वहां कुछ दिन और रुकने का आग्रह कर बैठे, जिसकी उन्होंने भी सहर्ष स्वीकृति दे दी, और रुद्र प्रयाग के भी आगे प्रस्थान करने को कहा।

रुद्र प्रयाग से भी कुछ आगे तपःस्थली है अगस्त्य मुनि की। इस स्थान का नाम भी श्रद्धा वश 'अगस्त्य मुनि' ही रखा गया है। केदारनाथ से लेकर रुद्र प्रयाग तक मंदाकिनी की सम्पूर्ण यात्रा में कहीं भी उसके किनारे चौड़ा तट नहीं है, जितना कि अगस्त्य मुनि में, ठीक ऋषिवर के विशाल ममता भरे वक्षस्थल की तरह! मंदाकिनी यहां कुछ पल अपना उछलना-कूदना भूल जाती है, जैसे कोई बच्ची भूल जाती है, जैसे कोई बच्ची ठिठक जाए और तुतला कर खुद को आश्वस्त करना चाहे, कि वह सही रास्ते पर जा रही है न!

ऋषिवर की मौन व मुस्कराहट भरी स्वीकृति पाकर मंदाकिनी और भी आनन्दित होकर चल पड़ती है, नाचती-गाती अगस्त्य मुनि से आगे। एक हाथ से अपना घाघरा सम्भालती, एक हाथ से कुछ खाती और एक हाथ से बार-बार हवा के झोंकों से छोटे से मुखमंडल पर आ जाती बालों की लटों को कुछ झुंझला कर हटाती हुई, खोई-खोई सी।

अगस्त्य मुनि के पवित्र क्षेत्र में **पूज्य गुरुदेव ने जहां हमें उस क्षेत्र की विशेषता बताई, वहीं अगले दिन के प्रवचन में व्यक्ति के निर्माण के सन्दर्भ में अपना महत्वपूर्ण प्रवचन देते हुए स्पष्ट किया, कि व्यक्ति तब तक अपने जीवन में अधूरा ही है, जब तक कि उसकी आत्म-कुण्डलिनी जाग्रत नहीं हो जाती।**

'आत्म-कुण्डलिनी' शब्द वहां उपस्थित हम सभी के लिए तो नवीन शब्द था ही, वरिष्ठ गुरु भाई भी इससे परिचित नहीं थे। 'कुण्डलिनी' शब्द से तो आज कौन नहीं परिचित? लेकिन कुण्डलिनी से भी आगे बढ़कर आत्म-कुण्डलिनी का भी एक और स्तर आ जाता है, इसके विषय में तो कोई भी शास्त्र, कोई भी ग्रंथ कुछ भी नहीं कहते।

पूज्यपाद गुरुदेव ने हम लोगों की झिझक को ताड़ कर अपने प्रवचन को वहीं विश्राम देकर पहले 'आत्म-कुण्डलिनी' को विस्तार से समझाया।

उन्होंने हमें स्पष्ट किया, कि जहां कुण्डलिनी एक व्यवस्था है प्रत्येक जीवनधारी में, शक्ति का प्रवाह और जीवन की मूलभूत चेतना है, वहीं आत्म-कुण्डलिनी किसी भी व्यक्ति का नितान्त उसका अपना तथ्य है, और उसके जीवन की व्यवस्था है।
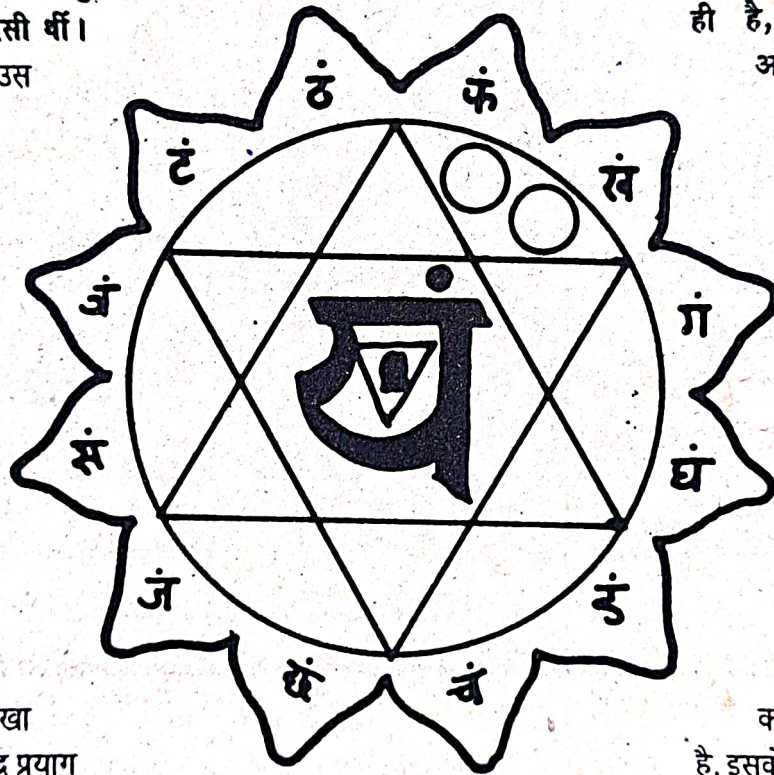
यह उस प्रकार चक्रों में बंधी कोई व्यवस्था नहीं है, जिस प्रकार से कुण्डलिनी होती है, यह तो व्यक्ति का 'स्व' है, और पूज्य गुरुदेव के अनुसार जिस व्यक्ति के जीवन में 'स्व' ही न रह जाए, वह व्यक्ति तो केंचुए के समान है। यह तथ्य भी एक नवीन तथ्य था, क्योंकि अभी तक हमने शास्त्रों में यही पढ़ा था, कि अपने अहं को त्याग दो, अहं नहीं रखना चाहिए इत्यादि।

जीवन का मूलभूत अन्तर है व्यक्ति के 'स्व' में और उसके 'अहं' में। 'स्व' अहं नहीं और 'अहं' स्व नहीं हो सकता। दोनों के मध्य विभाजन की एक पतली सी रेखा है। 'अहं' तो मिथ्या बोध है, मिथ्या घमंड है, कि मैं ऐसा कर सकता हूं, मैं वैसा कर सकता हूं, मैंने ऐसा किया है इत्यादि।

जबकि 'स्व' व्यक्ति का मिथ्या घमंड नहीं वरन् 'स्व' का ज्ञान, 'स्व' का प्रस्तुतीकरण तो व्यक्ति का एक ऐसा अनोखा दर्प है, जो व्यक्त करता है उसकी वास्तविक शक्तियों को और उसकी कार्यक्षमताओं को। जिन्हें वह जानता है, कि वह अपने गुरुदेव की शक्तियों के अनन्त संग्रह में से लेकर व्यक्त मात्र कर रहा है, किन्तु यह तभी सम्भव है, जब व्यक्ति को अपने भूत और भविष्य का ज्ञान हो, उसे अपना सम्पूर्ण कालखण्ड दिखाई पड़ रहा हो, वह जानता हो, कि मंदाकिनी की तरह वह किस केदारनाथ से अस्तित्व में आया है और कहां स्थित है? वह देव प्रयाग कहां है, जहां जाकर गंगा में उसे कब और कैसे विसर्जित होना है?

यह विषय अपनी विवेचना में तो लम्बा विषय है, किन्तु यहां पर तो मैं वह साधना पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से लिख रहा हूं, जिसको उन्होंने हम सभी को अपने समक्ष सिद्ध कराया, और हम सब लोगों ने केवल अपने भविष्य को स्पष्ट देखा वरन् वहां उपस्थित सभी गुरु भाई-बहिनों ने पहली बार इस बात को समझा, कि हम सब कैसे इसी जन्म में नहीं, वरन् पूर्वजन्म में भी साथ-साथ रहे हैं।

गुरु यह भली-भांति देखते रहते हैं कि शिष्य की कुण्डलिनी सही दिशा की ओर गतिशील है कि नहीं, क्योंकि कभी-कभी कुण्डलिनी गलत दिशा में मुड़ जाती है तो शारीरिक व मानसिक विकृती उत्पन्न कर देती है।

किसी भी पुष्य नक्षत्र को आरम्भ की जाने वाली इस पांच दिवसीय साधना में आधार केवल. . . और केवल गुरुदेव हैं, क्योंकि गुरु तो प्राण स्वरूप ही होते हैं, भले ही नर आकृति में वे नजर आते हों। सम्पूर्ण यात्रा तो शिष्य को ही करनी होती है, कि वह अपनी इस देह से ऊपर उठ कर प्राणों की अवस्था में जाए, जो केवल गुरुदेव की कृपा से ही सम्भव है।

व्यक्ति जब प्राणों में पहुंच जाता है, तब उसके समक्ष भूत-भविष्य तो बच्चे के कौतुक के समान होता है, जिनसे वह खेलता हुआ इससे भी ऊपर उठकर पहली वार गुरु-शिष्य सम्बन्ध की वास्तविकता को समझता है।

इस साधना में, जो कि गुरुवार को ब्रह्म मुहूर्त में की जाने वाली साधना है, साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र पहिन कर श्वेत आसन पर बैठें। घी का दीपक लगाएं, सामने तांबे के पात्र में **गुरु यंत्र व चित्र** स्थपित कर पूर्ण पूजन करें और यदि आपको तांत्रोक्त गुरु पूजन आता हो, तो उस ढंग से पूजन करें। एक माला, तीन माला अथवा पांच माला गुरु मंत्र का जप करें तथा सीधे बैठकर पांच मिनट तक अपने को एकाग्रचित्त कर मन में उठने वाले सभी विचारों से कटने का प्रयास करें। ॐकार की ध्वनि ऐसी स्थिति प्राप्त करने में सर्वाधिक उपयुक्त रहती है। इसके उपरान्त सामने पात्र में स्थापित **आत्म-कुण्डलिनी यंत्र** का पूजन करें एवं **मूंगे की माला** से ५ दिन तक निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र-जप करें—

मंत्र

ॐ ह्रीं कुल कुण्डलिन्यै फट्

इस मंत्र-जप काल में प्रायः ऐसा हो सकता है, कि आपका ध्यान स्वतः एकाग्र हो जाए और कोई विम्ब या दृश्य आपके सामने स्पष्ट होने लगे, तो यह साधना में प्रारम्भिक सफलता का सूचक है। इसी अभ्यास को नियमपूर्वक करने से कुछ दिनों के बाद स्पष्ट रूप से आप अपने भावी जीवन को चित्र की भांति देख सकते हैं। प्रारम्भ में आप एक या दो दिन के बाद की घटना के विषय में सोचें और परीक्षण करके देखें, कि आपको कितनी सफलता मिली है। उसी से निर्धारित होगा, कि आपकी साधना में कितनी परिपक्वता आ चुकी है।

साधना की समाप्ति के बाद माला व यंत्र को नदी, समुद्र या तालाब में विसर्जित कर दें।

चैत्र-नवरात्रि

भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष साधना शिविर

नवरात्रि का दिव्य पर्व

01-04-95 से 08-04-95

परम पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

छोटे गुरुजी

श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी

के आशीर्वाद वर्षा से आप्लावित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है,

इस अद्वितीय शिविर के माध्यम से, क्योंकि इस बार पूज्य गुरुदेव प्रदान करेंगे

प्रयोग : ० **जगदम्बा प्रत्यक्ष प्रयोग** ० **शत्रु संहारक महाकाली प्रयोग** ० **रोग निवारक नवदुर्गा साधना** ० **पूर्ण मनोकामना सिद्धि साधना प्रयोग** ० **धन ऐश्वर्य प्रदायक मां अम्बे सिद्धि प्रयोग**

दीक्षा : ० जो आप चाहेंगे वही दीक्षा . . . पूर्ण क्षमता युक्त . . . जिसे पूज्य गुरुदेव स्वयं अपने स्पर्श से प्रदान करेंगे।

० मात्र दीक्षा ही नहीं, मात्र शक्तिपात ही नहीं, शक्तिपात से भी आगे की क्रिया **'दिव्यपात'** प्रदान करेंगे।

० **''दिव्यपात''** बहुत ही सौभाग्यशाली साधकों को प्राप्त हो पाता है . . . और जो मात्र १०० साधकों को ही प्राप्त हो सकेगा।

शिविर शुल्क - ६६०/-

: स्थान :

सिद्धेश्वरी मन्दिर, श्रीमाली एन्क्लेव, कराला, दिल्ली-34 फोन : 011-5475818, 5475732

: विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

शिविर स्थल तक पहुंचने के लिए बस सुविधा

- **नई दिल्ली से पंजाबी बाग के लिए बहुत सी बसें हैं, पंजाबी बाग से कराला जाने के लिए बस नं० : 915, 948 और 979 जाती है।**
- **पुरानी दिल्ली से कराला जाने के लिए बस नं० : 114, 174, 921, 901, 114**

हिलीपैथी साधना

"कुछ साधनाएं कभी - कभी अनायास ही हाथ लग जाती हैं और जब उन्हें कसौटी पर कस कर देखते हैं तो वे पूर्णतः खरी उतरती हैं. . . साथ ही जब वे अल्प काल में ही पूरी सफलता दे देती हैं तो मन प्रसन्नता से भर उठता है. . . इस प्रकार की साधनाओं के क्रम में प्रस्तुत है यह लेख –"

वासनाओं, छल, रागद्वेष की इस तपन भरे संसार से परे हटकर एक ऐसी भी दिव्य स्थली है जहां है तो बस केवल प्रेम, स्नेह, करुणा, और दया। जहां के दिव्य पुरुषों में छलकता रहता है बन्धुत्व, पवित्रता, तप। जहां की साधिकाओं, देवांगनाओं में भरा है पूर्ण गरिमामय स्त्रीत्व, ममत्व और कोमल भवनायें। ऐसी ही स्थली का नाम है– "सिद्धाश्रम"। सिद्धाश्रम इस धरा पर एक मात्र वह स्थान है जहां इस झुलसन भरे समाज से निकल कर प्राणों को शीतलता दी जा सकती है। जहां का कण-कण वहां के योगियों, यतियों, संन्यासियों एवं तपस्वियों की देह से निकली तपःरश्मि से आह्लादित हो नर्तन करता रहता है,और उस नर्तन को देख प्रकृति दौड़ कर आई है, कि मैं कैसे क्या करूं, जिससे यहां का कोई भी क्षेत्र मेरे स्पर्श से अछूता न रहे।

ऐसी ही दिव्यस्थली में जो स्थली से भी अधिक देवत्व की साकार हो उठी कल्पना है, जहां नित्य नूतन प्रयोगों, शोध और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उजागर करने में निमग्न रहते हैं वहां स्थित श्रेष्ठ योगीजन। जिनका केवल और केवल लक्ष्य है कि किस प्रकार से इस धरा को साधनात्मक गरिमा से भर दिया जाए? कैसे साधकों के जीवन को संवारा जाए? जिन्हें पूज्य गुरुदेव की विशिष्ट कृपा प्राप्त हुई है, उन्होंने अनुभव किया है, कि किस प्रकार सूक्ष्म रूप में सदैव उनके साथ

गुरुदेव रहते ही हैं। मानसिक रूप से पल-पल सचेत करते रहते हैं। उन्हें साधना के विषय में मार्ग दर्शन करते हैं, उनके दैनिक जीवन की गुत्थियों का हल बताते हैं। उन्हें अपने स्पर्श से आह्लादित व प्रसन्न रखने का प्रयास करते हैं, और रक्षा तो सदैव करते ही हैं। एक प्रकार से वे पूज्य गुरुदेव के ही गुरुतर दायित्व का वहन करके उन्हें विश्राम देने का प्रयत्न करते हैं। सिद्धाश्रम केवल एक स्थली ही नहीं उदात्तता का मूर्तिमंत स्वरूप है।

ऐसी ही पुनीत स्थली में स्थित योगीराज अभ्युदानन्द जी ने विगत दिनों साधना जगत में आश्चर्य की लहर सी दौड़ा दी, जब उन्होंने अपने नवीनतम शोध को विद्वत मण्डल के समक्ष रखा। उनका नवीन शोध इस बात पर आधारित था कि साधक गण जो कि इस धरा पर विविध द्वंद्वों, छल-कपट, द्वेष के वातावरण में साधनारत हैं, वे कैसे साधनात्मक जीवन को निष्कंटक बना सकते हैं। **आज के युग में आवश्यक हो गया है कि व्यक्ति भले ही किसी पर हावी न हो, लेकिन कोई उस पर भी हावी न हो। और इसका सामान्य प्रचलित उपाय रहा है– ''सम्मोहन विद्या''।** सम्मोहन विद्या अपने-आप में पूर्ण विद्या है, लेकिन इसमें पारंगतता लाने में व्यक्ति को लम्बा समय लग ही जाता है। स्वामी जी ने इसी व्यावहारिक कठिनाई को अनुभव कर यह विधा खोजी। उनकी यह विधा मूल रूप से टेलीपैथी के सिद्धान्तों पर आधारित है। उन्होंने टेलीपैथी से ही यह आधार बनाया कि जब व्यक्ति के मन में स्थित विचारों को पढ़ा जा सकता है, तो किन परिवर्तनों के द्वारा व्यक्ति के अन्दर अपने इच्छित विचारों को प्रवेश भी कराया जा सकता है कि फिर वह उसी अनुकूल भविष्य में कार्य करता रहे। उनकी पांच वर्ष की कड़ी मेहनत जिस रूप में सफल हुई उसी का व्यावहारिक नाम है **''हिलिपैथी साधना''** जो वास्तव में **''विचार संक्रमण साधना''** है।

स्वामी अभ्युदानन्द जी ने जीवन की कई एक स्थितियों को ध्यान में रखा और इस नवीन साधना का परीक्षण किया। उन्होंने इससे देखा –

- **जहां पति-पत्नी में अनायास मतभेद रहता हो और दोनों ही एक दूसरे की उचित बातों पर भी ध्यान न देते हों।**
- **जहां पत्नी अपने पति की व्यस्तता को न समझ कर यह भावना रखती हो कि वह कहीं और आसक्त हो गया है तथा कलह फैला कर घर का वातावरण नरक जैसा कर दिया हो।**
- **युवा पुत्र लाख समझाने के बाद भी अपने आवारा मित्रों का**

साथ न छोड़ रहा हो।

- **युवा पुत्री सारी चेतावनियों के बाद भी अपने प्रेमी से एकांत में छुप-छुप कर मिलती हो।**
- **अधीनस्थ कर्मचारी अपने यूनियन लीडर के बहकावे में आकर अकारण ही विरोध और हड़तालें करते रहते हों।**
- **कड़ी मेहनत करने के बाद भी आपका अधिकारी आपसे रुष्ट रहता हो, क्योंकि आपकी कुर्सी पर वह लाना जो चाहता है अपने किसी चहेते को।**
- **पड़ोसी आपकी जमीन हड़पने के लिए, आपको मुकदमेबाजी के चक्कर में उलझाने का षडयंत्र बना चुके हों।**
- **आपकी खाली पड़ी जमीन पर, जिस पर आप धन की व्यवस्था के कारण मकान न बनवा सके हों, उस पर किसी स्थानीय गुण्डे ने बलात् कब्जा कर लिया हो।**
- **आपकी युवा पुत्री पर किसी ढीठ व बदमाश लड़के की नजर हो और वह रास्ते में उसको आते-जाते तरह-तरह से छेड़ता हो।**
- **आपका उचित कार्य भी किसी कार्यालय में घूस की भारी रकम न दिये जाने के कारण अटका पड़ा हो।**
- **आने वाले दिनों में आपको एक महत्वपूर्ण टेण्डर के अपने पक्ष में खुलने की पूरी-पूरी आशा हो, लेकिन भय हो किसी क्लर्क की अनावश्यक अड़चनों का।**
- **आप किसी महत्वपूर्ण सौदे को अपनी शर्तों पर मनवाना चाहते हों।**
- **शीघ्र ही आप अपने जीवन के परिवर्तनकालीन क्षण अर्थात् किसी इन्टरव्यू में भाग लेने वाले हों।**
- **छुटभइया नेता अनायास ही स्थानीय पत्रों में आपकी प्रतिष्ठा को उछालते रहते हैं।**
- **यों ही आपके मन में दबते-दबते हीन भावनायें समा गई हों।**

यह तो हमारे सामाजिक जीवन की छोटी सी झलकी है। आप खुद ही जानते हैं कि जो जीवन हम और आप जी रहे हैं, उसमें कितने अधिक घात व प्रत्याघात कदम-कदम पर आते ही रहते हैं। आखिर क्या होगा इनका उपाय, और क्या यह जीवन यों ही द्वंद्वों और उनसे मिलने वाले तनावों में गुजार दिया जाए? तो फिर कब हम कर सकेंगे जीवन में कुछ सकारात्मक कार्य, और कब बिता सकेंगे अपने परिवार व इष्ट मित्रों के मध्य आनंद व तनाव रहित जीवन के दो क्षण।

स्वामी अभ्युदानन्द जी की यह नवीनतम पद्धति इन्हीं तथ्यों पर आधारित है, आज के युग में यह तो कदापि उपयुक्त रह ही नहीं गया कि हम किसी से व्यर्थ के तनाव और झगड़े मोल लें। यह भी अनुकूल नहीं रह गया कि हम साधुता धारण कर प्रेम से वश में कर सकें या सम्मोहन के द्वारा अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करें। **जहां एक क्षण में ही कुछ अनिष्ट घटने की सम्भावना हो वहां सम्मोहन नहीं अपितु तंत्र का तीव्र उपाय चाहिए, जिससे कि सामने वाला एकाएक जड़ हो जाए, उसकी गतिमति बंध जाए, वह स्तम्भित हो उठे और जब तक हम न चाहें तब तक कुछ करने का उसके मन में विचार तक न आ सके।**

यह साधना मूल रूप से तांत्रिक प्रयोग है और दृढ़ संकल्प के साथ अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित कर के की जाने वाली साधना है। अर्धरात्रि को की जाने वाली इस तीक्ष्ण साधना में आवश्यक होता है कि व्यक्ति लाल रंग के कपड़े पहने, लाल आसन पर बैठे और सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उसमें तांबे के पात्र में **''कालरात्रि यंत्र''** रखे। दो **''तांत्रोक्त फल''** स्थापित करें और **''संक्रमण माला''** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जप करें। इस साधना में सामने लाल वस्त्र पर ही शक्ति चक्र चिपका कर उस पर त्राटक करते हुए यह मंत्र जप करना आवश्यक होता है। यह अत्यन्त शक्तिशाली मंत्र है –

मंत्र

ॐ हुं शत्रु मर्दिन्यै हुं फट्

इस शक्तिशाली मंत्र का ध्यान पूर्वक और एक-एक अक्षर पर जोर देते हुए मंत्र जप करना तथा पूरे साधना काल में एक अखण्ड दीपक लगाए रखना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि - विधान की आवश्यकता नहीं।

यह साधना किसी निश्चित काल की साधना नहीं है, बल्कि नित्य प्रति की जाने वाली साधना है, और साधक के अन्दर धीरे-धीरे ऊर्जा का विस्फोट होना आरम्भ हो जाता है। वह स्वयं अनुभव करता है कि सामने वाला उसकी आंखों में देख कर आंखें नीची कर लेता है। ऐसी स्थिति हो जाने पर साधक जिसको जो आदेश देता है वह तो सफल होता ही है, साथ ही वह जिस किसी को भी देखकर मन ही मन ११ बार इस मंत्र का उच्चारण करके जो कुछ कहता है, उसका पालन सामने वाला करने को बाध्य हो उठता है।

श्रेष्ठ साधक तो इस साधना की सफलता के बाद किसी व्यक्ति के चित्र को लेकर ही उसे मन चाहा कार्य पूरा करने का आदेश दे सकते हैं, और यहीं तक ही नहीं वरन् वे फोन से एवं पत्र से ही अपनी बात मनवा लेने की सामर्थ्य अपने अन्दर पैदा कर लेते हैं।

महा शिवरात्रि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
भगवती तारा यंत्र	१६	२४०/-
महाशंख	१६	६०/-
कमल गट्टे की माला	१६	१५०/-
गुरु चित्र-यन्त्र	१६	२४०/-
बिल्वेश्वर शिवलिंग	१६	२००/-
सर्व सिद्धि प्रदाता पैकेट	२१	४००/-
योगिनी यंत्र	२७	२४०/-
योगिनी माला	२७	१५०/-
पारद शिवलिंग	३८	३००/-
श्री यंत्र	३८	२४०/-
त्रिपुर सुन्दरी गुटिका	३८	६०/-
मृत्युञ्जयगर्भित माला	३८	१५०/-
गौरी शंकर रुद्राक्ष	३८	८०/-
सफेद हकीक माला	३८	१५०/-
गुरु कृपा माल्य	४१	१२०/-
स्फटिक माला	४१	३००/-
श्रीयत्व फल (२७)	४१	५१/-
गुरु चित्र *	४१	२५/-
गुरु यंत्र	४१	१५०/-
अपराजिता यंत्र	५५	(पोस्ट कार्ड संलग्न)
शत्रु बाधा निवारण यंत्र	६१	२४०/-
खड्ग माला	६१	१५०/-
आरोग्य वर्द्धिनी माला	६१	१५०/-
लघु दक्षिणावर्ती शंख	६१	२५०/-
कुलाल चक्र (११)	६१	११०/-
शनि गुटिका (७)	६७	१००/-
शनैश्चरी यंत्र	६७	१५०/-
काली हकीक माला	६७	१५०/-
बीजाक्षरी पैकेट	६६	२१०/-
आत्म कुण्डलिनी यंत्र	७५	२४०/-
मूंगे की माला	७५	१५०/-
काल रात्रि यंत्र	७६	२४०/-
तांत्रोक्त फल	७६	४२/-
संक्रमण माला	७६	२१०/-

दीक्षा	न्यौछावर	दीक्षा
भैरव दीक्षा		सम्मोहन दीक्षा
राजयोग दीक्षा		यक्षिणी दीक्षा
वशीकरणदीक्षा		धन्वन्तरी दीक्षा
महालक्ष्मी दीक्षा		काल ज्ञान दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा		सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा		भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा		आत्म वार्तालाप सिद्धि दीक्षा
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा		ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा		योगिनी दीक्षा
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"		
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"		
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "पराविज्ञान दीक्षा"		

* (गुरु चित्र लेमिनेशन युक्त पोस्ट कार्ड साइज)

नोट : नव वर्ष उपलक्ष में दीक्षाओं की न्यौछावर में छूट प्रदान की गयी थी। इस माह से पुनः पूर्व निर्धारित न्यौछावर ही देय है।

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती हैं, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-342001(राज.),टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

306,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13 , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।
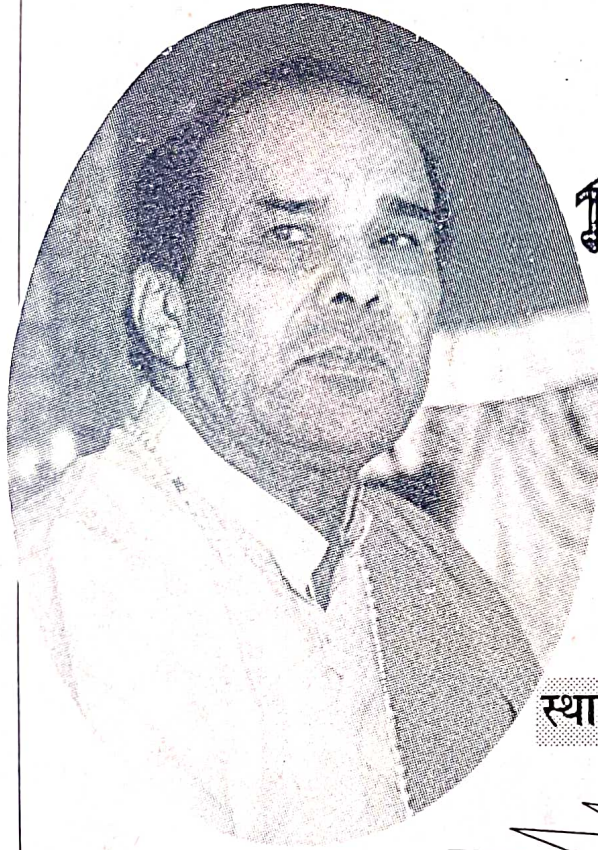
महातंत्र साधना शिविर

जोधपुर

१५,१६ मार्च १९९५

स्थान : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

जीवन का सौभाग्यदायक
अवसर जब गुरुदेव आवाज दे रहे हैं,
तो फिर आप सबको तो आना ही है।

इस शिविर में सम्पन्न हो रहा है –

गुप्त मनोवांछित शीघ्र कार्य सिद्धि साधना

(गुरु गोरखनाथ प्रणीत)

अद्भुत आश्चर्यजनक एवं आज के युग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना

(ऐसी साधना जो पूरे वर्ष में केवल एक बार होली की पूर्व रात्रि में ही सम्पन्न होती है)

– प्रयोग –

- स्वर्ण वर्षा प्रयोग
- पूर्ण वशीकरण सम्मोहन प्रयोग
- पद्मिनी प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग

– दीक्षा –

- दिव्य दृष्टि प्राप्ति दीक्षा
- सम्पूर्ण सौन्दर्य दीक्षा
- कामदेव - रति दीक्षा
- पुत्र प्राप्ति दीक्षा
- कोई भी गुप्त दीक्षा जो गुरुदेव चाहें

शिविर शुल्क मात्र ३३०/-

विशेष सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१.३२२०९, फेक्स : ०२९१.३२०१०

सूचना : गुरुधाम दिल्ली में ४ से ८ फरवरी तक होने वाला दीक्षा कार्यक्रम अब वाराणसी शिविर के पश्चात् ८ से ११ फरवरी १९९५ के बीच सम्पन्न होगा।

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/९३

A.H.W.

पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/९३
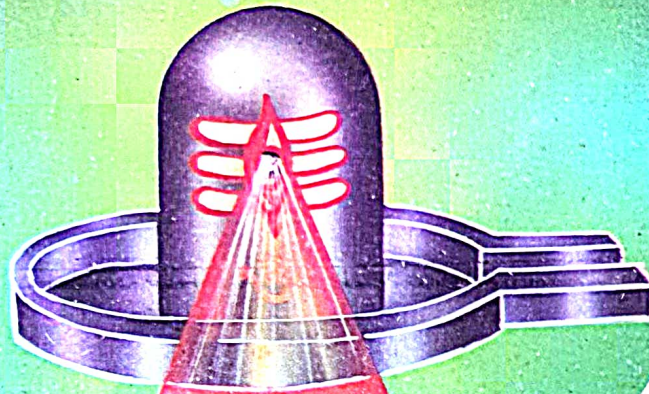
"दीक्षा"
ही शक्ति का
अजस्र प्रवाह जो है

तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा
वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"
सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा, दक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "परा ज्ञान दीक्षा"
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा वार्तालाप सिद्धि दीक्षा
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा, ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

4 से 7 मार्च 1995
को ये दीक्षा प्रदान की जायेगी

सम्पर्क :
३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४
फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

वर्ष-१५
अंक-२

नोट :
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।